लोक कथाओं में ईसाई धर्म–2

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Lok Kathaon Mein Isai Dharm (Christianity in Folktales)
Cover Page picture : Ethiopian Crosses
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : sushmajee@yahoo.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

लोक कथाओं में ईसाई धर्म–2 7

1 छह मोमबत्तियॉ 9

2 पीटर और भाई रोबिन 14

3 बारह अपोसिल्स 21

4 एक दर्जी स्वर्ग में 24

5 गौडफ़ादर मौत 29

6 ताश खेलने वाला–2 37

7 पादरी की आत्मा 42

8 तीन इच्छाऐं 53

9 रिचर्ड और उसके ताश के पत्ते 72

10 गरट्रूड की चिड़िया 75

11 बीयर और रोटी 78

12 जेरुसलेम की यात्रा 91

13 धर्मदूत ऐलाइजा और सेंट निकोलस 93

14 काइस्ट का भाई 101

15 सेंट निकोलस की कहानी 106

16 काइस्ट और बतखें 123

17 काइस्ट और लोक गीत 125

18 चालाक पत्नी 127

19 ताश खेलने वाला–1 131

20 बड़े साइज़ का आदमी फ़िन और लुंड का चर्च 151

21 दुनियॉ का जन्म 154

22 डाक्टर का बेटा और सॉपों का राजा 160

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में ईसाई धर्म–2

दुनियॉ में बहुत सारे धर्म हैं जैसे हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, पारसी धर्म। इन सब धर्मों में हिन्दू धर्म सबसे अधिक पुराना है। करीब **2500** साल पहले बौद्ध और जैन धर्म महात्मा बुद्ध और महावीर जी ने शुरू किये। **2000** साल पहले ईसाई धर्म जीसस काइस्ट ने शुरू किया और फिर उसके **600** साल बाद मुहम्मद साहब ने अरब में इस्लाम धर्म शुरू किया। सिख धर्म भारत में **15**वीं सदी में गुरू नानक ने शुरू किया।

जानवरों, परियों, राजाओं, सौतेली मॉओं, आदि की लोक कथाओं के अलावा पश्चिमी देशों की कई लोक कथाऐं ईसाई धर्म पर भी आधारित हैं। उनमें ईसाई धर्म साफ दिखायी देता है। ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं जिनमें ईसाई धर्म साफ झलकता है हमने तुम्हारे लिये यहॉ संकलित की हैं और उन्हें यहॉ प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस विषय की इस पुस्तक में केवल इटली देश की लोक कथाऐं शामिल है और अधिकतर इसकी कहानियॉ दो पुस्तकों से ली गयी हैं।[1] ये कहानियॉ केवल ईसाई धर्म के लोगों के लिये ही नहीं बल्कि सभी धर्मों के बच्चों और बड़ों के लिये भी बहुत मजेदार हैं। आशा है ईसाई धर्म की लोक कथाओं का यह संग्रह तुम लोगों को पसन्द आयेगा और तुम्हारा भरपूर मनोरंजन करेगा।

इसका पहला संग्रह "इटली की लोक कथाओं में ईसाई धर्म" प्रकाशित किया जा चुका है। इसके दूसरे संग्रह में हम संसार के विभिन्न देशों की ईसाई धर्म पर आधारित लोक कथाऐं प्रस्तुत कर रहे हैं।

---

[1] (1) Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino. Tr by George Martin. San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. Hindi translation of 125 tales out of 200 tales of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

(2) Italian Popular Tales. By Thomas Frederick Crane. 1885. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

1 छह मोमबत्तियॉ[2]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश में कही सुनी जाती है।

मौन्ट डु लौश[3] की ढलान पर एक आदमी रहता था जिसका नाम था मास्टर पियरो[4]। वह चारकोल बनाने का काम करता था।

एक दिन मास्टर पियरो जंगल में आग जला रहा था कि यकायक उसको एक भालू दिखायी दे गया। वह भालू वहॉ इसलिये आया था कि वह मास्टर पियरो से यह कहे कि वह जंगल में धुँआ उड़ाना बन्द कर दे। और यह उसने उससे कहा भी।

परन्तु मास्टर पियरो को उसकी यह बात बहुत बुरी लगी और उसने भालू को अपनी कुल्हाड़ी के एक ही वार से मार डाला। मास्टर पियरो ने उसका मॉस बहुत दिनों तक खाया।

परन्तु उसको उसके मॉस की चिकनाई बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती थी सो उसने उसके मॉस की चिकनाई की छह मोटी मोटी मोमबत्तियॉ बनायीं। वह बहुत ही भला आदमी था सो उसने सोचा कि वह उन मोमबत्तियों को क्रिसमस की शाम को जलायेगा।

जब क्रिसमस की शाम आयी तो वह चर्च के लिये अपनी लम्बे सफर पर चल दिया। भालू की चिकनाई की बनी छह मोमबत्तियॉ

[2] Six Candles – a folktale from France, Europe
[3] Mont Du Losch – name of a mountain in France
[4] Pierro – name of a person

उसके पास थीं परन्तु यह क्या? दूर दूर तक जहॉ तक भी नजर जाती थी बर्फ की मोटी चादर फैली पड़ी थी जहॉ से रास्ता खोजना भी मुश्किल था।

मास्टर पियरो ने सोचा क्यों न मैं लकड़हारों के कैम्प में जाऊॅ। वे लोग पेड़ के तनों की ट्राली तार के ऊपर चलाते हैं। अगर वह ट्राली मुझे मिल गयी तो वह मुझे जल्दी ही चर्च के पास पहुॅचा देगी।

परन्तु मास्टर पियरो के किस्मत में तो कुछ और ही लिखा था। जब वह लकड़हारों के कैम्प में पहुॅचा तो कैम्प खाली पड़ा था और सभी लोग चर्च गये हुए थे।

हॉ एक बात अच्छी थी कि ट्राली तार पर लगी थी और वह नीचे जाने के लिये तैयार थी। मास्टर पियरो उसमें बैठ गया और ट्राली एक घर्र की आवाज के साथ नीचे की तरफ चल पड़ी।

पर यह क्या? ट्राली कच कच कच की आवाज के साथ बीच रास्ते में ही रुक गयी। ट्राली के पहिये जो तार पर चलते थे वे जाम हो गये थे और मास्टर पियरो आसमान में लटके हुए थे।

उनके तीन सौ फीट नीचे सब ओर बर्फ बिछी पड़ी थी और ऊपर काला आसमान था जिसमें झिलमिल तारे टिमटिमा रहे थे।

मास्टर पियरो को लगा कि अगर वह वहॉ सुबह तक रहा तो वह जमा हुआ गोश्त बन जायेगा जैसे उसने भालू का जला हुआ गोश्त बना दिया था।

बस फर्क यही था कि भालू का मॉस खा लिया गया और उसका मॉस खाना कोई पसन्द नहीं करेगा। लेकिन अब क्या किया जाये?

"ओह, अच्छा याद आया। मेरे पास तो मोमबत्तियॉ हैं। अगर इनमें से मैं एक मोमबत्ती जलाऊॅ तो शायद वे लकड़हारे मुझे देख लें और इस मुसीबत से छुटकारा दिला दें।

यह सोच कर उसने पहली मोमबत्ती जलायी पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ। लकड़हारों ने उस मोमबत्ती की रोशनी को देखा तो पर उतनी दूर से उसकी रोशनी उनको तारे जैसी लगी।

मास्टर पियरो वहॉ से सहायता के लिये चिल्लाया भी परन्तु उसकी पुकार क्रिसमस की शाम को होने वाली प्रार्थनाओं की आवाज में खो कर रह गयी।

फिर मास्टर पियरो को ध्यान आया कि मैं भी कितना बेवकूफ हूॅ कि मैं सहायता के लिये आदमी को पुकार रहा हूॅ मुझे अपने सेन्ट[5] को पुकारना चाहिये।

इसलिये उसने एक मोमबत्ती और जलायी और उसे पेड़ के तने पर मजबूती से खड़ा कर दिया और प्रार्थना की — "प्रिय सेन्ट पीटर, ओ पहाड़ों के अच्छे सन्त, तुम स्वर्ग से आओ और मुझे बचाओ।"

इस समय वह सेन्ट जरूर आता पर मुश्किल यह थी कि क्रिसमस की शाम को उसे और भी बहुत काम थे इसलिये वह भी

[5] In Christianity, there are many saints whom people worship and they help people.

मास्टर पियरो की पुकार न सुन सका। इस प्रकार दूसरी मोमबत्ती भी बेकार ही गयी।

अब सेन्ट के आने की उम्मीद भी ख़त्म हो गयी थी। जैसे जैसे समय निकलता जा रहा था ठंड बढ़ती जा रही थी और मास्टर पियरो को अपनी जान की चिन्ता लग रही थी।

अपनी थकान से लड़ने और उसे दूर करने के लिये उसने तीसरी मोमबत्ती खा ली। उफ़, कितना बुरा डिनर था वह क्रिसमस की शाम का।

ठंड से ठिठुरते हाथों को गर्मी देने के लिये उसने चौथी मोमबत्ती जला ली। यह मोमबत्ती उसके लिये वरदान साबित हुई क्योंकि इस मोमबत्ती की रोशनी में मास्टर पियरो ने देखा कि ट्राली के पहिये जंग लगे तार की वजह से नहीं खिसक रहे हैं और उन्हें केवल चिकना करने की ज़रूरत है।

सो उसने अपनी पॉचवीं मोमबत्ती निकाली और मुस्कुराते हुए सोचा "अरे, मैं भी कितना बेवकूफ हूँ कि मैं ने अपने तार को तो क्रिसमस डिनर खिलाया ही नहीं। वह आगे कैसे चलता।"

और उस मोमबत्ती से उसने उस तार को चिकना कर दिया। और लो वह ट्राली तो यह जा और वह जा। तुरन्त ही ट्राली उस तार पर फिसल चली और चर्च पहुँच गयी।

पर वह चर्च में तब पहुँचा जब आधी रात की प्रार्थना खत्म हो रही थी। उसने अपनी छठी मोमबत्ती जलायी। उसकी मोमबत्ती दूसरी मोमबत्तियों के साथ सिर उठाये खड़ी थी।

जैसे ही मास्टर पियरो ने उसे जलाया वह फुसफुसाया — "प्रिय जीसस, यह मोमबत्ती आपको भालू की भेंट है। मैं तो इतना बेवकूफ हूँ कि अगर भालू की चिकनाई मेरे पास न होती तो मैं तो खाली हाथ ही यहाँ आता।"

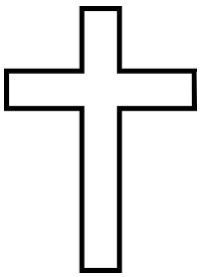

2 पीटर और भाई रोबिन[6]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप के ब्रिटेन देश की लोक कथाओं से ली है।

कुछ समय पुरानी बात है कि ब्रिटेन में तीन भले आदमी रहते थे जिनके नाम थे बैनैडिक्ट, बरनार्ड और पीटर[7]। ये तीनों साधु थे और कई गॉव के अनपढ़ लोग इनके पास बैठ कर ईसा मसीह की कहानियॉ सुना करते थे।

इन तीनों के पत्थरों के बने अपने अलग अलग घर थे जिनमें खिड़कियॉ नहीं थीं, बस केवल एक दरवाजा था। उन मकानों में न तो कोई कालीन बिछा था न ही कोई चटाई। न ही वहॉ कोई कुर्सी थी और न ही कोई मेज।

ये साधु लोग या तो बड़े बड़े पत्थरों पर बैठते थे और या फिर बड़े बड़े लकड़ी के लट्ठों पर और लकड़ी के लट्ठों का ही तकिया लगा कर जमीन पर सो जाया करते थे।

वे बहुत गरीब थे लेकिन उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं थी क्योंकि उनके बहुत सारे दोस्त थे। जो लोग उनसे कहानियॉ सुनने आते थे वे उनको छोटी छोटी भेंटें दे जाते थे – कभी मक्खन,

[6] Peter and Brother Robin – a folktale of Britain, Europe

[7] Benedict, Bernard and Peter – names of the three saints

कभी पनीर के कुछ टुकड़े, या फिर डबल रोटी। कभी कभी कोई दूध भी दे जाता था।

हर एक आदमी इन तीनों बूढ़े साधुओं को बहुत प्यार करता था। यहाँ तक कि चिड़िया और जानवर भी उनको बहुत प्यार करते थे।

जब बैनैडिक्ट जंगल में फल लेने जाता था तो रास्ते में उसको अवश्य ही कोई खरगोश मिल जाता जो उसके पैर चूमता और प्यार से दुम हिला कर चला जाता।

जब बरनार्ड मैदानों में से हो कर किसी रोगी को देखने जाता तो बीच में रुक रुक कर वह फूलों को सूँघता, मधुमक्खियों का संगीत सुनता और फिर दूर चलता चला जाता।

पीटर को पक्षी बहुत प्यार करते थे। जैसे ही वह अपने पथरीले घर से बाहर निकलता आस पास की सारी चिड़ियाँ उसके पास आ जातीं। कुछ उसके हाथ पर आ कर बैठ जातीं तो कुछ उसके कन्धों पर बैठ जातीं और कुछ उसकी गोद में आ कर दुबक जातीं।

पीटर को भी उन चिड़ियों से बहुत लगाव था पर उसे विशेष प्रेम एक रोबिन से था। बरनार्ड और बैनैडिक्ट उसको रोबिन का नाम ले ले कर चिढ़ाया करते थे

क्योंकि पीटर रात को रोबिन को "शुभ रात्रि रोबिन भाई"[8] कह कर सोया करता था।

यह सुन कर रोबिन भी उसको पलट कर जवाब देता था और सुबह को वह पीटर को जगाने भी आया करता था।

इस पर बरनार्ड और बैनैडिक्ट अक्सर हॅसा करते और कहते — "पीटर, अगर रोबिन तुम्हें जगाने न आये तो तुम तो सुबह को उठ ही नहीं सकते।"

लेकिन एक दिन ऐसा भी आया जब उन दोनों ने रोबिन और पीटर पर हॅसना छोड़ दिया और उनको यह जान कर बहुत ही खुशी हुई कि रोबिन पीटर को सचमुच ही बहुत प्यार करता था। ऐसा कैसे हुआ, यह घटना कुछ इस तरह है...

एक बार तीनों साधुओं ने विचार किया कि ब्रिटेन से बाहर भी ईसाई धर्म फैलाया जाये क्योंकि उन्हें मालूम था कि बाहर के टापुओं पर जो लोग रहते थे उन्होंने ईसा मसीह का नाम भी नहीं सुना था।

सो वे तीनों बाहर जाने के लिये तैयार हुए। काफी समय तो उनको नाव बनाने और घर का सामान खरीदने में ही लग गया और फिर काफी समय दोस्तों से विदा लेने में भी लग गया।

बैनैडिक्ट ने उसी दिन से जंगल जाना छोड़ दिया क्योंकि वह अपने खरगोश से बिछड़ने की बात तो वह सोच भी नहीं सकता

[8] Translated for the words "Good Night Robin Brother"

था। बरनार्ड भी दुखी था कि पता नहीं अब कब वह इन मधुमक्खियों को फिर से देखेगा।

लेकिन पीटर सबसे ज़्यादा दुखी था। उसने रोबिन से विदा लेने में इतनी देर लगा दी कि दूसरे लोग उस पर नाराज हो गये और कहने लगे — "तुम अगर रोबिन से दूर ही रहो तो अच्छा है क्योंकि रोबिन के साथ तुम्हारा बहुत समय खराब जाता है। चलो, अब नाव पर चढ़ो, जाने का समय हो रहा है।"

रोबिन से विदा ले कर पीटर नाव पर चढ़ा, पतवार सँभाले और चल दिया। करीब पाँच दिन के बाद वह नाव एक पथरीले किनारे से लगी। वे सब नाव से उतरे, नाव अन्दर रखी और चारों तरफ उस टापू को देखना शुरू किया।

पहले तो उनको नयी जगह में सब कुछ अजीब सा लगा परन्तु कुछ देर घूमने के बाद उनको जंगल के पास एक सुन्दर सी जगह दिखायी दे गयी जहाँ कुछ पहाड़ियाँ थीं और गुफाऐं थीं। ये गुफाऐं उनके लिये तो घर के समान थीं।

तीनों साधु यह जगह देख कर बहुत खुश हुए। बैनैडिक्ट सबसे पहले जंगल की तरफ चला। वहाँ जल्दी ही तीन खरगोश फुदकते हुए आये और उन्होंने उसकी तरफ अपनी पूँछ हिलायी, अपने कान हिलाये जैसे कह रहे हों — "बैनैडिक्ट देखो, हम यहाँ भी हैं।" और बैनैडिक्ट को वहाँ का वातावरण अपना सा लगा।

केवल पीटर को घर की याद आती रही। सारी चिड़ियों ने उसका स्वागत किया पर उनमें भाई रोबिन कहीं नहीं था। वह बहुत दुखी और शान्त रहने लगा तो एक दिन बैनैडिक्ट ने उसको डॉटा कि वह बच्चों की तरह बर्ताव न करे। वह तो बूढ़ा साधु है उसको साधु की तरह रहना चाहिये।

उसने पीटर से कहा — "देखो पीटर, रोबिन ने तुम्हारा बहुत समय बर्बाद किया है। अब तुम उससे दूर हो यह अच्छा है क्योंकि अब तुम मन लगा कर अपना काम कर सकते हो। उठो और खुशी खुशी काम पर जाओ। आओ चलो, हम लोग पहले एक चर्च बनायें और लोगों को प्रार्थना करना सिखायें।"

पीटर हॅस दिया परन्तु रोज रात को सोते समय वह घर के दरवाजे पर "शुभ रात्रि" कहने के लिये भाई रोबिन का इन्तजार जरूर करता पर वह न आता।

धीरे धीरे उसने अपने काम में मन लगाना शुरू किया जिससे दूसरों ने समझा कि वह रोबिन को भूल गया। वे तीनों अब या तो काम की ही बातें करते या फिर चर्च की। रोबिन की तो अब उन्होंने बातें करना भी छोड़ दिया था।

कभी वे खाने के बारे में बात करते क्योंकि इस टापू पर उन्हें केवल जंगली फल ही खाने को मिल रहे थे।

कभी कभी उनकी इच्छा होती कि उनको डबल रोटी मिल जाये या फिर कुछ पनीर मिल जाये पर क्योंकि उनकी वहॉ के रहने वालों

से अभी ठीक से जान पहचान नहीं थी इसलिये वे उनको भेंट नहीं देते थे और अपने साथ अन्न वे लाये नहीं थे।

इस खाने की कमी की वजह से अन्त में पीटर जो सबसे बड़ा था बीमार हो गया। दूसरों ने उसकी बहुत सेवा की पर उसकी हालत दिन पर दिन खराब ही होती चली गयी।

रोज बरनार्ड और बैनैडिक्ट उसके पास बैठते, उसको जंगली रसीले फल खिलाते, मुलायम जड़ें पका कर खिलाते, परन्तु पीटर ने आशा छोड़ रखी थी।

वह कहता — "मुझे मरने में कोई दुख न हो अगर मुझे यह पता चल जाये कि तुमको रोटी मिल जायेगी।"

एक दिन वे पीटर को गुफा के बाहर ले गये और एक पेड़ की छॉह में लिटा दिया। मगर वह आधी ऑखें बन्द किये पड़ा रहा और केवल यही बुदबुदाता रहा — "हे परमेश्वर, हमें आज हमारी रोटी दे दो।"

अचानक जैसे उसने कुछ सुना और ऑखें खोल दीं और बोला — "रोबिन भाई।"।

पास बैठे लोगों ने आश्चर्य से चारों तरफ देखा तो उन्हें न तो कुछ दिखायी दिया और न कुछ सुनायी दिया।

पीटर ने फिर पुकारा "रोबिन भाई" और लोगों ने देखा कि रोबिन उसके पास ही उड़ रहा था। वह धीरे से पीटर के ऊपर बैठ गया और धीरे से ही उसने गेहूॅ का एक दाना पीटर के खुले हाथ पर

रख दिया। जब पीटर ने अपनी मुट्ठी बन्द कर ली तो वह उड़ कर दूर जा बैठा और गाना गाने लगा।

उसी समय से पीटर अच्छा होने लगा और फिर वे तीनों कभी भूखे नहीं रहे क्योंकि रोबिन के दिये दाने से उनके गेंहू के खेत फलने फूलने लगे थे।

3 बारह अपोसिल्स[9]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश में कही सुनी जाती है।

यह ईसा मसीह के जन्म से तीन सौ साल पहले की बात है कि एक मॉ अपने बारह बेटों के साथ रहती थी। वह इतनी गरीब थी कि वह यह नहीं जानती थी कि वह बेचारी उनको ज़िन्दा भी कैसे रख पायेगी।

वह रोज भगवान से प्रार्थना करती कि वह उनको ईसा के आने तक ज़िन्दा रखे ताकि वे उसके साथ रह सकें। जब उन लोगों की जरूरतें बहुत बढ़ गयीं तो उसने अपने बच्चों को एक एक कर के दुनियॉ में बाहर रोटी कमाने के लिये भेज दिया।

उसके सबसे बड़े बेटे का नाम था पीटर। वह चला और सारा दिन चलता रहा। चलते चलते वह एक बड़े से जंगल में पहुॅच गया।

वहॉ जा कर उसको लगा कि अब उसे जंगल में और दूर जाने की बजाय वहॉ से बाहर निकलना चाहिये। सो उसने उस जंगल में

---

[9] The Twelve Apostles. By Grimms. In “Children’s and Household Tales – Grimms’ Fairy talres”. – a fairy tale from Germany, Europe. Translated by DL Ashliman. The story was first translated into English by Edgar Taylor in 1826, then by many others. Andrew Lang included it in his “The Blue Fairy Book” in 1889.
See the list of Jesus’ 12 Apostles in the end of ths book.
This story taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/grimm089.html

से बाहर निकलने का रास्ता ढूँढने की बहुत कोशिश की पर उसको वहाँ से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं मिला।

उस समय उसको भूख भी इतनी ज़ोर से लग रही थी कि उससे सीधा खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था। भूख की वजह से उसको इतनी कमजोरी महसूस होने लगी कि वह वहीं लेट गया। उसको लगा कि बस वह तो मर ही जायेगा।

कि अचानक उसने देखा कि उसके पास एक छोटा सा लड़का खड़ा है। उसके चेहरे पर चमक थी, वह सुन्दर था और बिल्कुल एक फरिश्ते जैसा लग रहा था।

उस लड़के ने पीटर का ध्यान आकर्षित करने के लिये ताली बजायी। और जब पीटर ने उसकी तरफ देखा तो उस लड़के ने उस से पूछा — "तुम यहाँ इतने दुखी क्यों बैठे हो?"

पीटर बोला — "मैं सुबह से खाने की तलाश में घूम रहा हूँ ताकि मैं अपने "बचाने वाले"[10] को देख सकूँ। मेरी बस यही एक इच्छा है।"

लड़का बोला — "आओ मेरे साथ। तुम्हारी यह इच्छा जरूर पूरी होगी।"

उसने पीटर का हाथ पकड़ कर उठाया और उसको पहाड़ की दो चोटियों को बीच में बनी एक गुफा में ले गया। वहाँ हर चीज़

[10] Translated for the word "Savior" – means Jesus Christ

सोने चॉदी और स्फटिक[11] जैसी चमक रही थी। उस सबके बीच में बराबर बराबर बारह पालने रखे हुए थे।

लड़का बोला — "तुम इनमें से पहले वाले पालने में लेट जाओ और सोने की कोशिश करो, मैं तुमको झुलाता हूॅ।"

पीटर वहॉ रखे पहले वाले पालने में लेट गया और लड़के ने गाना शुरू किया। गाते गाते वह पीटर को झुलाता रहा और पीटर सो गया।

जब पीटर सो गया तो उसका दूसरा भाई भी वहीं आ पहुॅचा। उसको भी वही फरिशता वहॉ ले कर आया था। उसको भी उसने पालने में लिटा कर झुलाया और वह भी सो गया।

इस तरह से वे बारहों लड़के वहॉ आये और उन सोने के पालनों में लेट कर सो गये। वहॉ वे तीन सौ साल तक सोते रहे – उस रात तक जब तक कि ईसा मसीह ने जन्म लिया।

उनके जन्म के बाद वे भी उठे और अपने "बचाने वाले" के साथ ही रहे। वे ही बारह भाई जीसस के बारह अपोसिल्स[12] कहलाये।

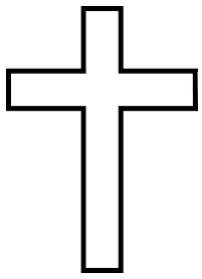

[11] Translated for the word "Crystal"

[12] Apostles – disciples, but this word is most commonly used for Jesus' twelve disciples

4 एक दर्जी स्वर्ग में[13]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन ऐसा हुआ कि भगवान ने अपने बागीचे में घूमने का विचार किया सो उन्होंने अपने सारे अपोसिल्स और सेन्ट को तो साथ ले लिया और केवल सेन्ट पीटर को स्वर्ग में अकेला छोड़ दिया।

भगवान ने सेन्ट पीटर से कहा कि वह उनकी गैरहाजिरी में किसी को स्वर्ग में न घुसने दे। यह कह कर भगवान तो चले गये और पीटर स्वर्ग के दरवाजे पर पहरा देने लगे।

कुछ ही देर में किसी ने दरवाजा खटखटाया तो सेन्ट पीटर ने पूछा कि वह कौन था और उसे क्या चाहिये था। किसी ने मीठी आवाज में जवाब दिया — "मैं एक गरीब ईमानदार दर्जी हूँ और अन्दर आने की इजाज़त चाहता हूँ।"

पीटर बोले — "हॉ हॉ तुम तो सचमुच ही बड़े ईमानदार हो जैसे चोर फॉसी पर ईमानदार होता है। तुम्हारी उँगलियॉ तो बहुत ही चिपकने वाली हैं। तुमने तो दूसरों के कितने कपड़े चोरी किये हैं। तुमको स्वर्ग में जाने की इजाज़त नहीं मिल सकती।

[13] The Tailor in Heaven – a fairy tale from Germany. By Jacob and Wilhelm Grimm, in "Children's and Household Tales". (Tale No 35). 7th ed. 1857. Translated by DL Ashliman. Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/grimm035.html

जब तक मालिक बाहर हैं उन्होंने मुझे किसी को भी अन्दर आने देने के लिये मना किया है।"

दर्जी बेचारा रो रो कर बोला — "मेरे ऊपर दया करो। अगर कपड़े के छोटे छोटे टुकड़े मेरी मेज के ऊपर से नीचे गिर गये तो उनको चोरी करना नहीं कहते। उनकी तो बात भी नहीं करनी चाहिये।

ज़रा देखो तो, मैं यहाँ लँगड़ा रहा हूँ। चलते चलते मेरे पैरों में छाले पड़ गये हैं। अब मैं धरती पर फिर से वापस नहीं जा सकता। मेहरबानी कर के बस मुझे अन्दर आने दो मैं यहाँ का सारा छोटा मोटा काम कर दिया करूँगा।

मैं बच्चों की देखभाल करूँगा। उनकी नैपी धोऊँगा। उनके खेलने की बैन्चें धोऊँगा फिर उनको साफ करूँगा और उनके सारे फटे कपड़ों की मरम्मत करूँगा।"

यह सब सुन कर सेन्ट पीटर को उस दर्जी पर दया आ गयी और उसने उस दर्जी के लिये स्वर्ग का दरवाजा केवल उतना ही खोला जितने में उस दर्जी का पतला दुबला शरीर अन्दर आ सके।

पीटर ने उसको दरवाजे के पीछे एक कोने चुपचाप में बैठ जाने के लिये कहा ताकि मालिक[14] जब आयें तो उसको देख न पायें और गुस्सा भी न हों।

[14] Translated for the word "Lord" – means Jesus Christ

दर्जी ने उसका कहा मान लिया और दरवाजे के पीछे छिप कर बैठ गया।

पर एक बार जब पीटर दरवाजे के बाहर निकला तो वह अपनी जगह से उठा और अपनी उत्सुकतावश स्वर्ग का कोना कोना देख आया कि वहॉ क्या क्या था।

आखीर में वह एक ऐसी जगह आया जहॉ बहुत सारी बहुत सुन्दर कीमती कुर्सियॉ पड़ी हुई थीं। उनके बीच में एक सीट रखी थी जो खालिस सोने की बनी हुई थीं और जिस पर बहुत सारे कीमती पत्थर जड़े हुए थे।

वह दूसरी कुर्सियों के मुकाबले में काफी ऊॅची जगह रखी हुई थी। उसके आगे पैर रखने के लिये सोने का एक नीचा स्टूल रखा हुआ था। इस कुर्सी पर मालिक बैठते थे जब वह घर में होते थे। इस कुर्सी पर बैठ कर वह धरती पर होती हुई सब चीज़ देख सकते थे।

पहले तो वह दर्जी वहॉ खड़ा खड़ा बहुत देर तक मालिक की उस कुर्सी की तरफ देखता रहा क्योंकि वह कुर्सी उसको दूसरी कुर्सियों के मुकाबले में बहुत अच्छी लग रही थी।

पर फिर उससे रहा नहीं गया और वह उस पर चढ़ कर बैठ ही गया। अब क्या था अब तो वह वहॉ से धरती पर होती हुई सब चीज़ें देख पा रहा था।

वहॉ से उसने एक बदसूरत सी बुढ़िया देखी जो एक नदी के पास खड़ी थी और कपड़े धो रही थी। उसने उन कपड़ों में से दो स्कार्फ निकाल कर एक तरफ रख लिये।

यह देख कर दर्जी को इतना गुस्सा आया कि उसने पास में रखा वह पैर रखने वाला सोने का स्टूल उठाया जिस पर भगवान अपने पैर रखा करते थे जब वह उस कुर्सी पर बैठते थे और उसे स्वर्ग से धरती पर खड़ी बुढ़िया की तरफ फेंक दिया।

स्टूल धरती पर चला गया। उसने देखा कि अब तो वह उस स्टूल को वापस नहीं ला सकता था सो वह चुपचाप उस बड़ी वाली कुर्सी से नीचे उतरा और दरवाजे के पीछे जहॉ वह पहले बैठा हुआ था वहीं जा कर बैठ गया और ऐसा दिखाने लगा जैसे कि उसने कुछ किया ही नहीं।

जब मालिक अपने नौकरों को साथ ले कर वापस लौटे तो उनको दरवाजे के पीछे बैठा हुआ दर्जी दिखायी नहीं दिया पर जब वह अपनी उस बड़ी कुर्सी पर बैठे तो उन्होंने देखा कि उनका पैर रखने वाला स्टूल तो अपनी जगह पर था ही नहीं।

उन्होंने सेन्ट पीटर को बुलाया और उससे पूछा कि वहॉ से वह स्टूल कहॉ गया पर उसको तो उसका कुछ पता ही नहीं था।

फिर मालिक ने पूछा — "क्या तुमने किसी को यहॉ अन्दर आने दिया था?"

पीटर बोला — "मुझे तो किसी का पता नहीं कि यहॉ कोई आया था सिवाय एक लॅगड़े दर्जी के जो अभी भी दरवाजे के पीछे बैठा हुआ है।"

मालिक ने उस लॅगड़े दर्जी को अपने सामने बुलवाया और उससे पूछा कि क्या वह स्टूल उसने लिया है और अगर हॉ तो उसने वह कहॉ रखा है।

वह दर्जी खुश हो कर बोला — "गुस्से में मैंने वह स्टूल धरती पर खड़ी एक बुढ़िया पर फेंक दिया क्योंकि उस बुढ़िया ने कपड़े धोते समय दो स्कार्फ चुरा लिये थे।"

मालिक बोले — "ओ गधे, अगर मैं तुम्हारी तरह से न्याय करूॅ तो तुम्हारे साथ क्या हो? और अगर मैं हर पापी पर इस तरह से सारी चीज़ें नीचे फेंक दूॅ तो मेरे पास तो न कोई कुर्सी रहे, न बैन्च रहे और न ही कुछ और रहे।

तुम अब स्वर्ग में नहीं रह सकते। अब तुमको धरती पर नीचे जाना ही पड़ेगा। वहॉ पर जहॉ तुम जाओगे वहीं से सब कुछ देखते रहना। यहॉ कोई भी सजा से बच नहीं सकता सिवाय मेरे।"

पीटर को उस दर्जी को स्वर्ग से बाहर निकालना पड़ा। और क्योंकि उसके जूते घिस कर फट गये थे, उसके पैरों में छाले पड़ गये थे, सो उसने एक छड़ी उठायी और इन्तजार करने वालों की जगह में जा कर बैठ गया जहॉ कुछ अच्छे सिपाही बैठे थे और खुशियॉ मना रहे थे।

5 गौडफ़ादर मौत[15]

एक बार की बात है एक बहुत ही गरीब आदमी था। उसके बारह बच्चे थे। वह बेचारा दिन रात काम कर के उनके लिये कुछ जुटा पाता था। सो जब उसके यहॉ तेरहवॉ बच्चा आया तो उसको पता ही नहीं था कि वह अब उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिये क्या करे।

वह दौड़ कर बाहर सड़क पर चला गया ताकि वह किसी पहले आदमी से पूछ सके कि वह अब क्या करे। खुशकिस्मती से उसे एक आदमी मिल गया जो गौडफ़ादर था।

सो पहला आदमी जो उसको मिला वह हमारे लौर्ड थे जिनको यह बात पहले से ही पता थी कि उसके मन में क्या था। भगवान ने उससे पूछा — "ओ गरीब आदमी। मुझे तुम्हारे ऊपर दया आती है। जब तुम अपने बच्चे का बैप्टाइज़ेशन कराओगे तो मैं तुम्हारे बच्चे को पकड़ लूँगा। उसकी देखभाल करूँगा। और उसको धरती पर खुश रखूँगा।"

यह सुन कर आदमी ने पूछा "आप कौन हैं।"

"मैं भगवान हूँ।"

---

[15] "The Godfather Death". by Grimms Brothers. (Tale No 44). 1812. Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/grimm044.html
"Godfather Death" story has been written by Widter-Wolf also, (Tale No 3), and is found in Sicily and Venice. Its Venice version "Sahi Aadmi" (The Just Man) is given in my book "Italy kI Lok Kathaon Mein Isai Dharm" available from : hindifolktales@gmail.com

आदमी बोला — "तब मैं यह नहीं चाहता कि आप उसके गौडफ़ादर बनें क्योंकि आप तो अमीरों को देते हैं और गरीबों को भूखा मारते हैं।"

वह आदमी इसलिये ऐसा बोला क्योंकि वह यह बात नहीं जानता था कि भगवान कितनी अक्लमन्दी से अमीरी और गरीबी का बॅटवारा करते हैं। वह उनकी तरफ से पलटा और दूसरी ओर चला गया।

उसके बाद उसके पास शैतान आया और उससे पूछा — "आप इधर उधर क्या ढूँढ रहे हैं। अगर आप मुझे अपने बच्चे का गौडफ़ादर बना लेंगे तो मैं उसको बहुत सारा सोना दूँगा और दुनियॉ की सारी खुशियॉ दूँगा।"

आदमी ने उससे भी पूछा — "आप कौन हैं।"

"मैं शैतान हूँ।"

आदमी बोला — "तब मैं यह नहीं चाहता कि आप उसके गौडफ़ादर बनें क्योंकि आप तो लोगों को बहकाते हैं और उन्हें भटकाते हैं।"

सो वह और आगे चल दिया। आगे जा कर उसे पतली दुबली टॉगों पर कॉपती हुई मौत दिखायी दी। वह उस आदमी के पास आयी और बोली — "आप मुझे अपने बच्चे का गौडफ़ादर बना लीजिये।"

आदमी ने उससे भी पूछा — "आप कौन हैं।"

"मैं मौत हूँ जो सबको बराबर का बनाती हूँ।"

आदमी बोला — "तब आप ही मेरे बच्चे का गौडफ़ादर बनने के लायक हैं। आप तो बिना किसी भेद भाव के गरीब अमीर सबको ले जाती हैं। आप ही मेरे बच्चे के गौडफ़ादर बन जाइये।"

मौत बोली — "मैं आपके बच्चे को अमीर और मशहूर बना दूँगी क्योंकि जो मेरा दोस्त है वह कभी अपनी ज़िन्दगी में असफल नहीं होता।"

आदमी बोला — "ठीक है। अगले रविवार को मेरे बच्चे का बैप्टाइज़ेशन है आना न भूलियेगा और समय पर आ जाइयेगा।"

अब जैसा कि उसने वायदा किया था मौत उस दिन नियत समय पर आ गयी और बच्चे की गौडफ़ादर बन गयी।

जब बच्चा बड़ा हो गया तो एक दिन मौत उसके सामने आयी और उससे कहा कि वह उसके साथ चले। वह उसको बाहर एक जंगल में ले गयी और वहाँ उसको वहाँ उगी हुई एक जड़ी बूटी दिखायी और बोली — "अब तुम्हें अपने गौडफ़ादर की भेंट मिलेगी। मैं तुम्हें एक बहुत ही मशहूर डाक्टर बना दूँगी। जब कभी कोई बीमार आदमी तुमको बुलायेगा तो मैं तुम्हारे सामने प्रगट हो जाऊँगी।

अगर मैं तुम्हें बीमार आदमी के सिर की तरफ दिखायी दूँ तो तुम उसके बारे में यह पूरे विश्वास के साथ कह सकते हो कि तुम

उसे बिल्कुल ठीक कर दोगे। उसके बाद तुम उसे यह वाली जड़ी बूटी देना और वह ठीक हो जायेगा।

पर अगर मैं तुम्हें उसके पैरों की तरफ खड़ी दिखायी दूँ तो समझना कि वह बीमार मेरा है और तुम उसके बारे में यह कहना कि "यह आदमी अब लाइलाज है और अब इसे दुनियॉ का कोई डाक्टर नहीं बचा सकता।" पर मेरी इजाज़त के बिना मेरी दी हुई जड़ी बूटी किसी को देने में सावधानी बर्तना वरना तुम्हारा बहुत बुरा होगा।

अब यह सब हुए बहुत दिन नहीं बीते थे कि वह आदमी तो बहुत बड़ा डाक्टर बन गया। लोग अब उसके बारे में यही कहते थे कि "उसको तो बस बीमार के पास खड़े होने की जरूरत है और बस वह उसकी सारी हालत जान जाता है।"

दूर से और पास से सभी जगहों से लोग उसके पास आने लगे और वह उसे अपने बीमार लोगों को दिखाने के लिये अपने साथ ले जाने लगे। वे उसे बहुत सारे पैसे देते और अब वह एक बहुत ही अमीर आदमी बन गया था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उस देश का राजा बीमार पड़ा तो हमारा मशहूर डाक्टर वहॉ बुलाया गया और उससे यह पूछा गया कि उसकी बीमारी ठीक होने की क्या आशा थी। डाक्टर ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। मौत उसके पैरों की तरफ खड़ी थी इसलिये कोई भी जड़ी बूटी उसकी बीमारी पर काम नहीं कर सकती थी।

डाक्टर ने सोचा "अगर मैं मौत को एक बार धोखा देने की कोशिश करूँ? वह मुझसे नाराज तो होगी पर क्योंकि मैं उसका गौडसन हूँ तो हो सकता है कि मेरी तरफ से वह अपनी एक ऑख बन्द कर ले। मैं यह खतरा मोल लेना चाहता हूँ।"

सो उसने राजा को उठाया और उसको दूसरी तरफ से लिटा दिया यानी उसका सिर पैर की तरफ कर दिया और पैर सिर की तरफ कर दिये। इससे अब मौत उसके सिर की तरफ खड़ी थी।

डाक्टर ने अब राजा को मौत की दी हुई जड़ी बूटी दे दी। राजा ठीक हो गया और फिर से पहले जैसा तन्दुरुस्त हो गया।

खैर मौत डाक्टर के पास आयी। उसने अपना चेहरा काला और गुस्से वाला बना रखा था। उसने उँगली उठा कर उसको धमकाया — "तुमने मुझे धोखा दिया? इस बार तो मैं तुम्हें जाने देती हूँ क्योंकि तुम मेरे गौडसन हो पर अगर तुम दोबारा ऐसा कुछ करोगे तो तुम्हें अपनी ज़िन्दगी देनी पड़ेगी। मैं तुम्हें अपने साथ यहॉ से दूर ले जाऊँगी।"

जल्दी ही राजा की बेटी बीमार पड़ी। वह राजा का अकेला बच्चा थी। राजा उसके लिये रात दिन रोता रहता। ऐसा लगता था जैसे रोते रोते वह अन्धा ही हो जायेगा। उसने यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उसकी बेटी को अच्छा करेगा वह अपनी बेटी उसको दे देगा और फिर अपना ताज भी दे देगा।

जब डाक्टर लड़की को देखने के लिये आया तो मौत उसके पैरों की तरफ खड़ी थी। उसको अपने गौडफ़ादर की चेतावनी याद रखनी चाहिये थी पर वह तो राजकुमारी की सुन्दरता के जादू में इतना फॅस चुका था कि वह तो अब उसका पति बनने का सपना देखने लगा था। सो उसने अपने सारे विचार उड़ा दिये।

उसने यह नहीं देखा कि मौत सामने खड़ी उसके ऊपर गुस्सा हो रही थी। उसका हाथ हवा में ऊपर उठा हुआ था और वह अपनी मुट्ठी से उसको धमका रही थी।

लड़के ने फिर से वैसा ही किया जैसा कि उसने राजा के साथ किया था। उसने राजकुमारी का सिर उसके पैरों की तरफ कर दिया और उसके पैर उसके सिर की तरफ कर दिये।

उसके बाद उसने मौत की दी हुई जड़ी बूटी उसको दे दी। राजकुमारी का गालों का रंग तुरन्त ही वापस लौटने लगा और उसके शरीर में जान पड़ गयी।

जब मौत ने देखा कि उसका गौडसन एक बार फिर से उसकी चीज़ लिये जा रहा है तो वह लम्बे लम्बे कदम उठाती हुई डाक्टर की तरफ बढ़ी और बोली — "बस अब तुम खत्म। अब तुम्हारी बारी है।"

मौत ने उसे अपने बर्फ जैसे ठंडे हाथों से इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह अपने आपको उसकी पकड़ से न छुड़ा सका और वह उसको धरती के नीचे की तरफ एक गुफा में ले कर चल दी।

वहॉ पहुँच कर डाक्टर ने देखा कि वहॉ तो बहुत सारी मोमबत्तियॉ अनगिनत लाइनों में जल रही थीं। उनमें कुछ बड़ी थी कुछ बीच के साइज़ की थीं और कुछ छोटी थीं। हर पल कोई न कोई मोमबत्ती बुझ रही थी जबकि दूसरी जलायी जा रही थी। इस तरह छोटी छोटी लपटें इधर उधर बराबर नाचती कूदती नजर आ रही थीं।

मौत बोली — "देखो ये सब लोगों की ज़िन्दगियों की रोशनियॉ हैं। बड़ी बड़ी रोशनियॉ बच्चों की हैं। बीच के साइज़ की रोशनियॉ शादीशुदा लोगों की है जो इस समय आनन्द भोग रहे हैं। और छोटी रोशनियॉ बूढ़ों की होती हैं। कभी कभी बच्चों और जवानों की रोशनियॉ छोटी भी होती हैं।"

डाक्टर ने यह सोचते हुए कि उसकी ज़िन्दगी की रोशनी तो अभी लम्बी होगी मौत से पूछा — "और मेरी ज़िन्दगी की रोशनी कहॉ है।"

मौत ने एक छोटे से टुकड़े की तरफ इशारा करते हुए दिखाया कि यह तुम्हारी ज़िन्दगी की रोशनी है। वह रोशनी तो बुझने वाली हो रही थी।

डाक्टर तो उसे देख कर घबरा गया। वह उसे देख कर चिल्लाया — "ओ मेरे गौडफ़ादर। मेरे लिये एक नयी रोशनी जलाओ। मेरे ऊपर मेहरबानी करो ताकि मैं अपनी ज़िन्दगी आनन्द

से जी सकूँ। मैं राजकुमारी का पति बन सकूँ और फिर राजा बन सकूँ।"

मौत बोली — "अफसोस मैं यह नहीं कर सकती। आदमी को पहले यहाँ से बाहर जाना पड़ता है तभी उसके लिये नयी रोशनी जल सकती है।"

"तो यह पुरानी वाली रोशनी एक नयी वाली रोशनी पर लगा दो। इससे पुरानी वाली ही जलती रहेगी।"

मौत ने ऐसा दिखाया कि जैसे वह ऐसा करने जा रही थी पर उसने ऐसा किया नहीं। उसने एक बड़ी मोमबत्ती ली पर उससे बदला लेने के लिये उसने जान बूझ कर उसे दोबारा जलाने में गलती कर दी। वह छोटा टुकड़ा नीचे गिर पड़ा और बुझ गया।

डाक्टर भी तुरन्त ही जमीन पर गिर पड़ा और अब वह भी मौत के हाथों में था।

6 ताश खेलने वाला–2[16]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के यूनान देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक आदमी था जो ताश खेलने का बहुत शौकीन था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — "एक दिन काइस्ट को बुलाओ ताकि हम उनको दोपहर का खाना खिला सकें।"

उसकी पत्नी ने काइस्ट को खाने का न्यौता भेजा। काइस्ट ने कहा "ठीक है मैं आऊँगा।" सो दोपहर को काइस्ट अपने सारे शिष्यों के साथ ताश खेलने वाले के घर खाना खाने आये।

जब ताश खेलने वाले की पत्नी ने इतने सारे लोग देखे तो वह बोली — "मेरे पास इतनी सारी रोटी तो नहीं है।"

काइस्ट बोले — "मेरा विचार है कि होगी। नहीं तो यह देखो मेरे पास यह रोटी है आज हम यही खायेंगे।"

खाने की मेज लगायी गयी और वे सब खाना खाने बैठे। काइस्ट ने रोटी को आशीर्वाद दिया और सबने खाना खाया। वह रोटी काफी ही नहीं बल्कि जरूरत से भी ज़्यादा थी।

[16] The Cardplayer-2 – a folktale from Greece, Europe, translated by Nick Nicholas. Adapted from the Web Site http://mw.lojban.org/papri/cardplayer

खाना खाने के बाद काइस्ट ने शराब पी और ताश खेलने वाले से पूछा कि वह काइस्ट से क्या चाहता था। काइस्ट के शिष्यों ने उसको सलाह दी कि वह उनसे स्वर्ग का राज्य माँग ले।

पर ताश खेलने वाले ने कहा — "मेरे घर में एक सेब का पेड़ है। मेरे घर बहुत सारे लोग आते हैं और उस पेड़ से वे सेब तोड़ कर ले जाते हैं। सो मैं यह चाहता हूँ कि जो कोई भी इस पेड़ से सेब तोड़े वह इससे चिपक जाये।"

काइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

काइस्ट ने शराब का दूसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?"

काइस्ट के शिष्यों ने उससे फिर कहा स्वर्ग का राज्य माँग लो पर वह फिर बोला — "नहीं, अबकी बार मैं आपसे यह माँगता हूँ कि मैं जब भी ताश खेलूँ तो बस मैं ही जीतूँ।"

काइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

काइस्ट ने शराब का तीसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "अब तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?"

इस बार उसने कहा — "स्वर्ग का राज्य।"

काइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट यह कह कर वहॉ से चले गये और वह आदमी ताश खेलने चला गया। अब क्या था वह आदमी तो क्राइस्ट के वरदान से जिसके साथ भी ताश खेलता था उसी को जीत लेता था।

कुछ समय बाद क्राइस्ट को तो सूली पर चढ़ा[17] दिया गया और वह आदमी ताश खेलता रहा।

जब क्राइस्ट स्वर्ग के राज्य में पहुँचे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये एक देवदूत[18] भेजा। वह देवदूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले से कहा — "तुम अब काफी खेल चुके अब तुम्हारी ज़िन्दगी खत्म।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। मैं चलता हूँ। तब तक तुम इस सेब के पेड़ से थोड़े से सेब खाओ और बस मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

वह देवदूत उस पेड़ से सेब तोड़ने गया पर जैसे ही उसने उस पेड़ को छुआ वह उससे चिपक गया। उसने ताश खेलने वाले से कहा कि वह उसको उस पेड़ से छुड़ा ले।

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है मैं तुमको छुड़ाने आता हूँ पर जब मैं चाहूँगा तभी आऊँगा उससे पहले नहीं।" और यह कह कर वह इधर उधर घूमता रहा।

[17] Translated for the word "Crucified".

[18] Translated for the word "Angel"

जब वह इधर उधर घूमते घूमते थक गया तब वह देवदूत के पास आया और बोला — "मैं अब तुमको इस पेड़ से छुड़ाता हूँ और तुम्हारे साथ चलता हूँ।" कह कर उसने देवदूत को उस पेड़ से छुड़ाया और उसके साथ चल दिया।

रास्ते में नरक पड़ा। वहाँ हैडेस[19] अपने बारह छोटे साथियों के साथ था तो ताश खेलने वाला उससे बोला — "मैं तुमसे ताश की एक बाज़ी खेलता हूँ। अगर मैं हार गया तो मैं तुम्हारे पास हमेशा के लिये रह जाऊँगा और अगर तुम हार गये तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे साथी दे देना।"

हैडेस राजी हो गया और उसने ताश खेलना शुरू कर दिया। अब क्राइस्ट के वरदान के साथ उससे कोई जीत तो सकता नहीं था सो वह जीत गया और हैडेस से वह उसके बारह छोटे साथी ले कर वहाँ से चलता बना।

अब वह स्वर्ग आया। जब क्राइस्ट ने उस आदमी के साथ दूसरे लोगों को आते देखा तो उस आदमी से कहा — "मैंने तो केवल तुमको ही आने को कहा था पर तुम तो बहुत सारे लोगों को अपने साथ ले आये हो।"

वह आदमी बोला — "मैंने भी तो खाने के लिये केवल आपको ही बुलाया था और आप तेरह लोग आये थे। मैं भी अपने साथ बारह लोगों को ले कर आया हूँ।"

[19] Hades is the Devil

यह सुन कर क्राइस्ट ने सारे तेरह लोगों को स्वर्ग में आने की इजाज़त दे दी।

7 पादरी की आत्मा[20]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

पुराने समय में आयरलैंड में बड़े बड़े स्कूल थे जहॉ लोगों को हर तरीके की शिक्षा दी जाती थी और उस समय के वहॉ के गरीब से गरीब लोग भी आज के अच्छे पढ़े लिखे आदमियों से ज़्यादा जानते थे।

ऐसे ही समय में एक बच्चा अपनी होशियारी से सबको चकित किये दे रहा था। उसके गरीब माता पिता मेहनत मजदूरी कर के अपना और अपने बच्चों का पेट पालते थे।

पर यह बच्चा पैसे से जितना गरीब था ज्ञान का उतना ही अमीर था। राजाओं और महाराजाओं के बच्चे भी उससे ज्ञान में आगे नहीं थे।

कई बार वह अपने मास्टरों को भी नीचा दिखा देता था क्योंकि वे जब भी उसको कोई चीज़ सिखाने की कोशिश करते तो वह उनको कुछ ऐसी बात बता देता जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी होती।

उसकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वह बहस में बहुत होशियार था। वह पहले काले को सफेद साबित करता और फिर

[20] Spirit of a Priest – a folktale of Ireland, Europe

जब दूसरे को इस बात का विश्वास हो जाता कि हॉ यह तो सफेद ही है तो फिर अपनी होशियारी से उसी सफेद को काला साबित कर देता था।

जब वह बच्चा बड़ा हो गया तो उसके माता पिता उससे बहुत खुश रहते थे। उन्होंने सोच लिया कि वे उसको पादरी बनायेंगे और उन्होंने एक दिन उसको पादरी बना दिया। क्योंकि इतना अक्लमन्द आदमी उस समय पूरे आयरलैंड में कोई नहीं था इसलिये कोई उसका मुकाबला भी नहीं कर सकता था।

अगर कोई बिशप[21] भी उससे बात करने की कोशिश करता तो उसे तुरन्त ही पता चल जाता कि वह तो उसके आगे कुछ भी नहीं जानता।

उस समय में आजकल की तरह के स्कूल और मास्टर नहीं हुआ करते थे। चर्च के पादरी लोग ही लोगों को पढ़ाया करते थे और क्योंकि यह पादरी उस समय का सबसे अक्लमन्द पादरी था इसलिये बहुत सारे देशों के राजा अपने अपने बेटों को इसी पादरी के पास पढ़ने के लिये भेजते थे।

धीरे धीरे इस पादरी में घमंड आने लगा और वह यह भी भूल गया कि वह क्या था और किसकी मेहरबानियों से आज इस जगह पहुॅचा था। उसके अन्दर बहस करने की चतुरता का घमंड घर करता चला गया।

[21] Bishop – a high status man in Church

वह यह साबित करता चला गया कि न तो कहीं स्वर्ग है और न ही कहीं नरक है, न कहीं आत्मा है और न ही कहीं परगेटरी[22] ही है। यहाँ तक कि कहीं भगवान भी नहीं है।

वह हमेशा यह कहा करता था — "आत्मा को किसने देखा है? अगर तुम मुझे एक भी आत्मा दिखा दो तो मैं विश्वास कर लूँगा कि आत्मा है।"

लेकिन उस जैसे होशियार आदमी को यह कौन समझाता कि आत्मा को तो देखा नहीं जा सकता। और फिर सारे लोग यही मानने लग गये।

उसने शादी भी की पर उसकी शादी कराने वाला दुनियाँ भर में कोई पादरी ही नहीं मिला तो अपनी शादी की सब रस्में उसे खुद ही पूरी करनी पड़ीं।

लोग आपस में तरह तरह की बातें करते पर ऊपर से कोई कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि सब राजाओं के लड़के उसी से पढ़ते थे और सब उसी का पढ़ाया बोलते थे।

वे सब तो उसी के चेले थे और उसी की बातों में विश्वास करते थे। वे सोचते थे कि वह जो कुछ कहता था ठीक ही कहता था। इस तरह दुनियाँ में बुराई फैलती जा रही थी।

[22] Purgatory – According to Catholic Church doctrine, Purgatory is an intermediate state after physical death in which those destined for heaven "undergo purification, so as to achieve the holiness necessary to enter the joy of heaven.

कि एक रात स्वर्ग से एक देवदूत[23] आया और पादरी से बोला कि "तुम्हारी ज़िन्दगी अब केवल चौबीस घंटों की और है।"

पादरी यह सुन कर कॉप गया और उसने देवदूत से उसे इस धरती पर रहने के लिये कुछ और ज़्यादा समय देने की प्रार्थना की परन्तु देवदूत अपनी बात का पक्का था इसलिये पादरी को उससे ज़्यादा समय नहीं मिल पाया।

फिर भी उस देवदूत ने उससे पूछा — "तुम जैसे पापी को और ज़्यादा समय क्यों चाहिये?"

पादरी ने दीनता भरी आवाज में कहा — "देवदूत, मुझ पर रहम करो, मुझ पर दया करो, मेरी आत्मा पर तरस खाओ।"

देवदूत ने मुस्कुरा कर पूछा — "तो तुम्हारी आत्मा भी है? परन्तु इस बात का तुमको पता कैसे चला कि तुम्हारी आत्मा भी है?"

पादरी बोला — "जबसे तुम मेरे सामने आये हो तभी से यह मेरे शरीर के अन्दर फड़फड़ा रही है। मैं भी कितना बेवकूफ था कि मुझे इसका पहले पता ही नहीं चला।"

"तुम सचमुच में बेवकूफ हो। तुम्हारे पढ़ने लिखने का क्या फायदा अगर तुम यही पता न चला सके कि तुम्हारी एक आत्मा भी है।" देवदूत बोला।

[23] Translated for the word "Angel"

पादरी बोला — "ओह मेरे भगवान, अच्छा यह बताओ मरने के कितनी देर बाद मैं स्वर्ग पहुँच जाऊँगा?"

देवदूत हँस कर बोला — "तुम स्वर्ग कभी नहीं पहुँचोगे क्योंकि तुम तो स्वर्ग को मानते ही नहीं।"

पादरी बोला — "क्या मैं परगेटरी जा सकता हूँ?"

देवदूत बोला — "पर तुम तो परगेटरी को भी नहीं मानते। तुम तो सीधे नरक जाओगे।"

अबकी बार पादरी के हँसने की बारी थी। वह बोला — "पर मैं तो नरक को भी नहीं मानता इसलिये तुम मुझे वहाँ भी नहीं भेज सकते।"

यह सुन कर देवदूत कुछ परेशान सा हुआ और बोला — "मैं बताता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ। तुम चाहो तो अभी धरती पर सौ साल तक रह सकते हो और सभी खुशियों को भोग सकते हो, या फिर चौबीस घंटों के बाद तकलीफ के साथ मर सकते हो।

मैं तुमको परगेटरी ले जाऊँगा फैसले के दिन[24] तक का इन्तजार करने के लिये। पर इस बीच अगर तुमको कोई ऐसा आदमी मिल जाता है जो भगवान में विश्वास करता हो, स्वर्ग नरक में विश्वास

[24] Translated for the words "The Day of Judgment". In Christianity it is believed that there will be a Day of Judgment also called "The Judgment Day", or "Final Judgment", or "The Day of the Lord" etc is the day in every nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

रखता हो, तो तुम्हारी ज़िन्दगी कुछ सुधर सकती है।" यह कह कर वह देवदूत वहॉ से गायब हो गया।

पादरी को निश्चय करने में पॉच मिनट भी नहीं लगे। उसने सोच लिया था कि उसे क्या करना था। चौबीस घंटे तो बहुत होते थे उसके लिये वह करने के लिये जो देवदूत ने उसको बताया था।

वह तुरन्त ही एक बहुत बड़े कमरे में पहुॅचा जहॉ उसके बहुत सारे चेले और राजाओं के लड़के बैठे थे। उसने उनसे कहा कि तुम सब लोग सब सच बोलना।

तुम लोग मेरे खिलाफ बोल रहे हो इस बात से ज़रा भी नहीं डरना। यह बताओ कि तुम्हारा क्या विश्वास है कि आदमी के आत्मा होती है क्या?

वे बोले — "मास्टर जी, पहले तो हम लोग मानते थे कि आदमी के अन्दर आत्मा होती है परन्तु अब जबसे हमने आपसे पढ़ा है कि कहीं कोई आत्मा नहीं है तबसे हम इसमें विश्वास नहीं करते। अब तो कहीं कोई स्वर्ग नहीं है, कहीं कोई नरक नहीं है और कहीं कोई भगवान भी नहीं है, यही आपने हमें सिखाया है।"

पादरी डर के मारे पीला पड़ गया और ज़ोर से बोला — "देखो, मैंने तुम लोगों को जो कुछ भी सिखाया था वह गलत था। भगवान है और एक अमर आत्मा भी है। पहले मैं जिनमें विश्वास नहीं करता था आज उनको मैं मानता हूॅ।"

वहाँ बैठे सभी लोग ज़ोर ज़ोर से हँस पड़े क्योंकि वे समझे कि उनका मास्टर उनको बहस करने के लिये उकसा रहा है। सो वे भी ज़ोर से चिल्लाये — "साबित कीजिये, साबित कीजिये। भगवान को किसने देखा है और आत्मा को भी किसने देखा है?" और कमरा एक बार फिर ठहाकों से भर गया।

पादरी कुछ कहने के लिये उठा और उसने कुछ कहा भी पर सब कुछ उन ठहाकों के शोर में दब कर रह गया। वह चिल्लाता रहा — "भगवान है, आत्मा भी है, स्वर्ग भी है और नरक भी है।" परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी।

उसने सोचा कि शायद उसकी पत्नी उसका विश्वास कर लेगी परन्तु उसने कहा कि वह भी उसी की सिखायी हुई बातों को मानती है। और ऐसा एक पत्नी को करना भी चाहिये क्योंकि पति पत्नी के लिये भगवान से भी ऊँचा होता है।

इसको सुन कर तो वह बहुत निराश हो गया और घर घर जा कर पूछने लगा कि क्या वे भगवान में विश्वास करते थे। पर सबसे उसको एक ही जवाब मिला "हम तो उसी में विश्वास करते हैं जो आपने हमें सिखाया है।"

अब तो पादरी डर के मारे बिल्कुल पागल सा हो गया क्योंकि समय बीतता जा रहा था और उसको कोई एक भी आदमी भगवान में विश्वास करने वाला नहीं मिल रहा था।

वह अकेला ही एक कमरे में जा कर बैठ गया और रोने लगा। कभी कभी डर के मारे वह चिल्ला पड़ता क्योंकि उसके मरने का समय पास आता जा रहा था।

इतने में एक बच्चा आया और बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

बच्चे के ये शब्द सुनते ही पादरी में जान आ गयी। उसने तुरन्त बच्चे को गोद में उठा लिया और उतावली से उससे पूछा — "बेटा क्या तुम भगवान को मानते हो?"

बच्चा बोला — "मैं यहाँ उसी के बारे में जानने के लिये तो आया हूँ। क्या आप मुझे यहाँ का सबसे अच्छा स्कूल बतायेंगे?"

पादरी बोला — "सबसे अच्छा स्कूल और सबसे अच्छा मास्टर तो तुम्हारे पास ही है बेटा।" यह कह कर उसने उसको अपना नाम बता दिया।

बच्चा बोला — "नहीं नहीं, मैं इस आदमी के पास नहीं जाना चाहता क्योंकि मैंने सुना है कि वह भगवान को नहीं मानता, स्वर्ग और नरक को नहीं मानता। यहाँ तक कि अपने शरीर में रह रही आत्मा को भी वह नहीं मानता क्योंकि वह उसको देख नहीं सकता। परन्तु मैं उसको बहुत जल्दी नीचा दिखा दूँगा।"

पादरी को उस बच्चे की बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उससे रहा न गया तो उसने उससे पूछ ही लिया — "तुम उसको कैसे नीचा दिखाओगे बेटा?"

बच्चा बोला — "यह तो बड़ा आसान है। मैं उससे कहूँगा कि अगर तुम ज़िन्दा हो तो तुम अपना ज़िन्दा रहना साबित करो।"

पादरी बोला — "पर बेटे वह ऐसा कैसे कर सकता है? क्योंकि सभी जानते हैं कि वे ज़िन्दा हैं पर वे उसे दिखा तो नहीं सकते क्योंकि उसको देखा नहीं जा सकता।"

इस पर बच्चा बोला — "सो अगर हमारे अन्दर ज़िन्दगी है और हम उसे केवल इसलिये नहीं दिखा सकते क्योंकि वह छिपी हुई है तो हमारे अन्दर आत्मा भी तो हो सकती है जो हमारे अन्दर इसी तरह छिपी हुई हो।"

पादरी ने जब उस बच्चे के मुँह से ऐसे शब्द सुने तो उसने उसके सामने अपने घुटने टेक दिये और रो पड़ा क्योंकि अब उसे विश्वास हो गया था कि उसकी आत्मा अब सुरक्षित है।

कम से कम एक आदमी तो उसको भगवान में विश्वास रखने वाला मिला और उसने उस बच्चे को शुरू से ले कर आखीर तक की अपनी सारी कहानी सुना दी।

फिर बोला — "लो बेटे यह चाकू लो और इससे मेरी छाती को गोद दो और गोदते रहो जब तक तुम्हें मेरे चेहरे पर मौत का पीलापन नजर न आ जाये। फिर ध्यान से देखना जब मैं मरूँगा तो मेरे शरीर से एक ज़िन्दा चीज़ निकलेगी। उससे तुमको पता चल जायेगा कि मेरी आत्मा भगवान के पास पहुँच गयी है।

और जब तुम यह देखो तो तुम तुरन्त भाग कर मेरे स्कूल जाना और मेरे सभी चेलों को यह देखने के लिये बुला लाना। उनको बताना कि जो कुछ भी मैंने उनको ज़िन्दगी भर सिखाया वह सब गलत था क्योंकि कहीं भगवान है जो पापों की सजा देता है। स्वर्ग भी है और नरक भी है और हर आदमी के पास एक अमर आत्मा भी है।"

बच्चा बोला —"मैं कोशिश करूँगा।" कह कर वह बच्चा घुटनों के बल बैठ गया। पहले उसने प्रार्थना की फिर चाकू उठाया और पादरी की छाती में मारा और तब तक मारता रहा जब तक उसकी छाती का मॉस चिथड़े चिथड़े नहीं हो गया।

परन्तु इतना सब होने के बावजूद भी पादरी मरा नहीं। हालॉकि उसको दर्द बहुत था पर चौबीस घंटे पूरे होने से पहले वह नहीं मरा। आखिर उसके चेहरे पर मौत का पीलापन झलकने लगा।

उसी समय बच्चे ने देखा कि एक छोटी सी कोई ज़िन्दा चीज़, चार सफेद पंखों वाली, पादरी के शरीर से निकली और उसके सिर पर मॅडराने लगी।

वह तुरन्त उसके शिष्यों को उनके मास्टर की आत्मा दिखाने के लिये बुला लाया। उन्होंने भी उसको तब तक देखा जब तक वह उड़ कर बादलों के उस पार नहीं चली गयी।

आयरलैंड की यह सबसे पहली तितली थी और आज वहॉ सब यह जानते हैं कि तितलियों में मरे हुए लोगों की आत्मा होती है और

उस रूप में दर्द सहती हुई शान्ति पाने के लिये परगेटरी में घुसने का इन्तजार करती रहती हैं।

8 तीन इच्छाऐं[25]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत पुरानी बात है कि आयरलैंड के एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसका नाम बिल्ली डाउसन[26] था। वह सब लोगों को बहुत तंग करता था और पूरे यूरोप में वह अपनी सुस्ती के लिये मशहूर था।

बिल्ली अपने माता पिता का अकेला बेटा था और यह सुस्ती उसको अपने माता पिता से विरासत में मिली थी। फिर उसके पिता ने उसको एक लोहार के यहॉ काम दिलवा दिया पर वह लोहार भी बिल्ली से बहुत तंग था।

कुछ सालों बाद बिल्ली बड़ा हो गया। उसकी शादी हो गयी। उसकी पत्नी भी उसके बराबर की थी।

अगर वह सुस्त था तो वह भी उससे कम सुस्त नहीं थी, अगर वह उससे लड़ता था तो वह भी उससे खूब लड़ती थी। ऐसा जोड़ा पहले कभी किसी ने न देखा था और न सुना था। जल्दी ही उन दोनों की चर्चा गॉव भर में फैल गयी।

---

[25] Three Wishes – a folktale of Ireland, Europe. Taken from the Book "Fairy and Folktales of Ireland". By WB Yeats. NY: Macmillan. 1973. Hindi translation of the stories of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[26] Billy Dawson – name of a man

लोग उसे सुबह सुबह ही पिये हुए पाते। उसकी कमीज की बाँहें मुड़ी होतीं, उसके आगे के बटन खुले रहते। इस पल वह गा रहा होता तो अगले पल वह अपनी पत्नी से झगड़ रहा होता।

उसकी पत्नी उसके चारों तरफ चक्कर काट रही होती। उसके सिर पर कहीं एक फटा सा गन्दा सा टोप होता, पैरों में बिल्ली के पुराने स्लिपर होते, गोद में रोता हुआ बच्चा होता। कभी वह बिल्ली को खींच रही होती तो कभी उसे प्यार कर रही होती।

मन को लुभाने वाली ऐसी सुन्दर घटनाएँ उस घर में अक्सर ही देखने को मिल जातीं।

एक दिन सुबह सुबह बिल्ली अपने घर की दीवार के सामने खड़ा था और सोच रहा था कि परिवार के लिये नाश्ते का इन्तजाम कैसे किया जाये।

उसकी पत्नी नीचे जमीन पर बैठी बच्चों को सँभालती उसको खाने के लिये चिल्ला रही थी। बिल्ली की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। कहाँ से लाये खाना?

इतने में एक बूढ़ा दुबला पतला भिखारी एक डंडे के सहारे चलता हुआ वहाँ आया। उसकी सफेद दाढ़ी काफी नीचे तक लटक रही थी और वह बहुत भूखा दिखायी दे रहा था।

बिल्ली उसको देख कर कुछ होश में आया और उसको उसके ऊपर कुछ तरस भी आया। वह बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करें।"

भिखारी ने पलट कर कहा — "भगवान तुम्हारी मदद करे। इस बूढ़े को कुछ खाने को दे दो। तुम देख रहे हो कि मैं काम नहीं कर सकता इसी लिये मैं तुमसे माँगता हूँ।"

बिल्ली बोला — "अगर तुमको मालूम होता कि तुम किससे माँग रहे हो तो शायद तुम्हें पता चलता कि जैसे तुम किसी डंडे से कुछ माँग रहे हो।

मेरे घर में तो मेरे खुद के खाने को लिये कुछ नहीं है। मेरी पत्नी मुझे बुरा भला कह रही है और मेरे बच्चे उसे रो रो कर तसल्ली देने की कोशिश रहे हैं। तुम सच मानो अगर मेरे पास खाना या पैसा कुछ भी होता तो मैं तुम्हारी मदद जरूर करता।"

भिखारी बोला — "अरे, तुम तो मुझसे भी बुरी हालत में हो क्योंकि तुम्हारे पास तो खिलाने पिलाने के लिये एक परिवार भी है। कम से कम मेरे ऊपर यह जिम्मेदारी तो नहीं है। मैं तो अकेला ही हूँ।"

बिल्ली बोला — "फिर भी तुम घर में आओ और मुझे बताओ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ? तुम यहाँ आग के पास बैठो। आज बड़ा बर्फीला दिन है, तुमको इस आग से थोड़ी गर्मी मिलेगी।"

बूढ़ा भिखारी घर के अन्दर आ गया और आग के पास बैठता हुआ बोला — "हाँ आज का दिन बहुत ही ठंडा है। यह आग मुझे बहुत ही अच्छी लग रही है।"

थोड़ी देर तक वह भिखारी आग के पास बैठा रहा फिर वह चलने के लिये खड़ा हो गया और बिल्ली से बोला — "तुमने मुझे खाना तो खाने के लिये दिया नहीं पर जो कुछ तुम मुझे दे सकते थे वह तुमने मुझे दिया। इसके बदले में तुम मुझसे अपनी कोई भी तीन इच्छाएँ पूरी करवा सकते हो।"

अब सच तो यह था कि बिल्ली अपने आपको बहुत ही अक्लमन्द समझता था परन्तु ऐसे समय में वह सिर खुजलाता खड़ा रहा। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह उससे अपनी कौन सी तीन इच्छाऐं पूरी करवाये।

बूढ़ा बोला — "तुम जल्दी ही माँग लो क्योंकि मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है और मैं ज़्यादा समय तक यहाँ रुक भी नहीं सकता।"

बिल्ली बोला — "अच्छा ठीक है तो सुनो। यह जो मेरे स्ले[27] का हथौड़ा तुम देख रहे हो न? मेरी पहली इच्छा यह है कि इसको जो कोई भी अपने हाथ में उठा ले यह तब तक उसके हाथ में से न छूटे जब तक मैं न चाहूँ। और अगर वह इसको स्ले पर चलाने लगे तो यह तब तक न रुके जब तक मैं उसको रुकने को न बोलूँ।"

[27] Sleigh – a wheelless snow vehicle which is used by the people living in icy regions. It just slips on the ice and normally is drawn by powerful dogs or horses. See its picture above

बिल्ली फिर बोला — "मेरी दूसरी इच्छा यह है कि मेरे पास एक आराम कुर्सी है। उस कुर्सी पर जो कोई भी बैठ जाये वह बिना मेरी इच्छा के उस पर से न उठ सके।

और मेरी तीसरी इच्छा यह है कि जो कुछ पैसे मैं अपने बटुए में रखूँ वह मेरे सिवा उसमें से और कोई न निकाल सके।"

ऐसी इच्छाएँ सुन कर बूढ़े को गुस्सा आ गया। वह बोला — "तुम्हारी नीयत अच्छी नहीं है। तुमने मुझसे कोई ऐसी चीज़ क्यों नहीं माँगी जो तुम्हारी यह दुनियाँ और दूसरी दुनियाँ दोनों ही सुधार देती?"

बिल्ली अपने माथे पर हाथ मारता हुआ बोला — "ओह यह तो मैं भूल ही गया था। क्या तुम मेरी एक इच्छा को बदलने दोगे? एक मौका मुझे और दो न बस एक मौका और।"

बूढ़ा बोला — "नहीं, तुम बहुत नीच हो। तुम्हारे भले दिन गुजर चुके हैं। तुम जानते ही नहीं कि अब तक तुमसे कौन बात कर रहा था।

मेरा नाम सेन्ट मोरोकी[28] है। मैंने तुमको एक मौका दिया था कि तुम अपने और अपने परिवार के लिये कुछ कर सको परन्तु तुमने कुछ ध्यान ही नहीं दिया।

[28] Saint Moroky – a Saint

अब वह सब तुम्हारी किस्मत में नहीं है। इसी लिये तुम इतने मशहूर हो। तुम अगर अब मेरे सामने भी आये तो मैं तुमको ऐसी जगह भेज दूँगा जहाँ तुम शान्ति से मर भी नहीं पाओगे।" और गुस्से में भरा वह बूढ़ा अपने पैर पटकता हुआ वहाँ से चला गया।

कुछ पल बाद जब बिल्ली को होश आया तो वह बड़ा पछताया कि उसने एक इच्छा में बहुत सारी दौलत उस बूढ़े से क्यों नहीं माँग ली। पर अब क्या हो सकता था अब तो उसे अपनी इन तीन इच्छाओं के वरदान से ही सब कुछ हासिल करना था।

वह सोचता रहा, सोचता रहा तो उसके दिमाग में एक तरकीब आयी और उसने अपने शहर के सबसे अमीर आदमी को बुला भेजा कि वह उससे कुछ बिजनेस करना चाहता है। जब वह आया तो उसने उसको आदर सहित अपनी आराम कुर्सी पर बिठा दिया।

अब बिल्ली सुरक्षित था क्योंकि अब वह अमीर आदमी बिना उसकी मर्जी के उस कुर्सी से उठ ही नहीं सकता था और उसको उस कुर्सी पर से उठने के लिये काफी पैसा देना पड़ा।

ऐसा उसने वहाँ के काफी अमीर लोगों के साथ किया। वहाँ के सभी लोग उससे परेशान हो गये थे। परन्तु यह सब कुछ ही दिनों तक रहा क्योंकि उसकी कुर्सी वाली बात जल्दी ही चारों तरफ फैल गयी और लोगों को उसकी चालाकी का पता चल गया।

इसके बाद उसने अपनी स्ले के हथौड़े वाला वरदान का इस्तेमाल किया तो उसकी स्ले वाली बात भी चारों तरफ फैल गयी

तो क्या आदमी क्या औरत, क्या बूढ़ा और क्या बच्चा सभी ने उसके घर आना छोड़ दिया।

इस तरह से उसे अपनी आराम कुर्सी से पैसे मिलने भी बन्द हो गये और उसका बटुआ भी खाली होता चला गया।

इन सब बातों के साथ साथ उसका चाल चलन भी खराब होता चला गया। घर में फिर से हर समय झगड़ा रहने लगा। हर कोई उससे घृणा करता, उसको बुरा भला कहता और उससे बचने की कोशिश करता।

एक दिन बिल्ली ऐसे ही घूम रहा था और सोच रहा था कि ऐसी दशा से कैसे छुटकारा पाया जाये कि उसने अपने आपको कुछ घनी झाड़ियों के बीच खड़ा पाया।

उसने सोचा कि जब पैसे मिलने के सारे रास्ते बन्द हो चुके हैं तो शैतान से ही कुछ कमाया जाये सो वह ज़ोर से बोला — "ओ निक[29], ओ पापी, अगर तुम्हारी इच्छा है तो तुम सामने आओ, मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ।"

इन शब्दों के उसके मुँह से निकालने की देर थी कि एक वकील जैसा साँवला भला आदमी उसके सामने आया। बिल्ली ने उसके पैरों की तरफ देखा तो उनमें उसे खुर दिखायी दिये। यानी कि वह शैतान ही था।

बिल्ली बोला — "नमस्ते।"

[29] Nick – another name of Satan. It is the colloquial word for Satan

निक बोला — "नमस्ते, कहो बिल्ली क्या ख़बर है?"

बिल्ली बोला — "मुझे पैसे चाहिये और मैं उसके लिये सौदा करने के लिये तैयार हूँ।"

निक बोला — "पर अगर मैं तुमको बेचूँगा भी तो मुझको क्या मिलेगा?"

बिल्ली बोला — "अगर मेरी और तुम्हारी दोनों की नीलामी लगायी जाये तो देख लेना कि लोग मेरे लिये ज़्यादा पैसा देंगे।"

निक बोला — "ख़ैर, छोड़ो इन बातों को। पर अगर तुम सात साल तक मेरा रहने का वायदा करो तो मैं तुमको इतना सारी दौलत दे सकता हूँ जिसके तुम लायक भी नहीं हो।"

बिल्ली बोला — "ठीक है। पर पहली बात यह कि मेरे परिवार से तुम्हारा कोई लेना देना नहीं होगा। और दूसरी बात यह कि मैं पैसा नकद लूँगा।"

निक ने बिल्ली को पैसे गिन कर दे दिये। अब क्योंकि वहाँ कोई भी नहीं था इसलिये निक ने बिल्ली को कितने पैसे दिये यह पता नहीं चल सका।

पर निक पैसे गिनने के बाद बोला — "क्या तुम मुझे लकी पैनी नहीं दोगे?"

बिल्ली बोला — "उँह, तुम इतने अमीर हो कि तुमको उसकी जरूरत ही नहीं है। भगवान करे तुम बदकिस्मत रहो और हाँ अब

तुम यहॉ से दफा हो। कोई भी तुम्हारा साथ पसन्द नहीं करता। अपने साथ से तो तुमने मुझे भी बिगाड़ दिया है।"

निक बोला — "बिल्ली क्या यही तुम्हारी वफादारी है?"

"अच्छा अच्छा अब तुम यहॉ से दफा हो जाओ।" कहता हुआ बिल्ली एक तरफ को चला गया और निक दूसरी तरफ चला गया।

अब क्या था कुछ ही समय में बिल्ली एक बहुत बड़ा आदमी बन गया। जो लोग पहले कभी उससे बचते फिरते थे अब उसके दरवाजे पर आ कर नाक रगड़ते थे। इस बात को सोच कर ही वह मन ही मन बहुत खुश होता था।

पर इतना अमीर हो जाने के बाद भी उसके रहने सहने के ढंग में कोई फर्क नहीं आया था। तीन साल बाद उसके पास गाड़ी थी, शिकारी थे। वह अब जुआ भी खेलने लग गया था। घोड़ों पर दॉव भी लगाने लग गया था।

पर इन सबको एक दिन तो जाना ही था। दो साल बाद यह सब धीरे धीरे कम होना शुरू हो गया। लोग उसके पास से हटने लगे। शिकारी, गाड़ी सभी कुछ खत्म होने लगा। बटुए में पैसे कम रहने लगे और फिर एक दिन ऐसा आया जब उसको फिर से अपना चमड़े का ऐप्रन पहन कर हथौड़ा उठा लेना पड़ा।

कोई भी हालात उसको कुछ भी नहीं सिखा पा रहे थे सो वह अपने पुराने काम पर वापस आ गया था। यानी पत्नी से लड़ाई पर वापस आ गया था।

एक दिन वे सात साल भी खत्म हो गये और एक सुबह बिल्ली और उसका परिवार फिर से भूखा बैठा हुआ था। उसकी पत्नी उस पर चिल्ला रही थी और बच्चे भूखे रो रहे थे।

वह यह सोच ही रहा था कि किस तरह वह अपने किसी पड़ोसी को धोखा दे कर सुबह के नाश्ते का इन्तजाम करे कि निक अपना सौदा पूरा करने उसके सामने आ खड़ा हुआ।

निक बोला — "नमस्ते बिल्ली।"

बिल्ली बोला — "ओ शैतान आओ आओ। पर मानना पड़ेगा तुम्हारी याद बहुत अच्छी है।"

निक बोला — "भाई, ईमानदारों के बीच सौदा तो सौदा ही होता है। जब मैं ईमानदारों की बात करता हूँ तो उससे मेरा मतलब है अपने आपसे और तुमसे।"

बिल्ली बोला — "निक, तुम मेरे साथ कोई गन्दी हरकत नहीं करोगे। तुम मुझ जैसे गिरे हुए आदमी के ऊपर और ज़्यादा बोझा नहीं डालोगे। तुम जानते हो कि इस तरह नीचे आने का क्या मतलब होता है इसलिये अच्छा हो अगर तुम यहाँ से दफा हो जाओ।"

निक बोला — "इतना नाराज होने से कोई फायदा नहीं बिल्ली। तुम्हारी ये चालाकियाँ किसी और को धोखा देने के लिये तो ठीक हैं परन्तु मुझे तुम इन चालाकियों से नहीं बहका सकते। तुमको मेरे साथ दूसरे देशों में भी जाना होगा।"

बिल्ली बोला — "ठीक है। तुम यह स्ले वाला हथौड़ा लो और ज़रा मेरे इस घोड़े की नाल[30] बना कर तैयार करो मैं तब तक तैयार होकर और अपनी पत्नी और बच्चों से मिल कर आता हूँ।"

यह कह कर बिल्ली कनखियों से उसकी तरफ देखता हुआ बाहर की तरफ चला गया। वह अपने मन में कहता जा रहा था "मैंने अच्छे अच्छों को सीधा कर दिया है तुम क्या चीज़ हो निक जी।"

इधर निक ने जैसे ही वह हथौड़ा हाथ में पकड़ा तो वह तो उस हथौड़े से जैसे चिपक ही गया। अब वह उसे अपने आप छोड़ना चाह कर भी नहीं छोड़ पा रहा था।

उधर बिल्ली एक महीने के बाद चारों तरफ घूम घाम कर आया तो उसने देखा कि शैतान गुस्से में भरा पसीने में तर बतर उसका स्ले का हथौड़ा चलाये ही जा रहा है चलाये ही जा रहा है।

बिल्ली ने बड़ी शान्ति से उससे कहा — "गुड मौर्निंग निक।"

निक हथौड़ा चलाते हुए बोला — "तुम तो बड़े ज़ोर का धोखा देने वाले निकले। तुमको तो धोखेबाजों का राजा कहा जाना चाहिये।"

बिल्ली फिर बोला — "निक तुम बहुत अच्छे हो। पर यह तो तुम अपनी मर्जी से बैठे थे। मैंने तुमको खाली हथौड़ा चलाने के लिये तो नहीं कहा था। फिर मुझे काम करने वाले लोग पसन्द हैं

[30] Translated for the word "Horseshoe"

इसलिये तुम अपना काम जारी रखो। और फिर तुमको काम करने का मौका ही कहॉ मिलता होगा। आज मिला है तो थोड़ा काम कर लो।"

निक बोला — "बिल्ली थोड़ा तरस खाओ। तुम तो गिरते आदमी के ऊपर और बोझा नहीं डालते हो। तुम तो बहुत ही दयावान हो। बिल्ली मुझे इस हथौड़े से छुड़ाओ।"

बिल्ली बोला — "अच्छा तो मुझे उतना ही पैसा सात साल के लिये फिर से दे दो जितना तुमने मुझे पहले दिया था।"

"हॉ हॉ जो भी तुम कहो।"

बिल्ली ने निक को छोड़ दिया और निक उसको फिर से पैसे दे कर चला गया। अब बिल्ली फिर से अमीर हो गया और लोग फिर से उसके पास आने लगे।

सात साल गुजरते कितनी देर लगती है। सात साल शुरू हुए और चले गये। बिल्ली का सारा पैसा फिर खत्म हो गया था। सात साल बाद बिल्ली फिर से गरीब हो गया था।

पर इतने समय ने उसको कम से कम यह सिखा दिया था कि आदमी को केवल अपनी मेहनत पर ही भरोसा करना चाहिये केवल दिये हुए पैसे पर नहीं। सो उसने एक नौकरी कर ली।

पर एक सुबह फिर पति पत्नी में फिर से झगड़ा हो गया और उन दोनों में खूब ज़ोर ज़ोर से लड़ाई होने लगी कि शैतान ने सोचा कि यह तो ठीक नहीं है सो वह वहॉ पहुॅचा और बिल्ली की पत्नी

की तरफ से बिल्ली से लड़ा और बिल्ली को एक घूँसा मार कर गिरा दिया।

जब पत्नी ने यह देखा कि शैतान ने उसके पति को गिरा दिया तो उसने शैतान को ज़ोर से एक डंडा मारा जिससे शैतान नीचे गिर गया।

पत्नी ने शैतान को ज़ोर की डॉट लगायी तो वह पीछे की तरफ भागा। पत्नी आगे बढ़ती आयी और शैतान पीछे हटता चला गया और पीछे पीछे हटते हटते आखिर वह बिल्ली की आराम कुर्सी में जा कर गिर गया।

बिल्ली ने जब शैतान को अपनी आराम कुर्सी में गिरे हुए देखा तो समझ गया कि अब वह और उसका दुश्मन दोनों सुरक्षित हैं।

वह अपनी पत्नी के पास आया और प्यार से बोला — "क्यों नाराज होती हो प्रिये। मुझे बेरहमी बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती। तुम ज़रा जा कर आग में चिमटा गर्म कर के ले आओ।"

यह सुन कर शैतान ने उठने की कोशिश की पर उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो उस कुर्सी से उठ ही नहीं पा रहा है।

बिल्ली बोला — "क्या बात है निक, तुम्हारी कुछ तबियत खराब लगती है।"

निक ने एक बार फिर उठने की कोशिश की परन्तु वह तो जैसे उस कुर्सी से चिपक सा गया था। बिल्ली फिर बोला — "मुझे खुशी

है कि तुम यहॉ आ गये। मुझे दूर देशों की यात्रा का बड़ा शौक है। तुम उठो तो चलते हैं

तुमको तो मालूम ही है कि ईमानदारों के बीच में सौदा तो सौदा ही होता है और ईमानदारों का मतलब होता है हम और तुम। अरे हॉ जूडी[31], चिमटा गर्म हो गया क्या?"

इस समय शैतान की हालत देखने लायक थी पर वह सॅभल कर बोला — "देखो बिल्ली मैंने पहले भी तुहारी सहायता की है और आज भी करने को तैयार हूॅ। चलो मैं तुमको सात साल और देता हूॅ।" पर बिल्ली को तो जैसे कुछ सुनायी ही नहीं दे रहा था।

शैतान फिर बोला — "बिल्ली देखो मैंने हमेशा ही तुम्हारे परिवार की सहायता की है।"

बिल्ली बीच में ही बोला — "बस बस रहने दो और अब तुम अपनी नाक बनवाने के लिये तैयार हो जाओ।"

निक बोला — "मैं ज़िन्दगी भर तुम्हारे बच्चों का पालन पोषण करूॅगा और उनको दुनियॉ में सबसे बड़ा आदमी बनाऊॅगा चाहे वे बनना चाहें या न चाहें।"

बिल्ली बोला — "और मैं भी तुम्हारी नाक के साथ यही करूॅगा।" कहते हुए अपने हाथ में लिया हुआ गरम चिमटा उसने उसकी नाक से छुआ दिया और उसकी नाक खींच ली।

[31] Judy – name of Billy's wife

चिमटा उसने अपनी पत्नी को दे दिया और उसकी नाक उसने दीवार पर पॉच फुट ऊॅची जगह पर चिपका कर उस पर अपना टोप टॉग दिया।

फिर वह बोला — "अब तुम मुझे उतने ही पैसे दो जितने तुमने मुझे पहले दिये थे और दफा हो जाओ।"

निक बोला — "ठीक है।" और तुरन्त ही उतने ही पैसे बिल्ली के पैरों के पास आ गिरे जितने उसने उसको पहले दिये थे।

बिल्ली ने पैसे उठाये और निक को छोड़ दिया। निक चला गया। बिल्ली एक बार फिर सात साल के लिये अमीर हो गया था और सात साल के बाद फिर गरीब हो गया।

ऐसी ही हालत में फिर एक दिन सुबह बिल्ली खड़ा सोच रहा था कि परिवार के लिये नाश्ते का इन्तजाम कैसे किया जाये कि शैतान फिर उसके पास आया।

अबकी बार शैतान यह सोच रहा था कि वह बिल्ली के सामने कैसे जाये सो उसने एक सोने के सिक्के का रूप रखा और एक ऐसी जगह जा कर बैठ गया जहॉ बिल्ली उसको आसानी से देख सकता था। वह इस ताक में था कि बस बिल्ली एक बार मुझे उठा ले फिर देखता हूॅ मैं उसको।

बिल्ली ने उसे देखा और खुशी खुशी उठा कर उसे अपने बटुए में रख लिया। बटुए में घुसते ही शैतान एक ज़ोर की हॅसी हॅसते हुए बोला — "ओह बिल्ली आखिर आज मैंने तुम्हें पकड़ ही लिया।

अपने सामने पड़ी चीज़ ज़रा सोच समझ कर उठाया करो। इतना लालच भी किस काम का।"

बिल्ली ने एक ज़ोर का ठहाका लगाया और बोला — "अरे बदकिस्मत, तो यह तुम हो? तुम हमेशा ही मेरे जाल में फॅसने के लिये क्यों तैयार बैठे रहते हो?"

शैतान ने बिल्ली के बटुए में से निकलने की लाख कोशिश की पर सब बेकार। निक ने सोचा कि आज वह बैठे बिठाये फिर बिल्ली के जाल में कहॉ से फॅस गया।

निक फिर बोला — "बिल्ली अब तो हम एक दूसरे को अच्छी तरह से जान गये हैं। चलो मैं तुमको सात साल और उतना ही पैसा दूॅगा। मुझे यहॉ से निकालो।"

बिल्ली बोला — "आराम से आराम से, निक आराम से। निक तुम्हें मेरे उस स्ले वाले हथौड़े का वजन तो याद होगा। तुम्हारे लिये उतना ही काफी है।"

निक बोला — "मैं मानता हूॅ कि मैं तुम्हारी टक्कर का नहीं हूॅ। मुझे छोड़ दो मैं तुम्हें दोगुना पैसा दूॅगा। मैं सिक्का बन कर तुमसे तो केवल मजाक कर रहा था।"

बिल्ली बोला — "तो मैं भी तो कुछ मजाक कर लूॅ न।"

निक बोला — "मैं तुम्हारे सामने एक सलाह रखता हूॅ।"

बिल्ली बोला — "कुछ नहीं। मैं तुम्हारी कोई सलाह नहीं सुनने वाला।"

इस बार बिल्ली की पत्नी बोली — "इस पापी की बात भी एक बार सुन लो न कि यह क्या कहना चाहता है।"

शैतान बोला — "तुम जितने चाहोगे मैं तुम्हें उतने पैसे दूँगा, बस इस बार तुम मुझे आजाद कर दो।"

बिल्ली बोला — "तुम मुझे पिछली बार से दोगुने पैसे दे दो और दफ़ा हो जाओ।"

तुरन्त ही उसके सामने सोने के चमकते सिक्कों का ढेर लग गया। बिल्ली ने अपना बटुआ खोला, सोने के वे चमकते सिक्के उसमें डाले और निक को आजाद कर दिया।

बिल्ली की पुरानी आदतें फिर से लौट आयीं। उसके दो लड़के थे। उनमें से एक को विरासत में उसी की आदतें मिलीं थीं, यहाँ तक कि नाम भी।

उसके दूसरे बेटे का नाम जेम्स था। वह बहुत ईमानदार और मेहनती लड़का था। वह अपने पिता को छोड़ गया और उसने अपनी मेहनत से खूब नाम कमाया, खूब पैसा कमाया और फिर कैसिल डाउसन[32] नाम का शहर बसाया।

और फिर एक दिन बिल्ली मर गया। वैसे तो जब कोई आदमी मर जाता है तो उसकी ज़िन्दगी की कहानी उसी के साथ ही खत्म हो जाती है पर बिल्ली के बारे में ऐसा नहीं है। उसकी कहानी आगे भी बढ़ी सो अब हम पढ़ते हैं उसकी आगे की कहानी। X X X X X

[32] Castle Dawson – name of a city

जैसे ही बिल्ली मरा वह सेन्ट मोरोकी के पास गया। यह वही सेन्ट था जिसने बिल्ली को तीन इच्छाओं का वरदान दिया था। वहॉ जा कर उसने धीरे से उसका दरवाजा खटखटाया। सेन्ट मोरोकी ने दरवाजा खोला।

बिल्ली धीरे से बोला — "भगवान आपकी इज़्ज़त बनाये रखे।"

सेन्ट मोरोकी बोले — "जाओ जाओ, तुम्हारे जैसे गरीब के लिये यहॉ कोई जगह नहीं है।"

बिल्ली बहुत थक गया था सो उसको अब आराम चाहिये था। वह चलते चलते एक काले फाटक पर पहुँचा और उसे खटखटाया तो उससे कहा गया कि जब वह अपना नाम बतायेगा तभी उसे अन्दर आने की इजाज़त मिल पायेगी।

बिल्ली बोला — "बिल्ली डाउसन।"

चौकीदार ने अपने साथी से कहा — "तुरन्त जाओ और मालिक को खबर करो कि वह जिससे इतना डरते हैं वही उनके दरवाजे पर खड़ा है।

बिल्ली का पुराना साथी जल्दी जल्दी बाहर निकला और चिल्लाया — "उसको अन्दर मत घुसने देना। फाटक पर ताला लगा दो। क्योंकि अगर वह अन्दर आ गया तो मैं खतरे में पड़ जाऊँगा। और बल्कि फिर इस घर में कोई और भी नहीं बचेगा।"

फिर वह बिल्ली से बोला — "जाओ जाओ, मैं तुम्हें बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। तुम यहाँ अन्दर नहीं आ पाओगे।"

बिल्ली मुस्कुरा कर शैतान से बोला — "ओह तो तुम यहाँ रहते हो। तुम मुझसे डरते हो?"

तुरन्त ही उस शैतान ने बिल्ली की नाक नोच ली और बिल्ली को ऐसा लगा जैसे उसकी नाक उसी लाल गर्म चिमटे से पकड़ ली गयी हो जैसे लाल चिमटे से उसने एक बार निक की नाक पकड़ी थी।

उसके बाद बिल्ली वहाँ से चला तो गया परन्तु हमेशा उसको यही लगता रहा कि उसकी नाक बराबर जल रही है। गर्मी हो या सर्दी, दिन हो या रात, और वह आज तक जल रही है। और उसकी वजह से तभी से वह तड़पता सा इधर से उधर घूमता फिर रहा है।

उसकी दाढ़ी बढ़ कर चिपक गयी है। अपनी नाक को ठंडा करने के लिये आजकल वह भले यात्रियों की नाक लेने के लिये रात को उनको उनके रास्तों से भटका देता है पर अभी तक वह किसी की नाक नहीं ले पाया है।

तुम अपनी नाक संभाल कर रखना कभी तुम कहीं रास्ता भटक जाओ और वह तुम्हारी नाक ले कर रफूचक्कर हो जाये।

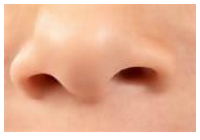

9 रिचर्ड और उसके ताश के पत्ते[33]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा कैनेडा देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन रिचर्ड नाम का एक आदमी एक चर्च के पास से गुजर रहा था। चर्च में होली मास[34] की पूजा हो रही थी सो वह चर्च में अन्दर चला गया और दीवार के पास वाली एक खाली सीट पर जा कर बैठ गया।

वहाँ उसने चर्च की किताब निकालने की बजाय अपनी जेब से अपने ताश के पत्ते निकाल लिये और उनको उलटने पलटने लगा।

उसके पास ही एक सिपाही बैठा हुआ था। उसने इशारों से रिचर्ड को कई बार समझाने की कोशिश की कि या तो वह अपने ताश के पत्ते छोड़ कर चर्च की किताब हाथ में उठा ले और या फिर चर्च छोड़ कर चला जाये क्योंकि चर्च में बैठ कर ताश के पत्ते हाथ में लेना अच्छा नहीं लगता।

पर रिचर्ड ने उसके इशारों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

मास पूजा खत्म होने के बाद चर्च का पादरी और सिपाही दोनों ही रिचर्ड को समझाने के ख्याल से रिचर्ड के पास आये तो रिचर्ड

[33] Richard and His Deck of Cards – a folktale of French Canada, North America

[34] Christians' Holy Mass – a kind of their worship

बोला — "फादर, आप अगर मुझे कुछ बोलने की इजाज़त दें तो मैं कुछ कहूँ।"

पादरी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। ठीक है रिचर्ड, कहो।"

रिचर्ड ने ताश के पत्तों में से एक दुग्गी निकाली और बोला — "यह दुग्गी मेरे लिये बाइबिल के दो टैस्टामैन्ट[35] जैसी है।"

फिर उसने एक तिग्गी निकाली और बोला — "यह तिग्गी मेरे लिये होली ट्रिनिटी[36] के तीन लोगों जैसी है।"

फिर उसने एक चौग्गी निकाली और कहा — "यह चौग्गी मेरे लिये चार इवान्जलिस्ट के जैसी है, और यह पंजा मेरे लिये मोसेस की पॉच किताबों[37] जैसा है।

और यह छक्का भगवान के बनाये वे छह दिन हैं जिनमें उसने आसमान और धरती बनाये। और यह सत्ता उस सातवें दिन को बताता है जिसमें उसने आराम किया। यह अट्ठा उन आठ लोगों को बताता है जो बाढ़ में बच गये थे।

यह नहला नौ बेवफा कोढ़ियों को दिखाता है और यह दहला भगवान के मोसेस को दिये हुए टैन कमान्डमेन्ट्स[38] हैं। यह रानी स्वर्ग की रानी है, और यह राजा वह राजा है जिसकी मैं सेवा करता

[35] There are two Testaments in the Bible – Old Testament and New Testament.

[36] Holy Trinity – God, Father, and Holy Spirit

[37] Moses has written five books, he is referring to here

[38] Ten Commandments – Moses got them directly from God

हूँ। और यह इक्का वह एक भगवान है जिसकी मैं पूजा करता हूँ।"

पादरी बोला — "पर रिचर्ड तुम गुलाम को तो भूल ही गये।"

रिचर्ड बोला — "नहीं फादर, मैं गुलाम को भूला नहीं हूँ। उसको तो मैं भूल ही नहीं सकता। असल में उसको तो सबसे बाद में ही आना था। वह गुलाम मुझ जैसा बेवकूफ है और साथ में इस सिपाही जैसा भी।"

इतना कह कर रिचर्ड चर्च के बाहर चला गया और पादरी उसको देखता ही रह गया।

10 गरट्रूड की चिड़िया[39]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा यूरोप के नौर्स देशों[40] के नौर्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह उन दिनों की बात है जब अपने मालिक[41] और सेन्ट पीटर धरती पर घूमा करते थे। घूमते घूमते वे एक दिन एक बुढ़िया के घर आये जिसके सिर के बाल लाल थे। उस बुढ़िया का नाम गरट्रूड था।

वे बहुत देर से घूम रहे थे सो वे बहुत थके हुए थे और भूखे भी थे। उन्होंने उससे अपनी भूख मिटाने के लिये उस बुढ़िया से बैनौक[42] मॉगा तो उसने थोड़ा सा आटा लिया और उसको मल कर बेला तो वह तो बढ़ता ही बढ़ता ही गया और बहुत बढ़ गया।

उसने सोचा कि वह तो उन दोनों के लिये बहुत बड़ा बैनौक था इतना बड़ा बैनौक तो उसे उनको देना नहीं चाहिये सो उसने फिर और बहुत ही थोड़ा सा आटा लिया और जब उसको बेला तो वह

---

[39] Gertrude's Bird – a folktale from Norway, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/authors/asbjornsenmoe/gertrudesbird.html
by Peter Christen Asbornsen and Jorgrn Moe.
[Its similar folktale is "The Baker's daughter" (Baker Ki Beti) told and heard in England. It is given in the book "Britain Ki Lok Kathayen-2" by Sushma Gupta in Hindi language.

[h] Norse countries are five countries situated in far North Europe – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden

[41] Translated for the words "Our Lord"

[42] Bannock - Bannock is a variety of flat quick bread or any large, round article baked or cooked from grain. When a round bannock is cut into wedges, the wedges are often called scones.

भी उतना ही बड़ा हो गया। उसने सोचा कि यह बैनौक भी वह उनको नहीं देगी क्योंकि यह भी इनके लिये बहुत बड़ा है।

उसने फिर तीसरी बार आटा लिया। अबकी बार वह आटा इतना कम था कि कोई दूसरा उसको देख भी नहीं सकता था। पर इसके साथ भी वही हुआ जो पहले दो आटों के साथ हुआ था। यह भी बढ़ कर बहुत बड़ा हो गया।

आखिर थक हार कर गरट्रूड बोली — "अफसोस मैं तुमको कुछ नहीं दे सकती। तुमको बिना बैनौक के ही जाना पड़ेगा क्योंकि ये सारे बैनौक बहुत बड़े बड़े हैं।"

यह सुन कर मालिक का गुस्सा बढ़ गया। वह बोले — "क्योंकि तुम मुझे प्यार नहीं करती, तुम मेरे एक एक कौर पर लालच करती हो, तुमको इसकी सजा जरूर मिलेगी।

तुम एक चिड़िया बन जाओगी और अपना खाना पेड़ की छाल और उसके तने के बीच में ढूँढोगी। और तुमको सिवाय बारिश के और कभी पानी नहीं मिलेगा।"

उन्होंने अपना आखिरी शब्द कहा ही था कि वह बुढ़िया एक काली कठफोड़वा में बदल गयी और अपनी रसोईघर की चिमनी से बाहर की तरफ उड़ गयी।

तुम उसे आज तक उड़ता हुआ देख सकते हो। उसके सिर पर अभी भी लाल बाल हैं और उसका सारा शरीर काला है। क्योंकि

वह चिमनी से हो कर उड़ी थी इसलिये उसके सारे शरीर पर चिमनी की कालिख लग गयी है।

मालिक के कहे अनुसार अब वह अपना खाना पेड़ की छाल और उसके तने के बीच में से ढूँढती रहती है। इसके लिये वह हमेशा वहाँ अपनी चोंच से टप टप करती रहती है।

जब बारिश आती है तो वह सीटी बजाती है क्योंकि वह हमेशा प्यासी रहती है और अपनी प्यास बुझाने के लिये पानी की एक एक बूँद का इन्तजार करती रहती है।

11 बीयर और रोटी[43]

ईसाई धर्म की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये रूस की लोक कथाओं से ली है।

एक राज्य के किसी प्रान्त में एक अमीर किसान रहता था। उसके पास पैसा भी बहुत था और खाना भी बहुत था। वह अपने गॉव के गरीब किसानों को पैसा उधार पर देता था।

और अगर वह अनाज उधार देता था तो वह उसको अगली गर्मियों में पूरा वापस ले लेता था। इसके अलावा उधार लेने वाले को हर तीन पैक[44] पर दो दिन मालिक के खेतों पर काम करना होता था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि चर्च में कोई त्यौहार था सो उस त्यौहार के लिये सारे किसान बीयर[45] बना रहे थे पर उस गॉव में एक किसान ऐसा भी था जो इतना गरीब था कि उसके जितना गरीब वहॉ कोई और गरीब नहीं था।

उस त्यौहार के पहले दिन शाम को वह अपनी पत्नी के साथ अपने छोटे से घर में बैठा हुआ था। वह सोच रहा था "मैं क्या

[43] Beer and Bread – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. Hindi translation of the stories of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[44] Peck is an Imperial and United States customary unit of dry volume, means two dry gallons or four dry quarts. Four pecks (eight gallons) make a Bushel.

[45] Beer is a light liqor.

करूँ। सारे भले लोग त्यौहार मनाने की तैयारी में लगे हुए हैं और हमारे घर में रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं है।

मैं अमीर आदमी के पास जा सकता हूँ और उससे कुछ उधार ले सकता हूँ पर वह मेरा विश्वास ही नहीं करेगा। सो अब मैं करूँ क्या। मैं तो दिखने में भी बहुत ही गरीब लगता हूँ।"

वह सोचता रहा सोचता रहा फिर अपनी बैन्च से उठा और क्राइस्ट की मूर्ति के सामने जा कर खड़ा हो गया। उसने एक बहुत लम्बी साँस भरी और बोला — "लौर्ड[46] मेरे पापों को माफ करो। क्योंकि मैं तुम्हारे त्यौहार पर तुम्हारी मूर्ति के सामने दिया जलाने के लिये कोई तेल भी नहीं खरीद सकता।"

यह प्रार्थना कर के वह अपनी बैन्च पर आ कर बैठ गया। कुछ देर बाद ही उसके घर एक बूढ़ा आया और बोला — "ओ मास्टर क्या मैं आज की रात यहाँ ठहर सकता हूँ?"

गरीब किसान बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तुम यहाँ आज की रात बिल्कुल ठहर सकते हो पर मेरे घर में रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं है इसलिये मैं तुम्हें कोई खाना नहीं खिला सकता।"

बूढ़ा बोला — "कोई बात नहीं मास्टर। मेरे पास रोटी के तीन टुकड़े हैं और थोड़ा सा माँस है। मुझे बस एक चमचा पानी चाहिये।

[46] Lord means Jesus Christ.

मैं रोटी का एक टुकड़ा खा कर उसके ऊपर से पानी पी लूँगा। हम लोगों का पेट भर जायेगा।"

सो वह बूढ़ा बैन्च पर बैठ गया और गरीब किसान से बोला — "मास्टर आप इतने दुखी क्यों हैं? किस बात ने आपको इतना दुखी कर रखा है?"

मास्टर बोला — "मैं दुखी क्यों न होऊँ बाबा। यह त्यौहार तो भगवान की कृपा है। हम लोग इस त्यौहार के लिये इन्तजार करते रहते हैं।

सब भले लोग खुश हैं और खुशियाँ मना रहे हैं पर हमारा घर बिल्कुल साफ पड़ा है। झाड़ू लगी हुई है। मेरे अन्दर और मेरे चारों ओर केवल एक खालीपन है।"

"कोई बात नहीं अब आप खुश हो जायें। आप अमीर किसान के पास जायें और उससे जो आपको चाहिये वह उधार माँग लाइये।"

गरीब किसान बोला — "नहीं मैं उसके पास नहीं जा सकता। वह मुझे कुछ नहीं देगा।"

बूढ़े ने उससे जिद की — "आप जाइये तो सही। आप उससे तीन पैक माल्ट[47] ले आइये और फिर हम उससे बीयर बनायेंगे।"

[47] Malt is the germinated seed of some grain, normally of barley which is germinated first the its germination process is stopped to make its malt drink. This process is called Malting.

गरीब किसान बोला — "पर अब तो बहुत देर हो चुकी है हम अब बीयर कैसे बनायेंगे। त्यौहार तो कल ही है।"

बूढ़ा बोला — "जैसा मैं कहता हूँ आप वैसा करें। आप अमीर किसान के पास जाइये और उससे तीन पैक माल्ट ले आइये। वह आपको वह एकदम ही दे देगा। वह आपको मना कर ही नहीं सकता। कल आपको उसकी बीयर मिल जायेगी – इतनी बढ़िया बीयर कि वैसी बीयर आपको अपने सारे गॉव में नहीं मिलेगी।"

अब वह गरीब किसान बेचारा क्या कहता। वह उठा अपना एक थैला लिया और उस अमीर किसान के पास चला गया। वह उस अमीर आदमी के घर पहुँचा।

उसने उसको सिर झुकाया और उसको अपना और अपने पिता का नाम बताया। फिर उसने उससे तीन पैक माल्ट यह कह कर उधार मॉगा कि वह उससे कल के लिये बीयर बनायेगा।

अमीर किसान बोला — "तुमने इससे पहले इस बारे में क्यों नहीं सोचा? अब तुम यह कैसे करोगे क्योंकि यह तो त्यौहार की शाम है। इतनी देर में तुम्हारी बीयर कैसे बनेगी?"

गरीब किसान बोला — "कोई बात नहीं साहब। अगर आप मुझे यह माल्ट दे देंगे तो मैं और मेरी पत्नी दोनों मिल कर कुछ न कुछ तो बना ही लेंगे। साथ साथ पी लेंगे और त्यौहार मना लेंगे।"

अमीर किसान ने तीन पैक माल्ट निकाली और उसके थैले में डाल दी। गरीब किसान ने वह थैला अपने कन्धे पर रखा और

अपने घर चला गया। फिर वह उन घटनाओं के ऊपर विचार करने लगा कि यह सब कैसे कैसे हुआ था।

बूढ़ा बोला — "अब मास्टर आप दावत खायेंगे। क्या आपके घर के पास कोई कुँआ है?"

किसान बोला — "हॉ है।"

"तो अब हम कुँए पर जायेंगे और वहॉ पर बीयर बनायेंगे। आप अपना थैला उठाइये और मेरे पीछे पीछे आइये।"

सो वे लोग ऑगन में बने हुए कुँए के पास गये तो बूढ़ा बोला — "अब इस माल्ट को सारा का सारा इस कुँए में पलट दीजिये।"

मास्टर बोला — "हम इतनी अच्छी चीज़ को इस कुँए में क्यों पलटें? यह तो केवल तीन पैक है और यह तो उसमें पड़ कर बेकार हो जायेगी।"

बूढ़ा बोला — "अगर आपको बढ़िया बीयर पीनी है तो बस यही एक काम है जो आप कर सकते हैं।"

गरीब किसान बोला — "यह हम कोई अच्छा काम नहीं कर रहे हैं बाबा। हम कुँए के पानी को केवल खराब कर रहे हैं।"

बूढ़ा बोला — "आप बस मेरी सुनिये और जो मैं कह रहा हूँ वही कीजिये। डरने की कोई बात नहीं है।"

अब वह क्या करे। उसको उस बूढ़े के कहे अनुसार अपनी सारा माल्ट उस कुँए में फेंकना पड़ा।

बूढ़ा बोला — "पहले तो इस कुँए में पानी था पर कल को आप देखियेगा कि यही पानी बीयर बन जायेगा। अब हम लोग घर जा कर सो जायेंगे। क्योंकि सुबह तो हमेशा ही शाम से ज़्यादा अक्लमन्द होती है। अब कल आप इसमें इतनी बढ़िया बीयर पायेंगे कि उसका केवल एक गिलास ही आपको नशा ला देगा।"

सो उन लोगों ने सुबह तक इन्तजार किया। अगले दिन जब खाने का समय आया तो बूढ़े ने कहा— "अब आप जितने चाहें उतने बैरल इकट्ठा कर लें और उनको कुँए के चारों तरफ रख लें। और फिर उन सबको बीयर से भर लें और सबको बुला बुला कर बीयर पिलायें। इस तरह से आप बढ़िया तरीके से त्यौहार मना पायेंगे।"

सो वह गरीब किसान अपने बहुत सारे पड़ोसियों के पास गया और उनके पास से बैरल इकट्ठे कर के लाया तो सबने उससे पूछा — "अरे तुम इतने सारे बैरल और बालटियों का क्या करोगे?"

गरीब किसान बोला — "ओह मुझे वे तुरन्त ही चाहिये क्योंकि मेरे अपने पास बीयर रखने के लिये काफी बर्तन नहीं हैं।"

यह सुन कर उसके सारे पड़ोसी खुसपुस करने लगे कि इसके यह कहने का मतलब क्या है। क्या यह अच्छा खासा आदमी पागल हो गया है? इसके घर में रोटी का एक टुकड़ा तक तो है नहीं और यह बीयर की बात कर रहा है।

खैर किसी तरह से उसने बीस बैरल और बालटियॉ इकट्ठी कर लीं। उन सबको कुँए के पास रख कर उन्हें कुँए की बीयर से भर लिया। वह बीयर तो इतनी बढ़िया बनी थी कि कोई भी बीयर ऐसी बीयर होगी ऐसा सोच भी नहीं सकता था।

उसने बैरल ऊपर तक भर रखे थे पर कुँआ फिर भी भरे का भरा था। उसने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया — "आओ अच्छे ईसाइयो मेरे पास आओ और आ कर अच्छी तेज़ बीयर पियो ऐसी बीयर तुम लोगों ने कभी ज़िन्दगी में नहीं पी होगी।"

लोगों ने इधर उधर देखा। यह वह क्या कर रहा है। यकीनन कुँए से पानी तो हर कोई निकाल सकता है पर यह तो उसे बीयर कह रहा है। खैर चलो चल कर देखते हैं कि वह हमारे साथ क्या मजाक कर रहा है।

सो वे सब उन बैरलों की तरफ दौड़ पड़े और उनमें से बीयर निकाल निकाल कर उसे देखने लगे। यकीनन यह बीयर ही होगी सोच कर वे उसे पीने लगे।

तुरन्त ही उनके मुँह से निकला — "अरे इतनी बढ़िया बीयर तो हमने आज तक कभी पी ही नहीं।'

उसके ऑगन में तो भीड़ लग गयी। गॉव के सारे लोग वहॉ बीयर पीने आ गये। मास्टर का इसमें कोई नुकसान नहीं था। वह तो कुँए में से खींच खींच कर सारे गॉव को खूब बीयर पिला रहा था।

अमीर किसान ने जब यह सुना तो वह भी उस गरीब किसान के घर के ऑगन में आया। उसने भी बीयर पी तो गरीब किसान से पूछा — "तुमने इतनी बढ़िया बीयर कैसे बनायी?"

गरीब किसान बोला — "जनाब इसमें मेरी कोई खासियत नहीं है। यह तो दुनियॉ का सबसे आसान काम है। जब मैं आपसे तीन पैक माल्ट ले कर घर गया तो वह सारा माल्ट मैंने कुॅए में डाल दिया। उस समय तक यह पानी था। आज सुबह तक इसकी बीयर बन गयी।"

अमीर किसान ने सोचा "हूॅ। मैं भी अपने घर जा कर ऐसा ही कुछ करूॅगा।"

वह तुरन्त ही घर गया और अपने नौकरों को बुला कर उनसे कहा — "अनाजघर से मेरा सबसे बढ़िया वाला माल्ट निकालो और उसे कुॅए में डाल दो।"

यह सुन कर उन्होंने उसके दस बोरे माल्ट उसके कुॅए में फेंक दिये। अमीर किसान ने हाथ मलते हुए कहा — "मैं अब उस गरीब आदमी से ज़्यादा अच्छी बीयर पा सकूॅगा।"

सो अगली बार जब वह कुॅए तक गया और उसका पानी चखा तो वह तो पहले भी पानी था और अभी भी पानी था। बल्कि पहले पानी से ज़्यादा गन्दा था।

"मेरी समझ में तो यह बिल्कुल ही नहीं आ रहा कि यह सब क्या है। मुझे लगता है कि मैंने इसके अन्दर शायद बहुत ही कम माल्ट डाला था मुझे और ज़्यादा माल्ट डालना चाहिये था।"

सो उसने अपने नौकरों से पॉच बोरे भर कर माल्ट और डलवा दिया।

अब उस कुँए में बहुत सारा माल्ट था पर यह भी ठीक नहीं था। उसका सारा माल्ट बिल्कुल ही बेकार गया। जब त्यौहार खत्म हो गया तो गरीब किसान के कुँए का पानी फिर से साफ पानी बन गया जैसे त्यौहार से पहले था। जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

एक बार फिर वह बूढ़ा गरीब किसान के पास आया और उससे पूछा — "मास्टर क्या आपने इस साल मक्का बोयी है?"

"नहीं बाबा। मैंने तो एक दाना भी नहीं बोया।"

बूढ़ा बोला — "तो एक बार फिर आप अमीर किसान के घर जाइये और उससे तीन तीन पैक हर तरह का अनाज मॉगिये। हम लोग खेतों पर खाना खायेंगे और वह अनाज बोयेंगे।"

गरीब किसान बोला — "अब हम अनाज कैसे बोयेंगे। अब तो जाड़े भी आधे गुजर चुके हैं। बर्फ टूट रही है।"

बूढ़ा बोला — "आप उसकी चिन्ता छोड़िये। आप जाइये और वैसा ही कीजिये जैसा कि मैं कहता हूँ। मैंने आपके लिये बीयर बनायी थी अब मैं आपके लिये अनाज बोऊँगा।"

सो गरीब किसान एक बार और अमीर किसान के घर गया और उससे उसको तीन तीन पैक हर तरह का अनाज देने के लिये कहा। वह अनाज ला कर उसने अपने बूढ़े मेहमान को दे दिया "लो बाबा यह लो।"

उस अनाज को ले कर वे खेतों में चले गये और वहॉ जा कर उन्होंने उनको बोने की बजाय खेत में इधर उधर फेंक दिया। लो देखो उन्होंने तो यह सारा अनाज बर्फ में डाला था – एक एक दाना उसका बर्फ में था।

बूढ़े ने कहा — "मालिक अब आप अपने घर जायें और गर्मियॉ आने तक इन्तजार करें आपके घर में रोटी ही रोटी हो जायेगी।"

गरीब किसान अपने घर चला गया। गॉव के सारे लोग उस पर इस तरीके से अनाज बोने पर हॅस रहे थे — "ज़रा देखो तो। यह कितना बड़ा बेवकूफ है। यह तो यह भी भूल गया कि अनाज कब बोना चाहिये। इसने पतझड़ के मौसम में बोने के लिये नहीं सोचा।"

उसने उन लोगों की बात सुनी अनसुनी कर दी। उसने वसन्त का इन्तजार किया फिर गर्म दिन आये। बर्फ पिघलना शुरू हो गयी और अनाज के दानों में से कल्ले फूटने लगे।

गरीब किसान बोला — "आओ और देखो। अब मैं जा कर देखता हूॅ कि मेरा खेत कैसा दिखायी देता है।"

सो वह अपने खेतों पर गया और उसने वहॉ अनाज की बहुत ही शानदार पत्तियॉ देखीं जिनको देख कर किसी का भी दिल खुश हो सकता था। दूसरे लोगों के खेतों पर इससे आधी अच्छी भी फसल नहीं थी।

गरीब किसान के मुॅह से निकला — "भगवान की जय हो। अब मैं अपना सिर ऊपर उठा सकता हूॅ।"

जल्दी ही फसल काटने का मौसम आया। सारे किसान अपना अपना खेत काट कर अपना अपना अनाज इकट्ठा करने लगे। बूढ़ा भी वहॉ गया और अनाज काटने में लग गया।

उसने अपनी पत्नी को भी अपने काम में सहायता करने के लिये बुलाया। पर वह तो उस खेत के अन्दर घुस ही नहीं सका। उसने बहुत सारे छोटे छोटे किसानों को अपनी फसल काटने के लिये वहॉ बुलाया। इसके बदले में उसने उनको अपना आधा अनाज देने का वायदा किया।

सारे लोग उस गरीब किसान का खेत देख देख कर आश्चर्य कर रहे थे क्योंकि उसने तो अनाज बोया भी नहीं था बल्कि जाड़े में ऐसे ही बीज बिखेर दिये थे और अब उसका अनाज तो बहुत ही शानदार हुआ था।

अब उस गरीब किसान ने अपना घर ठीक से चलाया और वह अब बिना किसी तकलीफ के रहा। जो कुछ भी उसको अपने घर के लिये चाहिये था उसको रख कर बाकी का बचा अनाज वह

बाजार जा कर बेच आया। उस अनाज के बेचने से उसको जो पैसे मिले वह उस पैसे से घर की जरूरत की दूसरी चीज़ें खरीद लाया।

अब उसने अपना उधार भी पूरा उतार दिया था।

अमीर किसान ने सोचना शुरू किया "हे हो। अबकी बार मैं भी जाड़े में अपना बीज बोऊँगा। हो सकता है कि मुझे भी इतनी बढ़िया फसल मिल जाये।"

इस बीच उसने जाड़े का इन्तजार किया और जब जाड़ा आया तो जिस दिन उस गरीब किसान ने अपने दाने बोये थे उसने भी अपने अनाज के दाने अपने सारे खेत में बिखेर दिये। उसने उनसे अपना खेत पूरी तरह से भर दिया। पर उसी रात को एक तूफान आया बहुत तेज़ हवाऐं चलीं जिन्होंने उसके अनाज को दूसरे किसानों के खेतों में फेंक दिया।

उसके बाद सुन्दर वसन्त आया तो वह अमीर किसान अपने खेत देखने गया। वहॉ उसने देखा कि उसके खेत तो नंगे पड़े हुए हैं। वहॉ तो एक पत्ता भी दिखायी नहीं दे रहा था और दूसरे खेतों पर जहॉ किसी ने कोई हल नहीं चलाया था और बीज भी नहीं बोये थे वहॉ हरियाली दिखायी दे रही थी।

अमीर किसान ने फिर सोचना शुरू किया "ओ लौर्ड मैंने अनाज पर कितना पैसा खर्च किया पर वह सब बेकार गया और जो लोग मुझसे उधार ले गये जिन्होंने न अपने खेत में हल चलाया न बीज

बोया उनका अनाज अपने आप ही उग गया। ओह लौर्ड मैं जरूर ही पापी हूँ।"

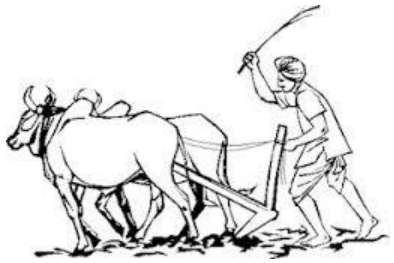

12 जेरुसलेम की यात्रा[48]

यह लोक कथा भी रूस की लोक कथाओं से से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक आर्चबिशप[49] सुबह को अपनी सवेरे की पूजा के लिये उठा तो हाथ धोते समय उसको पानी में एक अपवित्र आत्मा नजर आ गयी। उसने उसको पकड़ लिया और उसको कास कर दिया।

शैतान ने उससे प्रार्थना की कि वह उसको छोड़ दे वह उसके लिये कुछ भी करेगा। कुछ भी।

आर्चबिशप बोला — "क्या तुम मुझे हाई मास और सुबह की पूजा के बीच में जेरुसलेम ले चलोगे?"

वह बोला — "जी हॉ।"

आर्चबिशप ने उसको छोड़ दिया तो वह जब सुबह की पूजा खत्म हो गयी तो वह उसको पिछले समय में हाई मास के लिये जेरुसलेम ले गया। और फिर हाई मास के लिये वापस वर्तमान समय में ले आया।

---

[48] Journey to Jerusalem – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. Hindi translation of the stories of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[49] An Archbishop is a senior position in Church.

लोगों ने पूछा कि यह सब कैसे हुआ। कैसे वह इतनी जल्दी जेरुसलेम चला भी गया और वापस भी आ गया। तो उसने उनको सारी कहानी सुना दी।

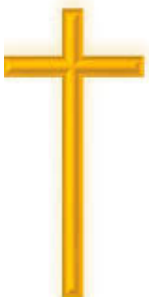

13 धर्मदूत ऐलाइजा और सेंट निकोलस[50]

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि रूस के एक गॉव में एक किसान रहता था। वह हमेशा ही सेंट निकोलस का दिन मनाता था पर सेंट ऐलियास का कभी नहीं, कभी भी नहीं। उस दिन वह उसके सामने एक प्रार्थना पढ़ता एक मोमबत्ती जलाता पर वह ऐलाइजा का विचार अपने मन में भी नहीं लाता।

एक दिन सेंट ऐलाइजा और सेंट निकोलस उस किसान के खेतों में घूम रहे थे। वे साथ साथ चल रहे थे और चारों तरफ देखते जा रहे थे। खेत में मक्का के भुट्टे बहुत बड़े बड़े हो रहे थे। वे बहुत भरे हुए भी थे कि उनको देख कर ही बहुत अच्छा लगता था।

चलते चलते सेंट निकोलस बोले — "यह कितनी अच्छी पैदावार होगी। हॉ यह किसान एक बहुत ही बढ़िया आदमी है। एक अच्छा और बहादुर किसान। एक अच्छे से रहने वाला किसान। यह भगवान को याद करता है और पवित्र सन्तों की इज़्ज़त करता है। यह जिस किसी चीज़ को छुएगा वह बढ़ जायेगी।

---

[50] Elijah the Prophet and St Nicholas – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. Hindi translation of the stories of this book is available from : hindifolktales@gmail.com
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales

सेंट ऐलाइजा बोले — "चलो देखते हैं। क्या वहाँ भी इतना ही होगा। मेरी बिजली इसका खेत जला देगी और ओले इसकी पैदावार को बर्बाद कर देंगे। तब तुम्हारा यह किसान ठीक बातें सीखेगा और मेरा दिन याद रखेगा।"

दोनों इस तरह की बातें करते और आपस में बहस करते चलते रहे और फिर दोनों ने अपने अपने तरीके इस्तेमाल करने का फैसला किया।

सेंट निकोलस तुरन्त ही उस किसान के पास गये और उससे बोला — "तुम्हारी जो मक्का की फसल तैयार खड़ी है तुम उसको पोप सेंट ऐलियास को बेच दो वरना उसमें एक घास का पत्ता भी नहीं बचेगा। यह सारा खेत ओलों से बर्बाद हो जायेगा।"

किसान तुरन्त ही पोप के पास दौड़ा गया और बोला — "ओ बाबा। मेरी मक्का की फसल तैयार खड़ी है। क्या आप उसे खरीदेंगे। मैं आपको अपना सारा खेत बेच दूँगा। फादर[51] मैं आपको अपनी फसल सस्ते में दे दूँगा। बस आप खरीद लीजिये।"

पहले तो वे आपस में बहस करते रहे फिर उनमें सौदा पक्का हो गया। किसान ने अपनी फसल बेच दी फादर ने खरीद ली किसान ने अपने पैसे लिये और अपने घर चला गया।

धीरे धीरे समय बीतता गया। समय थोड़ा बीता या ज़्यादा बीता कि एक दिन काले काले बिजली वाले बादल घिर आये। किसान के

[51] Father is a Rank in Christian Church

खेत पर बहुत डरावनी बिजली चमकी बड़ा बड़ा ओला पड़ा जिसने किसान की पैदावार को काफी बर्बाद कर दिया और घास का एक पत्ता तक उसमें नहीं छोड़ा जो उसकी कहानी बता सके।

अगले दिन सेंट ऐलाइजा और सेंट निकोलस घूम रहे थे तो सेंट ऐलाइजा बोले — "देखो कल मैंने इस किसान का खेत किस तरीके से बर्बाद कर दिया।"

सेंट निकोलस बोले — "क्या कहा किसान का खेत? नहीं मेरे भाई नहीं। तुमने अपना काम ठीक से नहीं किया। यह खेत तो अब पोप सेंट ऐलियास का है किसान का नहीं।"

"क्या उस पोप का?"

"हॉ। एक हफ्ते पहले किसान ने अपना खेत पोप को बेच दिया था और उससे उसके पैसे ले लिये थे। अब पोप अपने इस बिखरे हुए दूध पर रो रहा है।[52]

सेंट ऐलाइजा बोले — "यह नहीं होगा। मैं यह खेत फिर से उगा दूँगा। यह उतना ही अच्छा हो जायेगा जितना पहले था।"

इसी तरह से बात करते करते वे वहॉ से चले गये। सेंट निकोलस फिर से किसान के पास गये और कहा — "तुम पोप से जा कर दोबारा मिलो और उससे अपना खेत वापस ले लो। तुम्हें इसमें कोई नुकसान नहीं होगा।"

[52] There is an idiom in English "Crying over spilt milk". This is its Hindi translation. The same is said in Hindi "Ab Pachhtaye Hot Kya Jab Chidiyan Chug Gayin Khet."

किसान पोप के पास गया और बोला — "लौर्ड ने आपको बहुत बुरी तरह से दुखी किया है। ओलों से आपके खेत की फसल खराब हो गयी है। आपका खेत ऐसा हो गया है जैसा कि कोई लकड़ी का तख्ता।

आइये इसकी कीमत हम दोनों ही बॉट लेते हैं। मैं अपना खेत ले लेता हूँ और आपके नुकसान की भरपाई करने के लिये आपके दिये हुए पैसों में से आधा पैसा आपको वापस दे देता हूँ।"

पोप तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया और इस बात पर राजी हो गया। दोनों ने आपस में हाथ मिलाये और सौदा हो गया।

इस बीच किसी तरह से किसान का खेत पता नहीं कैसे फिर वैसे का वैसा ही हो गया। पुरानी जड़ों में से नयी जड़ें निकल आयीं।

उन पर बारिश पड़ गयी और ताजा तन्दुरुस्त मक्का की फसल बढ़ कर तैयार हो गयी। अब उसमें एक भी जंगली घास नहीं थी। मक्का के भुट्टे भी इतने भारी थे कि वे जमीन पर झुके जा रहे थे।

सूरज उनको धूप दे रहा था तो वह खेत हवा के बहने से ऐसा लगता था कि जैसे सोना हिल रहा हो। किसान ने अपनी सारी फसल काट ली और उसके गट्ठर बना लिये। फिर वह उनको अपने घर ले गया और उनको सँभाल कर रख दिया।

तभी सेंट ऐलाइजा और सेंट निकोलस एक बार फिर से घूम रहे थे। ऐलाइजा ने उस खेत की तरफ देखा और बोला — "ज़रा देखो

तो निकोलस। मैंने कितना अच्छा काम किया है। मैंने उसका खेत फिर से हरा भरा कर दिया है। यह पोप को मेरा इनाम है जिसको वह ज़िन्दगी भर नहीं भूलेगा।"

सेन्ट निकोलस बोला — "क्या कहा पोप को? नहीं भाई नहीं। यह बहुत बड़ा वरदान तो है पर यह खेत तो किसान का है। पोप का तो इसमें एक डंडा भी नहीं है।"

"क्या आ आ?"

"यह सच है। जब यह खेत ओलों से बर्बाद हो गया तो किसान पोप के पास गया और उसने उसे उससे आधे पैसे में खरीद लिया।"

धर्मदूत ऐलाइजा बोले — "रुको रुको एक मिनट रुको। मैं इसमें से सारा सामान निकाले लेता हूँ। यह किसान अपने इतने सारे गट्ठरों में से एक बार में छह गैलन से ज़्यादा मक्का नहीं निकाल पायेगा।"

सेन्ट निकोलस ने सोचा "यह तो बड़ी खराब बात है।"

वह तुरन्त ही किसान के पास गया और बोला — "देखो जब तुम भुट्टे में से मक्का निकालो तो एक बार में केवल एक ही पेड़ लेना इससे ज़्यादा नहीं और उसे धरती पर मारना।"

सो जब किसान अपनी मक्का निकालने के लिये तैयार हुआ तो उसने एक बार में एक पेड़ से छह गैलन मक्का निकाल ली।

उसके अनाज के सारे भंडारघर मक्का से भर गये थे और अभी भी काफी मक्का निकालने के लिये पड़ी थी।

एक दिन धर्मदूत ऐलाइजा और सेंट निकोलस किसान के घर के ऑगन के सामने से गुजर रहे थे कि ऐलाइजा ने इधर उधर देखा तो पूछा — "इसने ये इतने सारे अनाजघर क्यों बनवाये हैं? वह इन सबको कैसे भरेगा?"

सेंट निकोलस बोले — "पर ये तो पहले से ही भरे हुए हैं।"

"इसको इतना सारा अन्न कहॉ से मिला?"

"हर पेड़ ने उसको छह गैलन अन्न दिया। और जैसे जैसे उसने पेड़ में से मक्का निकालनी शुरू की वह और पेड़ लाता गया।"

ऐलाइजा ने अन्दाजा लगाया "ओह मेरे भाई निकोलस तुमने ही उससे जा कर यह सब कहा होगा कि उसको क्या करना चाहिये।"

सेंट निकोलस बोले — "मैंने यह सब सोच लिया था और मैं यह कहने जा ही रहा था कि....।

ऐलाइजा बोले — "आखिर तुम्हारा इरादा क्या है। यह सब तुम्हारा काम है। कोई बात नहीं तुम्हारा किसान मुझे अभी याद रखेगा।"

सेंट निकोलस ने पूछा — "अब तुम क्या करोगे?"

ऐलाइजा बोले — "इस बार मैं तुमको नहीं बताऊॅगा।"

सेंट निकोलस बोले — "कोई बात नहीं अगर किसी का बुरा होना है तो वह तो हो कर ही रहेगा।"

निकोलस बहुत देर तक सोचता रहा फिर वह फिर से किसान के पास गया। उसने उससे दो मोमबत्तियॉ खरीदने के लिये कहा –

एक बड़ी और एक छोटी। और उसे बताया कि उसे क्या करना है।

अगले दिन धर्मदूत ऐलाइजा और सेंट निकोलस खानाबदोशों के रूप में साथ साथ घूम रहे थे कि उनको किसान मिल गया। उसके हाथ में दो मोमबत्तियॉ थीं एक बड़ी जिसकी कीमत एक रूबल थी और एक छोटी जिसकी कीमत एक कोपैक थी।[53]

सेंट निकोलस ने उससे पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

किसान बोला — "मैं यह बड़ी वाली मोमबत्ती धर्मदूत ऐलाइजा के लिये जलाने के लिये ले जा रहा हूॅ। उसने मुझे बहुत कुछ दिया है। मेरे खेत में कितना ओला गिरा। वह बीच में आया बाबा, और फिर उसने मुझे दोगुनी फसल दी।"

"और यह छोटी वाली किसके लिये है?"

"ओह यह सेंट निकोलस के लिये है।" यह कह कर वह अपने रास्ते चला गया।

उसके जाने के बाद सेंट निकोलस ऐलाइजा से बोले — "अब देखो ऐलाइजा। तुमने कहा था कि "मैंने किसान को सब कुछ दे दिया।" पर अब तुम देखो कि सच क्या है।"

और इसके बाद ही झगड़ा खत्म हो गया। धर्मदूत ऐलाइजा ने सेन्ट निकोलस से दोस्ती कर ली और किसान के खेत में ओले

[53] Rouble and Kopek are the currencies of Russia as Dollar and Cent are for USA.

बरसाना बन्द कर दिया। उसके बाद वह किसान खुशी खुशी रहने लगा। अब वह दोनों के नाम दिन याद से मनाता था।

14 काइस्ट का भाई[54]

एक बूढ़ा मरने वाला हो रहा था तो वह अपने बेटे को समझा रहा था कि "बेटा गरीब लोगों को भूलना नहीं।" इसके बाद वह मर गया।

जब ईस्टर आया तो वह लड़का चर्च गया। अपने साथ वह कुछ अच्छे अंडे भी ले गया जिनको वह अपने गरीब भाइयों को दे देता। हालॉकि उसकी मॉ उसकी इस बात से उससे बहुत नाराज थी क्योंकि वह एक नीच दिमाग की स्त्री थी और गरीबों की बिल्कुल सहायता नहीं करती थी।

जब वह चर्च पहुॅचा तो उसके पास केवल एक ही अंडा रह गया था और वहॉ एक ही गन्दा सा बूढ़ा था। वह लड़का उसको उसका उपवास[55] तोड़ने के लिये अपने घर ले गया।

जब उसकी मॉ ने अपने बेटे को एक गरीब के साथ आते देखा तो वह बहुत नाराज हुई। वह गुस्से से बोली — "इस गन्दे बूढ़े के साथ उपवास तोड़ने से तो किसी कुत्ते के साथ उपवास तोड़ना ज़्यादा अच्छा है।" और उसने उसके साथ अपना उपवास नहीं तोड़ा। सो

[54] The Brother of Christ – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. Hindi translation of the stories of this book is available at : hindifolktales@gmail.com
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales
[55] Translated for the word "Fast"

बेटे और उस बूढ़े ने अपने उपवास एक साथ तोड़े और वे बाहर घूमने चले गये।

उस समय बेटे ने देखा कि बूढ़े की पोशाक तो बहुत खराब और मैली हो रही है पर जो क्रास उसके गले में लटक रहा था वह बहुत ज़ोर से चमक रहा था।

बूढ़ा बोला — "आओ हम अपना अपना क्रास बदल लेते हैं। इस क्रास के बदलने से तुम मेरे भाई बन जाओगे।"

लड़का बोला — "नहीं भाई नहीं। मैं चाहे कितना भी चाहूँ कि जितना सुन्दर क्रास तुमने पहन रखा है वह मैं पहन लूँ पर उसके बदले में मैं तुम्हें कुछ नहीं दे सकता।"

पर बूढ़े ने लड़के के पीछे पड़ कर उससे अपना क्रास बदल लिया। फिर उसने उसको ईस्टर वाले हफ्ते में मंगलवार के दिन अपने घर आने के लिये कहा।

उसने आगे कहा — "और अगर तुम अपने रास्ते से आना चाहते हो तो तुम किसी भी रास्ते पर चल देना और कहना "लौर्ड[56] मेरे ऊपर कृपा करो।" और मैं तुम्हें मिल जाऊँगा।"

सो उस हफ्ते मंगल को लड़के ने अपनी सड़क पकड़ी और बोला — "लौर्ड मेरे ऊपर कृपा करो।" और उस पर आगे चल दिया।

[56] In Christianity, Lord means Jesus Christ.

वह अभी थोड़ी ही दूर गया था कि उसको कुछ बच्चों को यह कहते हुए सुना — "ओ काइस्ट के भाई तुम काइस्ट से हमारी बात करना। कि क्या हम इसी तरह दर्द में बहुत दिनों तक रहेंगे।"

वह इसके आगे कुछ दूर और चला तो उसने कुछ लड़कियों को देखा जो एक कुँए से दूसरे कुँए तक पानी ले जा रही थीं।

उन्होंने उससे कहा — "काइस्ट से हमारे बारे में बात करना कि हमको इस तकलीफ में कितने दिनों तक रहना है।"

वह फिर थोड़ा और आगे चला तो उसको एक हैज[57] मिली। और उस हैज के नीचे कुछ बूढ़े लोग दिखायी दिये। वे सब कीचड़ में लिपटे हुए थे। वे भी बोले — "मेहरबानी कर के ओ काइस्ट के भाई हमारे बारे में भी काइस्ट से बात करना कि हम लोग यह दर्द कब तक सहते रहेंगे।"

और इस तरह से वह चलता गया चलता गया और फिर दूर तक जाने के बाद उसको वह बूढ़ा आदमी मिला जिसके साथ उसने उपवास तोड़ा था। बूढ़े ने पूछा — "रास्ते में तुमने क्या क्या देखा।"

लड़के ने उसको सब कुछ बता दिया जो जो भी उसने देखा। तो बूढ़ा बोला— "अब तुमने मुझे पहचाना?"

[57] Hedge is a long thickly grown plants line to keep privacy, to protect the house from wild animals and to make a beautiful boundary. See its picture above.

और केवल इसी पल में किसान के लड़के ने जाना कि वह जीसस क्राइस्ट से बात कर रहा था। वह बोला — "ओ लौर्ड आपके ये बच्चे इतना दुख क्यों पाते हैं?"

"इनकी मॉओं ने इन्हें तभी शाप दे दिया था जब ये गर्भ में थे कि ये स्वर्ग कभी नहीं जा सकते।"

"और लड़कियॉ?"

"ये दूध का धन्धा करती थीं और उस दूध में ये पानी मिलाती थीं इसलिये बहुत समय तक ये पानी ही खींचती रहेंगी।"

"और बूढ़े लोग?"

"ये भली दुनियॉ में रहते थे और कहते थे "इस दुनियॉ में रहना कितना अच्छा है। जबकि इसमें किसी की परवाह करने लायक कुछ भी नहीं है।" इसलिये वे हमेशा कीचड़ में ही रहेंगे।"

उसके बाद क्राइस्ट उस लड़के को स्वर्ग ले गये और उसको वह जगह दिखायी जो उन्होंने उसके लिये तैयार की थी। तुम हमारा यकीन करो कि वह लड़का वहॉ से उसी दिन स्वर्ग छोड़ कर जाने को तैयार था।

बाद में क्राइस्ट उसको नरक दिखाने ले गये तो लड़के ने देखा कि वहॉ तो उसकी मॉ बैठी हुई थी। यह देख कर किसान बच्चे ने क्राइस्ट से प्रार्थना की कि वह उसकी मॉ पर पर दया करें।

काइस्ट ने लड़के से कहा कि वह घास की एक रस्सी बनाये सो लड़के ने लौर्ड की निगरानी में घास की एक रस्सी बटी और उसको लौर्ड के पास ले गया।

उसे देख कर लौर्ड ने कहा — "तुमने कितनी मेहनत से यह रस्सी तीस साल में बुन कर तैयार की है। अब इस रस्सी को नीचे डाल कर और उससे इसको ऊपर खींच कर नरक से बचा लो।"

लड़के ने वह रस्सी नरक में नीचे गिरायी जहॉ उसकी मॉ एक जलते हुए गड्ढे के ऊपर बैठी थी। भगवान ने ऐसा कुछ किया कि रस्सी नीचे तक जाते जाते न तो जली और न टूटी।

लड़के ने उस रस्सी के सहारे अपने मॉ को ऊपर लाने की कोशिश की। रस्सी ने नीचे पहुॅच कर उसका सिर पकड़ लिया तो वह चिल्लायी — "ओ जंगली कुत्ते तू तो मेरा गला घोट रहा है।"

बस उसी समय रस्सी टूट गयी और वह आत्मा फिर से जलते हुए गड्ढे में गिर पड़ी।

यह देख कर काइस्ट ने कहा — "वह कभी वहॉ से बच कर निकलना ही नहीं चाहती थी। उसका दिल तो वहीं लगा हुआ था। वह अब हमेशा के लिये वहीं रहेगी।"

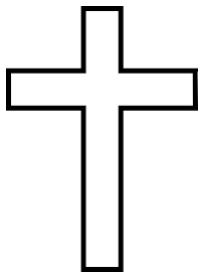

15 सेंट निकोलस की कहानी[58]

रूस देश की किसी राज्य में निकोलस नाम का एक सौदागर अपनी पत्नी के साथ रहता था। शुरू से ही वे अपने जीवन से बहुत सन्तुष्ट थे। पर उनकी असली खुशी इस बात थी कि भगवान ने उनको एक बेटा दे रखा था। और वह बेटा उनका सुन्दर भी बहुत था। बहुत समझदार और अक्लमन्द भी।

अब बस उन माता पिता की भगवान से और उस बच्चे के गौडफादर आश्चर्यजनक काम करने वाले सेंट निकोलस से यही प्रार्थना रहती थी कि वे उसे हर तरह की खुशी और लम्बी ज़िन्दगी दें।

पर जैसे जैसे उन्हें बुढ़ापा आता गया किसी वजह से वे और गरीब होते चले गये। और वे इतने गरीब हो गये कि निकोलस एक मशहूर सौदागर से एक सादा सा दूकानदार रह गया। उनकी केवल एक छोटी सी दूकान रह गयी।

उस छोटी सी दूकान में एक तम्बाकू की आलमारी थी। कुछ कीलें थीं थोड़ा सा लोहा था। अब या तो क्योंकि वे गरीब होते जा

---

[58] A Story of St Nicholas – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. Hindi translation of the stories of this book is available from : hindifolktales@gmail.com
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales
[Author's Note : I have taken this story as it stands. There are obvious gaps in this story. I have not ventured to fill them up.]

रहे थे इसलिये या फिर वे बूढ़े होते जा रहे थे इसलिये इवान के माता पिता बहुत कमजोर होते जा रहे थे। इवान निकोलस के बेटे का नाम था।

एक दिन निकोलस ने इवान को बुलाया और उससे बोला — "मेरे प्यारे बेटे ऐसा लगता है कि अब हम लोग जल्दी ही मर जायेंगे। पर बेटे तुम हमारे लिये रोना नहीं क्योंकि हमने अपनी ज़िन्दगी जी ली है और यह ऐसा ही होना चाहिये जैसा हो रहा है।

पर तुम हमको ठीक से दफ़न कर देना क्योंकि हम इस काम के लिये तुम्हारे पास काफी पैसा छोड़ कर जा रहे हैं। उसका एक तिहाई हिस्सा तुम हमारे दफ़न पर खर्च करना। उसका दूसरा तिहाई हिस्सा तुम मास[59] पढ़ने पर खर्च करना और उसका आखिरी तीसरे हिस्से से तुम एक दूकान खरीद लेना और उससे अपना व्यापार शुरू करना। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ।

कभी किसी को धोखा मत देना। और अगर तुम अमीर आदमी बन जाओ तो भगवान को कभी मत भूलना। गरीबों को दान देना जैसे कि पहले मैं दिया करता था।

अच्छा मेरे बच्चे विदा। भगवान की दया तुम्हारे ऊपर हमेशा बनी रहे और वह हमारी पापी आत्माओं की हमेशा रक्षा करे।"

सात दिन बाद निकोलस मर गया। इवान ने उसको वैसे ही दफ़न कर दिया जैसा उसने कहा था। जल्दी बाद ही उसकी माँ ने

[59] Mass is a Christian worship

व्यापार का काम सॅभाल लिया। उसने भी अपने सामान के भंडार की देखभाल करनी शुरू कर दी।

जब वह अपना सामान देख रहा था तो एक कोने में उसको सेंट निकोलस की मूर्ति पड़ी दिखायी दे गयी। वह उसको घर ले आया। उसने एक बर्तन में पानी भरा और उसमें डुबो डुबो कर उसे खूब धो धो कर साफ किया।

उसके बाद वह बाजार गया एक छोटा सा लैंप खरीद कर लाया और उसे उस मूर्ति के सामने ला कर जला दिया।

इसके बाद पहले रविवार को उसने पोप को बुलाया। अपने माता पिता के लिये मास करवायी। आश्चर्यजनक काम करने वाले सेंट निकोलस की प्रार्थना की और फिर उस मूर्ति को अपनी दूकान में ऐसी जगह ले जा कर रख दिया जहॉ उसकी नजर उस पर हमेशा पड़ती रहे।

उसको बाद रोज सुबह सुबह दूकान पहॅुचने पर पहले वह उसकी पूजा करता और उसके बाद ही अपना काम शुरू करता। उसका व्यापार इतना अच्छा चलता लगता कि जैसे भगवान खुद ही व्यापार कर रहे हों। बाद में उसने एक दूकान और बनवा ली और रोज के दान की मात्रा भी बढ़ा दी।

दूसरे लोगों में एक बूढ़ा भी था जो रोज उसके पास आया करता था। इवान को वह बहुत अच्छा लगता था। जब अपनी दूकान में उसने एक नया कलर्क रखा तो उसने उस बूढ़े से कहा —

"बाबा मैं नहीं जानता कि आपका नाम क्या है। बाबा मैं यह भी नहीं जानता कि मैं आपको क्या कह कर पुकारूँ पर बस आप मुझसे गुस्सा मत होना।

क्योंकि मैंने एक नयी दूकान खोल ली है और उस दूकान को चलाने के लिये मेरे पास कोई क्लर्क नहीं है। अगर आपको कोई ऐतराज न हो तो आप मेरी दूकान पर मेरे नये क्लर्क का काम सँभाल लें। मैं आपका कहना उसी तरह से मानूँगा जैसे मैं अपने पिता का मानता था।

आप मेरे ऊपर दया करें और मेहरबानी कर के इस बात के लिये मुझे मना न करें।"

बूढ़े ने पहले तो उसे मना कर दिया पर फिर बाद में वह तैयार हो गया। वह वहीं उसके साथ ही रहने लगा। अब इवान उससे हर बात में राय लेता उसका कहा मानता और उसको बाबा कह कर पुकारता। बूढ़ा भी उसके व्यापार की बहुत अच्छे से देखभाल करता और हमेशा उसको आगे बढ़ाने की कोशिश में लगा रहता।

एक दिन उसने लड़के से कहा — "इवानुष्का तुम्हारा यह व्यापार मुझसे बिल्कुल नहीं चलता। क्योंकि तुम तम्बाकू में व्यापार करते हो और भगवान को यह तम्बाकू पीना बिल्कुल पसन्द नहीं है। और न ही वह तम्बाकू वाले को पसन्द करते हैं। इसलिये तुम कुछ और छोटी छोटी चीज़ें खरीदो तो तुम्हारे पास पाप की बजाय खरीदार ज़्यादा आयेंगे।"

इवान ने उसका कहा माना और उसने कई तरह की छोटी छोटी चीज़ें खरीद लीं। इससे अब उसकी दूकान एक नयी तरह की हो गयी।

जब उसने उसकी सारी चीज़ें बेच लीं तो इवान अपने गिनने वाले कमरे में गया और वहॉ उसने जिधर भी देखा वहीं उसको अपना पैसा तीन गुना ज़्यादा नजर आया।

इतने बड़े फायदे को देख कर इवान इतना खुश हुआ कि उसने तुरन्त ही पोप को बुलवाया और मन लगा कर सेंट निकोलस की प्रार्थना की। और वह जो बूढ़ा था वह भी इतना खुश था कि उसने भी भगवान की दिल से प्रार्थना की।

उन्होंने तीन साल तक और व्यापार किया फिर बूढ़े ने उसको सलाह दी कि अब वह समुद्र पार भी अपना व्यापार बढ़ाये। इवान ने उसकी बात मानी। उसने एक जहाज़ खरीद लिया उसमें अपना सारा सामान भरा अपना घर गरीबों को दिया। उनमें से एक को उसने अपने वापस आने तक वहॉ का मालिक बना दिया।

फिर उन्होंने भगवान की प्रार्थना की और समुद्र में चल दिये। पता नहीं वे दूर चले या पास चले। कहानी कहने में जल्दी लगती है पर उसी काम को होने में समय लगता है कि कुछ डाकू आ गये और उनके जहाज़ का सारा सामन लूट कर ले गये। केवल उन्हीं दोनों को ज़िन्दा और ठीक छोड़ गये।

इवान को इस बात का बहुत धक्का लगा।

पर बूढ़े ने उसको तसल्ली दी कि जो कुछ हुआ वह उसके अच्छे के लिये ही हुआ। इसके बाद वे तीन दिन तक और चलते रह। तीसरे दिन वे एक टापू पर आ पहुँचे तो उनको वहाँ ईंटों का बहुत बड़ा ढेर दिखायी दिया।

बूढ़े ने इवान से कहा — "तैयार हो जाओ इवानुष्का। ये ईंटें अपने जहाज़ में रख लो।"

इवान ने पूछा — "पर मैं इन ईंटों का करूँगा क्या। मैं तो इनका व्यापार करने से भी पहले ही मर जाऊँगा।"

पर बूढ़ा बोला — "ओह इवानुष्का। अभी तुमको ज़्यादा तजुरबा नहीं है न। और मेरा कहना यह है कि इनमें से हर एक ईंट तुम्हारे उस सारे सामान से ज़्यादा कीमत की है जिसे वे चोर लोग उठा कर ले गये हैं।" ऐसा कह कर एक ईंट उठा कर उसने जमीन पर दे मारी। ईंट टूट गयी और उसमें से बहुत सारे अनमोल हीरे जवाहरात निकल पड़े।

इवान यह देख कर बहुत खुश हुआ और उसने अपने जहाज़ में वे ईंटें भरनी शुरू कर दीं। जब उनका जहाज़ पूरा भर गया तो बूढ़े न कहा — "इवानुष्का तुमको कुछ सादी ईंटें भी बनानी लेनी चाहिये ताकि और डाकू तुम्हारी ये ईंटें न चुरा सकें।"

सो उन्होंने थोड़ी सी सादी ईंटें भी बना कर अपने जहाज़ में रख लीं। पर जब वे घर वापस आ रहे थे तब बहुत ज़ोर से हवा चल निकली और वे आगे चले गये।

उनको डाकू फिर से मिल गये और वे उनके जहाज़ में सामान ढूँढने लगे। बूढ़ा बोला — "हम पर दया करो भले लोगों। हमें ज़िन्दा रहने दो। कुछ देर पहले ही कुछ डाकू आये थे और हमारे जहाज़ का सारा सामान लूट कर ले गये। अब हमारे पास केवल ईंटें ही ईंटें हैं। ये ईंटें हमने टापू पर बनायी थीं।"

डाकुओं ने उनको देखा तो वे उनको वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गये। इवान और बूढ़ा भी आगे चल दिये। कुछ देर बाद वे एक सराय में आये और वहाँ आ कर ठहर गये।

उस राज्य में यह रिवाज था कि जो कोई सौदागर वहाँ आता था उसको वहाँ अपने सामान का कुछ हिस्सा सरकार को भेंट की तरह से देना पड़ता था।

सो बूढ़े ने इवान से कहा — "इवानुष्का तुम भगवान की प्रार्थना करो और जा कर सोने का एक बर्तन और बढ़िया कपड़ा ख़रीद लाओ और उसको ले जा कर राजा को दे देना।"

इवान ने बूढ़े का कहना माना और अगले दिन वह राजा को उसकी भेंट देने गया तो राजा के नौकरों ने कहा कि एक व्यापारी आपको भेंट देने के लिये आया है। राजा अपने सिंहासन पर बैठ गया और उसने उसको अपने सामने बुलवाया।

इवान राजा के पास आया। उसके हाथ में एक सोने का बर्तन था जो एक बहुत बढ़िया कपड़े से ढका हुआ था। उस सोने के

बर्तन में एक ईंट थी। राजा ने इवान से पूछा कि वह किस राज्य से आया है और उसके माता पिता का नाम क्या है।

इसके बाद उसने सोने के बर्तन पर से कपड़ा हटाया तो देखा कि उसमें तो एक ईंट थी। वह ईंट देख कर तो वह बहुत गुस्सा हो गया और बोला — "मुझे लगता है कि तुमने सोचा यह कि हमारे पास तो ईंटें बहुत कम हैं इसलिये तुम हमारे राज्य में ईंटों का व्यापार करने के लिये आये हो।"

यह कहते हुए वह इवान की तरफ दौड़ा पर इवान एक तरफ को हट गया और उस बर्तन में से ईंट निकल कर नीचे गिर पड़ी और उसके दो हिस्से हो गये।

तब राजा ने देखा कि उसने तो अपने मेहमान के साथ बहुत ही खराब व्यवहार किया है। वह इवान से माफी माँगने लगा। बाद में उसने इवान का सारा का सारा जहाज़ ही खरीद लिया।

जब इवान ने यह देखा तो उसने उससे प्रार्थना की — "आप चाहें तो मेरा सारा सामान ले लें पर मैं अपना जहाज़ नहीं बेचूँगा क्योंकि उसमें एक बूढ़ा भी है जो मेरा क्लर्क है। और हम लोग इस शहर में रहने लायक नहीं हैं।"

राजा बोला — "अरे क्या तुम दो हो?"

यह सुन कर राजा फिर से बहुत गुस्सा हो गया और बोला — "मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा और मुझे तुम्हारा जहाज़ चाहिये।"

यह सुन कर इवान अपने घुटनों पर बैठ गया और उससे प्रार्थना की कि वह उनको जाने दे।

तब राजा ने कहा कि "अगर तुम दोनों में से कोई भी तीन रात तक मेरी बेटी के लिये साम्स[60] पढ़ दे जो इस समय चर्च में है तब तुम लोग जहाज़ रख सकते हो।" ऐसा उसने इसलिये कहा था क्योंकि उसकी बेटी एक जादूगरनी थी और वह हर रात एक इन्सान के रूप में आ जाती थी।

इवान भागा भागा अपने जहाज़ पर गया। वह बहुत दुखी था और उसका दिल रो रहा था। वह खुद वहॉ जाना नहीं चाहता था क्योंकि वह अभी मरना नहीं चाहता था। और अगर उसने उस बूढ़े को भेजा तो उससे भी उसके लिये अलग होना आसान नहीं था।

बूढ़े ने उसको देख कर बोला — "इवान क्या बात है तुम इतने परेशान क्यों हो। और तुम्हारा सिर लटका हुआ क्यों है?"

इवान ने उसको वह सब बताया जो राजा के दरबार में हुआ था और जो राजा ने कहा था। बूढ़े ने ठंडी आवाज में कहा — "तुम चिन्ता क्यों करते हो इवानुष्का। भगवान की प्रार्थना करो। लेट जाओ और सो जाओ। मैं इस खतरे से बचने का कोई रास्ता निकालता हूॅ।"

जल्दी ही रात होने लगी तो बूढ़े ने इवान को जगाया और कहा — "लो ये तीन मोमबत्तियॉ लो। जब तक पहली मोमबत्ती जले

[60] Psalms is a book of Bible

भगवान की प्रार्थना करना। जब दूसरी बुझ जाये तो तीसरी मोमबत्ती जलाना। उसके बाद पवित्र दरवाजे की दॉयी तरफ से अन्दर घुसना। सामान्य प्रार्थना के अलावा और कुछ नहीं कहना। जाओ भगवान तुम्हारी सहायता करें। उनका आशीर्वाद तुम्हारे साथ रहे।"

इवान वहॉ से राजा के पास चल दिया। राजा के नौकर उसको चर्च ले गये और वहॉ ले जा कर उसको चर्च के अन्दर बन्द कर दिया। वहॉ पहुॅच कर उसने साल्टर पढ़नी शुरू कर दी।

एक मोमबत्ती जल कर खत्म हो गयी तो उसने दूसरी जला दी। जब दूसरी भी जल कर खत्म हो गयी तो उसने तीसरी मोमबत्ती जला दी और पवित्र दरवाजे के दॉये हाथ को लेट गया।

तभी चर्च का फर्श ऊपर को उछल पड़ा और जादूगरनी ने इवान को ढूॅढना शुरू कर दिया — "तुम कहॉ हो? मैं तुम्हें खाऊॅगी।"

उसने उसको इधर उधर उसे बहुत देखने की कोशिश की पर उसको वह कहीं दिखायी नहीं दिया। फिर मुर्गे ने बॉग लगा दी तो वह लड़की एक बार फिर उसी कब्र में जा कर छिप गयी। तब इवान उठा कब्र को ढका और फिर से साम्स पढ़ने लगा।

लोगों ने सोचा कि अब तक तो वह मर गया होगा सो वे उसकी हड्डियॉ बटोरने के लिये चर्च पहुॅचे तो देखा कि इवान तो वहीं उतना ही बड़ा बैठा था जितना कि एक ज़िन्दा आदमी होता है।

वे वहॉ से चले गये और राजा को बताया कि इवान तो अभी भी ज़िन्दा है।

यह देख कर उसने उससे दूसरी बार प्रार्थना करने के लिये कहा। इवान फिर वूढ़े के पास गया और उसे फिर बताया कि राजा से उसकी क्या बातें हुई थीं।

अगली रात बूढ़े ने उससे कहा कि वह पवित्र दरवाजे के बॉयी तरफ लेटे और एक बार फिर से वह जादूगरनी उसको नहीं ढूँढ सकी।

तीसरी रात बूढ़े ने उसको तीन मोमबत्तियॉ और एक धागे का गोला दिया। धागे का गोला उसने उसे इसलिये दिया था ताकि वह उससे जादूगरनी के बाल बॉध सके।

उसने कहा — "देखो आज की रात तुम्हारी आखिरी रात है। जब तुम्हारी तीनों मोमबत्तियॉ जल चुकें तो इस बार तुम उसकी कब्र के बराबर में ही लेट जाना। और जब वह कब से बाहर निकल कर आये तो तुम उसकी कब्र में जा कर लेट जाना।

उसे जब तक उस कब्र में नहीं आने देना जब तक कि वह प्रार्थना की यह वाली लाइन न गा दे "ओ भगवान की कुँआरी मॉ खुश हो जाओ।" और "हमारे पिता जो स्वर्ग में हैं।"

यह सुन कर इवान एक बार फिर चर्च जा पहुँचा। वहॉ पहुँच कर उसने फिर से चर्च में साम्स गानी शुरू कर दी। तीसरी मोमबत्ती जलाने के बाद वह कब्र के पास ही लेट गया।

तभी जादूगरनी अपना ताबूत तोड़ कर बाहर निकल आयी और इवान के ऊपर उसको खाने के लिये उसको ढूँढने लगी। पर वह उसको कहीं मिला नहीं। आखिर वह अपने ताबूत में लेटने आयी तो उसने देखा कि इवान तो उसकी जगह लेटा हुआ है।

वह बोली — "अच्छा तो तुम यहाँ लेटे हुए हो। मैं तीन दिन से भूखी हूँ। बाहर निकल मैं तुझे खाऊँगी।"

तब इवान ने बालों वाला गोला उसकी तरफ फेंक दिया। जादूगरनी ने उस गोले को थोड़ा थोड़ा खाना शुरू कर दिया।

आखिर वह बोली — "अब मुझे जाने दे।"

इवान बोला — "नहीं। मैं तुझे नहीं जाने दूँगा।"

जादूगरनी फिर बोली — "नहीं अब मुझे जाने दे।"

इवान बोला — "पहले मेरे साथ यह प्रार्थना कर – "और भगवान की कुँआरी माँ खुश हो।" फिर मैं तुझे जाने दूँगा।"

जादूगरनी ने यह प्रार्थना इवान के बाद कही और फिर बोली — अब मुझे जाने दे।"

इवान बोला — "पहले मेरे बाद यह और कह – "हमारे पिता।" तब मैं तुझे जाने दूँगा।"

उसके बाद जादूगरनी ने वह प्रार्थना भी पढ़ी। तब इवान कब्र में से निकल आया और बोला — "अब तू लेट।"

पर जादूगरनी बोली — "पर अब मैं यहाँ नहीं लेट सकती।"

उसके बाद इवान और जादूगरनी दोनों ने प्रार्थना करनी शुरू कर दी।

अगली सुबह दो आदमी आये तो उन्होंने न केवल इवान को जीता जागता देखा बल्कि उन्होंने ओल्योना[61] यानी राजा की बेटी को भी देखा। वे तुरन्त ही भागे भागे राजा के पास गये और उसको वहॉ का सारा हाल सुनाया।

राजा ने चर्च के सारे औफीसरों को इकट्ठा किया और उनको ले कर चर्च गया। उसको लगा कि कहीं इवान ही जादूगर में न बदल गया हो। पर जब वहॉ जा कर उसे सच्चाई का पता चला तो उसने इवान को गले लगा लिया और उसको बेटा कह कर पुकारा।

जादूगरनी ने इवान से कहा — "अब ओ सौदागर के बेटे इवान अगर तुम मुझे ज़िन्दा करने के लिये भगवान की प्रार्थना कर सकते हो तो मुझे काबू में करना भी सीखो। फिर मैं तुमसे कभी एक कदम भी दूर नहीं जाऊॅगी।"

यह सुन कर इवान फिर से जहाज़ की तरफ भागा गया और बूढ़े को बताया कि चर्च में उस दिन क्या हुआ था।

बूढ़ा बोला — "इवानुष्का तुम्हें डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। तुम ओल्योना कोरोल्येवना[62] से शादी कर लो। केवल पहली

[61] Olyona – name of the Princess and the witch

[62] Olyona Korolyevna – full name of the Princess. Korolye means King, and vna means daughter.

तीन रात तुम रात भर नहीं सोना जब तक कि मुर्गा तीन बार बॉग न दे ले। उसके बाद वह तुम्हें कभी नहीं सतायेगी।"

राजा के दरबार में बिल्कुल देर नहीं हुई तुरन्त ही शादी का इन्तजाम हो गया। इवान की शादी राजकुमारी ओल्योना से हो गयी।

दो हफ्ते तक वे लोग खुशी खुशी रहे तब एक दिन इवान राजा से बोला — "आदरणीय पिता जी अब आप मुझे जाने की इजाज़त दें। मुझे अपने माता पिता के लिये भी मास पढ़नी है और एक बार अपना घर भी देखना है।"

राजा बोला — "मेरे प्यारे बच्चे सौदागर के बेटे इवान। मैं तुम्हारी इच्छा में कोई दखल देना नहीं चाहता पर तुम वापस जरूर आना। तुम खुद देख रहे हो कि अब कोई जवान नहीं रह गया हूँ और मेरा कोई वारिस भी नहीं है। जब तुम वापस आ जाओगे तब मैं तुम्हें राज्य दे दूँगा फिर तुम खुशी से रहना।"

सो इवान और बूढ़ा दोनों अपनी यात्रा पर चल दिये और अपने राज्य आ पहुँचे। अपनी जन्मभूमि आ पहुँचे। इवान ओल्योना को अपने साथ ले कर आया था। जब वे ईंटों वाले टापू पर आये तो उन्होंने अपने सारे जहाज़ ईंटों से भर लिये और टापू खाली कर दिया।

एक दिन बूढ़े ने आग जलाने के लिये लकड़ी काटनी शुरू की और वह उसको टापू के दूसरी तरफ ले गया। वहॉ जा कर वह

बोला — "इवानुष्का मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।" कह कर उसने उन दोनों को वहॉ बुलाया जहॉ वह लकड़ी रखी थी।

वहॉ जा कर उसने उस लकड़ी में आग लगायी और जब उसमें लपटें उठने लगीं तो उसने ओल्योना को उठाया, उसका एक पैर अपने पैर से दबा कर दूसरी टॉग खींची दी जिससे वह दो हिस्सों में बॅट गयी और उसे आग में फेंक दिया।

इवान तो यह देख कर दंग रह गया। उसको तो यह पता ही नहीं चला कि वह क्या कहे। बूढ़े ने उसके दोनों हिस्से आग में फेंक दिये थे। उन हिस्सों में से सॉप मेंढक और बहुत सारे और कई तरह के रेंगने वाले जानवर निकल पड़े।

तब उसने उन दोनों हिस्सों को आग में से बाहर निकाला समुद्र के पानी में अच्छी तरह से धोया और फिर उनके ऊपर पानी छिड़क दिया।

क्रास का निशान बनाया तो वे टुकड़े जुड़ गये और उनसे एक बहुत ही सुन्दर ओल्योना उठ खड़ी हुई इतनी सुन्दर कि न तो वैसी लड़की किसी ने पहले कभी देखी होगी और न कोई उसके बारे में लिख सकता है।

वह आगे बोला — "ओ सौदागर के बेटे इवानुष्का अब तुम एक ताकतवर राजा होने वाले हो अमीर हो खुश हो बहुत मशहूर होने वाले हो। सो ध्यान रखना कि भगवान को कभी भूलना नहीं

और गरीबों को दान देना नहीं छोड़ना। अब मैं तुम्हें कभी नहीं मिलूँगा।"

इवान और ओल्योना दोनों ने उसके सामने घुटने टेक कर उससे रुक जाने के लिये विनती की पर बूढ़ा बोला — "अब तुम मुझसे कुछ मत माँगो बल्कि भगवान को धन्यवाद दो कि उसने मुझे तुम्हारे पास भेज दिया।

मैं तुम्हारे पिता और तुमको दोनों को प्यार करता हूँ। बल्कि तुमको ज़्यादा प्यार करता हूँ क्योंकि तुमने दया कर के मुझे दान दिया और अब तुम अमीर भी हो और मशहूर भी हो। आगे भी गरीबों को दान देते रहना।" कह कर वह वहीं गायब हो गया।

इवान और ओल्योना दोनों ने भगवान को धन्यवाद दिया और अपना जहाज़ समुद्र में खे दिया।

जब गरीबों ने देखा कि इवान तो बहुत सारा पैसा ले कर आ गया है तो वे सब समुद्र के किनारे पर आ कर इकट्ठा हो गये और इवान के हाथों को पैरों को उसके कपड़ों को चूमने लगे। वे सब इतने खुश थे कि उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

इवान ने अपने माता पिता की कब्रों पर क्रास लगवाये। गरीब लोगों को कपड़ा दिया उनको अपना घर दे दिया और फिर अपने ससुर के पास लौट गया। वहाँ जा कर बहुत दिनों तक राज्य किया।

वह इतने ज़्यादा दिनों तक जिया कि उसने अपने बेटे नाती पोते सब देखे।

वह हमेशा ही भगवान और सेंट निकोलस के गीत गाता रहा कि उन्होंने उसके ऊपर इतनी दया की। जहॉ के वे राजा थे वहॉ आज भी उनको लोग याद करते हैं।

16 काइस्ट और बतखें[63]

एक बार सेंट पीटर और काइस्ट दोनों एक साथ बाहर टहल रहे थे। सेंट पीटर गम्भीर रूप से कुछ सोच रहा था कि अचानक बोला — "भगवान होना कितना अच्छा होता होगा। काश केवल आधे दिन के लिये मैं भगवान बन जाता फिर चाहे मैं सारी उम्र पीटर ही बना रहता।"

लौर्ड[64] मुस्कुराये और बोले — "जाओ तुम्हारी इच्छा पूरी हो। तुम रात तक भगवान रहो।"

वे दोनों अब एक गॉव के पास पहुँच रहे थे। वहॉ उन्होंने देखा कि एक किसान लड़की बतखों के झुंड को ले जा रही है। वह उन्हें घास के मैदान तक ले गयी उनको वहॉ छोड़ा और फिर जल्दी जल्दी वापस अपने घर की तरफ लौट पड़ी।

सेंट पीटर ने पूछा — "क्या आप इन बतखों को ऐसे ही छोड़ देंगी?"

लड़की बोली — "हुँह। नहीं तो क्या। आज इनकी रखवाली आप करें? आज तो त्यौहार का दिन है।"

---

[63] Christ and the Geese (Tale No 68) – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. Hindi translation of the stories of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[64] Here Lord is used for Jesus Christ.

सेंट पीटर बोला — "पर तब इन बतखों की रखवाली कौन करेगा?"

एक बतख बोली — "शायद भगवान करेगा।" और वहॉ से भाग गयी।

क्राइस्ट बोले — "पीटर सुना तुमने उसने क्या कहा? मुझे तुम्हारे साथ गॉव की दावत में जा कर बड़ी खुशी होती पर शायद बतखों को मेरे पीछे कुछ हो जाये तो। तुम रात गये तक भगवान हो इसलिये तुम यहीं रहो और उनकी रखवाली करो।"

बेचारा पीटर। वह इस बात से बड़ा नाराज था पर उसको वहॉ रह कर उन बतखों का ध्यान रखना पड़ा।

उसके बाद उसने फिर कभी भगवान बनने की इच्छा प्रगट नहीं की।

17 काइस्ट और लोक गीत[65]

एक बार सेंट पीटर और काइस्ट दोनों एक साथ बाहर घूमते घूमते एक गॉव में आ निकले। वहॉ एक घर में कुछ लोग इतना बढ़िया गाना गा रहे थे कि काइस्ट उनका गाना सुनने के लिये वहीं रुक गये। सेन्ट पीटर आगे बढ़ गया।

कुछ दूर जा कर सेन्ट पीटर घूमा और पीछे मुड़ कर देखा कि काइस्ट तो वहॉ खड़े खड़े गाना सुन रहे थे। सेंट पीटर फिर कुछ और आगे बढ़ गया। उसने कुछ देर बाद फिर पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि काइस्ट अभी भी गाना सुनने में मग्न थे।

वह फिर आगे चल दिया। थोड़ी देर बाद उसने तीसरी बार फिर पीछे मुड़ कर देखा तो काइस्ट अभी भी वहीं खड़े थे।

यह देख कर वह पीछे गया और उस बढ़िया गाने को सुनने के लिये कुछ देर तक वहॉ खड़ा रहा और फिर दूसरे घर की तरफ चला गया जहॉ कुछ और लोग गा रहे थे।

वहॉ सेंट पीटर रुक गया पर काइस्ट चलते गये तो सेंट पीटर भी फिर उनके पीछे जल्दी जल्दी चला और आश्चर्य से देखा।

काइस्ट ने पूछा — "क्या बात है पीटर?"

---

[65] Christ and Folk-songs – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. Hindi translation of the stories of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

पीटर बोला — "मुझे यह पता नहीं चला कि आप लोक गीत सुनने के लिये तो रुक गये पर जहॉ प्रार्थनाऐं गायी जा रही थीं वहॉ तो आप बिल्कुल नहीं रुके।"

क्राइस्ट बोले — "मेरे प्यारे बेटे। जिस घर में लोक गीत गाये जा रहे थे वहॉ बहुत अच्छी खुशबू आ रही थी पर जहॉ प्रार्थनाऐं गायी जा रही थीं वहॉ भक्ति बिल्कुल भी नहीं थी।

18 चालाक पत्नी[66]

इथियोपिया के एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे। वे अपना काम बड़ी मेहनत और ईमानदारी के साथ करते थे परन्तु कभी किसी गरीब को दान में एक पैसा भी नहीं देते थे।

उनके कोई बच्चा भी नहीं था सो उनका खर्चा भी बहुत कम था इसलिये उनका काफी पैसा बच जाया करता था।

एक दिन पति बाजार गया तो उसने एक गाय देखी। गाय तन्दुरुस्त और बड़ी थी सो उसने उसे खरीद लिया। वह गाय उसने पचास डालर की खरीदी।

बाद में उसने अपनी पत्नी के लिये एक डालर की एक मुर्गी भी खरीदी और घर वापस आ गया। पत्नी इन दोनों को देख कर बहुत खुश थी क्योंकि गाय खूब दूध देती थी और मुर्गी रोज अंडे।

एक रविवार को पति अपने चर्च के पादरी से मिलने गया। और बातों के साथ साथ उन दोनों ने उस दूध के बारे में भी बात की जो उनकी गाय देती थी और उन अंडों के बारे में भी बात की जो उनकी मुर्गी देती थी।

पादरी ने कहा "तुम अमीर तो हो पर बहुत ही मतलबी हो क्योंकि तुमने गॉव के किसी गरीब आदमी की कभी कोई सहायता नहीं की। तुमको उनकी सहायता जरूर करनी चाहिये। या तो

[66] Cunning Wife - a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, Africa

तुमको उन लोगों को कुछ दूध और अंडे देने चाहिये और या फिर कुछ पैसे।"

पादरी की यह बात पति की समझ में आ गयी। वह घर आ कर पत्नी से बोला कि वह गाय और मुर्गी को बाजार में ले जा कर बेच दे।

उसने साथ में उससे यह भी कहा कि वह गाय को बेच कर उसका पैसा गरीबों में बॉट दे और मुर्गी को बेच कर उसका पैसा ला कर उसको दे दे।

पत्नी को पति की यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं आयी परन्तु वह पति के कहने को टाल भी नहीं सकती थी। वह सोचती रही कि उसे क्या करना चाहिये जिससे सॉप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। आखिर उसको एक तरकीब सूझ ही गयी।

अगले दिन वह गाय और मुर्गी ले कर बाजार गयी और उनको बाजार में बेचने बैठ गयी। एक आदमी गाय खरीदना चाहता था सो उसने उस औरत से पूछा कि गाय कितने की है। औरत बोली "एक डालर की।"

उस आदमी को यह सुन कर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि ऐसा कैसे है। उसने कहा "मुझे यहॉ रहते हुए कितने साल हो गये हैं पर मैंने ऐसा कभी नहीं सुना कि गाय का दाम एक डालर हो। क्या यह गाय दूध देती है?"

वह औरत बोली "हॉ हॉ बिल्कुल देती है, क्यों नहीं। परन्तु एक शर्त है कि अगर तुम यह गाय खरीदोगे तो तुमको साथ में यह मुर्गी भी खरीदनी पड़ेगी।"

आदमी ने पूछा — "और मुर्गी की कीमत क्या है?"

औरत ने जवाब दिया — "पचास डालर।"

उस आदमी को यह सब झमेला सा लग रहा था परन्तु इक्यावन डालर में गाय और मुर्गी का सौदा बुरा नहीं था सो उसने इक्यावन डालर दे कर गाय और मुर्गी दोनों खरीद लीं। औरत ने खुशी खुशी इक्यावन डालर अपनी जेब के हवाले किये और सीधी चर्च गयी।

वहॉ उसको एक गरीब औरत बैठी हुई दिखायी दे गयी। उसने उसको गाय का एक डालर दान में दिया और घर आ कर मुर्गी के पचास डालर अपने पति के हाथ में थमा दिये।

पति को इतने सारे डालर देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा "क्या तुमने गाय को बेच कर उसके पैसे दान में नहीं दिये या तुमको एक मुर्गी के इतने सारे पैसे मिल गये?"

पत्नी बोली — "मैंने दोनों काम कर दिये। गाय को बेच कर उससे मिले पैसे मैंने दान में दे दिये और मुर्गी के मुझे इतने सारे पैसे मिल गये वह मैं घर ले आयी।"

पति की अभी भी कुछ समझ में नहीं आया तो पत्नी ने उसे सब साफ साफ बता दिया कि वह गाय एक डालर की बेच कर उसने

वह एक डालर दान में दे दिया और मुर्गी को पचास डालर में बेच कर वह पचास डालर घर ले आयी।

इस तरह इस चालाक पत्नी ने अपने पति का कहना भी माना और पैसे भी बचाये।

19 ताश खेलने वाला–1[67]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के पूर्व में स्थित टापुओं पर बसे लोगों में कही सुनी जाती है। ताश खेलने वाले की यह लोक कथा एक बहुत ही मजेदार लोक कथा है। इसमें जीसस एक ताश खेलने वाले को वरदान दे कर कैसे फॅस जाते हैं यह देखने वाली बात है। तो आओ पढ़ते हैं यह कथा हिन्दी में।

एक बार एक आदमी था जिसको लोग ताश खेलने वाला कहते थे और यही वह करता भी था। वह कहीं भी जाता था तो उसकी जेब में ताश रहते। वह उनके साथ ताश खेलता और हर एक को हरा देता था।

वह सड़क पर से किसी को भी पकड़ लेता था – वह बच्चा हो या बड़ा या कोई और, और उससे कहता कि "आओ ताश खेलें।"

वह हमेशा पैसे के लिये ताश खेलता था। कोई बच्चा भी जो किसी दूकान जाता होता तो वह उसको बुला लेता। क्योंकि उसके पास पैसे होते थे सो वह उसके साथ खेलता और वह बच्चा बेचारा तुरन्त ही हार जाता और वह उसके पैसे ले लेता।

उसका एक छोटा सा घर था और उसमें उसका एक छोटा सा रसोईघर था। वहॉ वह अपने हाथ से ही खाना बनाता था। उसके

[67] The Cardplayer – a folktale from Reunion, Africa. Adapted from the book : "Indian Ocean Folktales: Madagaskar, Comoros, Mauritius, Reunion, Seychelles". By Germain Elizabeth. Retold by Christian Bard.

पास एक बर्तन था। उसके उस बर्तन में छह–सात लोगों का खाना बन जाता था।

वह अपना चावल नापता था और उसको उस बर्तन में डाल कर सुबह सुबह आग पर रख देता था। फिर वह ताश खेलता था। जब दिन के ग्यारह बजते थे और अगर वह जीत जाता था तो वह अपना सारा चावल खा लेता था।

शाम को फिर वह चावल बनने के लिये रखता था और बन जाने पर खा लेता था। अगर वह अपना सुबह का चावल ग्यारह बजे खत्म नहीं कर पाता था तो वह उसको शाम के लिये रख देता था। इस तरह से उसको ताश खेलने के लिये ज़्यादा समय मिल जाता था।

एक दिन वहॉ रहने वालों में से एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा — "जाओ और भगवान से मिलो और उससे कहो "भगवान तुम धरती पर आओ और इस ताश खेलने वाले को यहॉ से ले जाओ। वह हम सबको बहुत तंग करता है। यह सड़क पर हर जगह ताश खेलता है।

यह बच्चों और बड़ों को एक जैसा ही समझता है। सबके साथ ताश खेलता है और सबको हरा देता है। अच्छा होगा अगर भगवान आयें और इसको ले जायें तो।"

दूसरा आदमी बोला — "ठीक है। मैं जा कर भगवान से मिलता हूॅ।

सो वह भगवान के पास गया और बोला — "भगवन, मैं आपसे मिलने आया हूँ। हमारे यहाँ धरती पर एक आदमी है जो सबको ताश खेल कर बहुत तंग करता है।

वह एक तरफ ऊपर जाता है और दूसरी तरफ नीचे आता है। उससे सब परेशान रहते हैं। वह लोगों को काम नहीं करने देता और बच्चा हो या बड़ा सबसे ताश खेल कर उनके पैसे ले लेता है।

कोई बच्चा बेचारा पैसे ले कर कुछ खरीदने के लिये दूकान जाता है तो वह उसको ताश खेलने के लिये बहका लेता है और फिर उसको हरा कर उसके सारे पैसे ले लेता है।"

भगवान ने पूछा — "क्या उसका नाम ताश खेलने वाला है?"

वह आदमी बोला — "जी हाँ।"

भगवान ने कहा — "वह आयेगा, वह यहाँ जरूर आयेगा। मैं खुद देखने आता हूँ कि जो कुछ तुम मुझसे कह रहे हो क्या यह सब सच है?"

भगवान ने "होली घोस्ट"[68] और सेंट पीटर[69] से बात की और कहा "चलो इस ताश खेलने वाले को देख कर आते हैं। अगर जो कुछ यह आदमी कह रहा है सच हुआ तो हमें उसे धरती से हटाना ही पड़ेगा।"

---

[68] Holy Ghost – Christianity believes in Trinity – Father, Son and the Holy Ghost (Holy Spirit), each person itself being God.

[69] Saint Peter (Simon Peter) was one of the twelve Apostles of Jesus Christ and in popular culture is depicted holding the key of Kingdom of Heaven, sitting at the Pearly Gates to allow entry in the Kingdom of Heaven. See the names of Jesus' twelve disciples at the end of the book.

सो वे तीनों धरती की तरफ चल दिये। जब वे उस ताश खेलने वाले के घर पहुँचे तो शाम के पॉच बज रहे थे। उन्होंने उससे पूछा — "क्या तुम्हीं ताश खेलने वाले हो?"

वह बोला — "हॉ, क्यों?"

वे बोले — "हमने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है पर अब देर हो गयी है। क्या तुम हमको रात को खाना और ठहरने की जगह दे सकते हो?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर तुम देख रहे हो न कि मेरा कितना छोटा सा घर है। यह मेरा खाना बनाने का बर्तन है और मेरे पास बस एक डिब्बा ही चावल है। तुम लोग इधर सो सकते हो, जैसे भी चाहो और फिर हम सब यह चावल मिल कर खायेंगे। ठीक है?"

तीनों एक साथ बोले — "ठीक है। हमें मंजूर है।"

सो उस ताश खेलने वाले ने अपना चावल नापने वाला बर्तन उठाया। उससे नाप कर चावल लिये, उनको धोया और फिर उस बर्तन को आग पर रख दिया। बाकी सब लोग बात करने लगे।

जब चावल पक गये तो उन तीनों ने पूछा — "और वह चावल? क्या वह पका हुआ चावल नहीं है?"

बर्तन में चावल पक कर उठ रहा था। सो वह ताश खेलने वाला उठ कर गया। उसने उसमें से दो प्याले चावल निकाले। अब वह बर्तन चावल से आधा भरा हुआ था।

उसने देखा और बोला — "यह चावल तो बन गया है पर अभी बहुत सारा चावल बाकी है। मैं इसको कैसे परसूँ?"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने थोड़ा सा चावल ले लिया और उसे खाने लगे। चारों का पेट भर गया।

वे तीनों उस ताश खेलने वाले से बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि वह नम्रता में, अच्छे बरताव में और यह देखने में कि दूसरे लोगों ने ठीक से खाया है या नहीं सबसे पहले नम्बर पर आता है।" और वे सब सोने के लिये लेट गये।

अगली सुबह जब वे उठे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले से पूछा कि वे उसको वहाँ खाने और सोने के कितने पैसे दे दें।

वह बोला — "जो थोड़ा बहुत मेरे पास था उसी में से तुम लोगों ने यहाँ खा पी लिया। इसके अलावा तुम लोग इतनी छोटी सी जगह में सो भी लिये। और मेरे ख्याल से तो तुम लोग ठीक से सो भी नहीं पाये होगे। सो इस सबका उनको कोई पैसा देने की कोई जरूरत नहीं है।"

वे तीनों बोले — "नहीं नहीं, हम लोगों ने पेट भर कर खाया और पूरा पूरा ठीक से सोये। पर बस अब यह बता दो कि इस सब का हम तुम्हें कितना पैसा दे दें।"

वह ताश खेलने वाला बोला कि वह भी ठीक से सोया।

भगवान ने कहा — "अगर तुम हमसे कोई पैसा नहीं ले रहे तो मुझसे अपने लिये कोई मेरी कोई कृपा ही माँग लो।"

वह बोला — "कृपा? मैं तुमसे क्या कृपा माँगू?"

भगवान बोले — "कुछ भी। जो भी तुम्हारी इच्छा हो। चलो, मैं तुमको सन्तोष दूँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम वह बैन्च देख रहे हो न? तो तुम्हारी कृपा के लिये मैं तुमसे यह माँगता हूँ कि जो कोई भी उस बैन्च पर बैठे वह वहीं चिपक जाये।"

भगवान बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

होली घोस्ट बोले — "अब तुम मुझसे भी कुछ माँग लो।"

"अरे तुमसे भी? मैं तुमसे क्या माँगू?" फिर कुछ सोचते हुए बोला — "अच्छा ठीक है तुम मुझको यह दो कि जब कोई मेरे दरवाजे में हो और वह उस दरवाजे का सहारा ले कर खड़ा हो तो वह वहाँ से फिर हिल भी न सके। वह वहीं अटक जाये जब तक मैं उसको वहाँ से न हटाऊँ।"

होली घोस्ट बोले — "ठीक है जैसा तुम चाहो। ऐसा ही होगा।"

अब सेंट पीटर की बारी थी। उन्होंने कहा — "अब मेरा नम्बर है। बोलो, तुम मुझसे क्या माँगते हो?"

ताश खेलने वाला बोला — "तो क्या तुम तीनों मेरे ऊपर कृपा करने वाले हो? ठीक है। तुम वह सन्तरे का

पेड़ देख रहे हो न? अगर कोई उस पेड़ पर मुझसे बिना पूछे चढ़े तो वह उस पर से तब तक नीचे न आ सके जब तक मैं न कहूँ।"

सेन्ट पीटर बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

इस तरह तीनों उस ताश खेलने वाले को तीन वरदान दे कर चले गये। कुछ दिनों बाद भगवान ने अपने एक मृत्यु दूत[70] को बुलाया और उसको धरती पर से ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये भेजा।

मृत्यु दूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले के घर पहुँचा। वहाँ जा कर उसने ताश खेलने वाले से कहा कि उसको भगवान ने बुलाया है।

ताश खेलने वाले ने पूछा — "पर उसने मुझे बुलाया ही क्यों है?"

"यह तो मुझे मालूम नहीं पर उन्होंने मुझे तुम्हें लाने के लिये भेजा है।"

ताश खेलने वाले ने कुछ सोचा और उससे अपने घर के सामने पड़ी बैन्च पर बैठने के लिये कहा कि वह वहाँ बैठे और वह अभी घर से तैयार हो कर आता है।

सो मृत्यु दूत बाहर उसकी बैन्च पर बैठ गया और ताश खेलने वाला घर के अन्दर तैयार होने चला गया। कुछ देर बाद वह तैयार हो कर आया और बोला — "चलो उठो मैं तैयार हूँ।"

[70] Translated for the word "Death Angel".

मृत्यु दूत ने उस बैन्च से उठने की बहुत कोशिश की पर वह तो उससे उठ ही नहीं सका। वह तो उससे चिपक गया था। उसने बहुत कोशिश की पर वह तो वहॉ से किसी तरह हिल भी नहीं पा रहा था।

उसने उससे कहा — "अरे यह क्या। मैं तो यहॉ से उठ ही नहीं पा रहा। कोई मुझे यहॉ से उठाओ।"

ताश खेलने वाला बोला — "जब तक तुम मुझसे यह वायदा नहीं करोगे कि तुम मुझे भगवान के पास नहीं ले जाओगे मैं तुम्हें यहॉ से नही उठाऊॅगा।"

मृत्यु दूत को उससे यह वायदा करना ही पड़ा तभी ताश खेलने वाले ने उसको वहॉ से उठाया वरन अपने आप तो वहॉ से वह कभी उठ ही नहीं सकता था। वहॉ से उठ कर वह सीधा भगवान के पास गया।

भगवान ने पूछा — "कहॉ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत ने भगवान से जा कर सारा हाल बताया तो भगवान ने पूछा कि कि तुम वहॉ उस बैन्च के ऊपर बैठे ही क्यों थे।

वह बोला — "उसने मुझसे बैठने के लिये कहा था मैं वहॉ इसलिये बैठा था। मुझे क्या पता था कि उस पर बैठ कर मैं वहॉ चिपक जाऊॅगा। और उसके बाद तो मैं वहॉ पर चिपक ही गया।

मैं तो वहॉ से उठ ही नहीं सका जब तक उसने मुझे अपने आप नहीं उठाया और उसने मुझे तब तक उठाया नहीं जब तक उसने मुझसे यह वायदा नहीं ले लिया कि मैं उसे आपके नहीं ले जाऊॅगा।

जब मैंने उससे यह वायदा किया कि मैं उसको अपने साथ नहीं ले जाऊॅगा तब कहीं जा कर उसने मुझे उस बैन्च से आजाद किया।"

"ठीक है अब तुम फिर से जाओ और उस ताश खेलने वाले को यहॉ ले कर आओ। मैं और कुछ नहीं जानता। मैं तुमको हुक्म देता हूॅ और तुम मेरे हुक्म का पालन करो।"

सो वह फिर ताश खेलने वाले के पास गया तो ताश खेलने वाला उसको फिर से आया देख कर बोला — "अरे तुम यहॉ फिर से?"

"हॉ भगवान ने मुझसे कहा है कि अबकी बार मैं तुमको ले कर ही आऊॅ। और इस बार कोई सौदा नहीं।"

ताश खेलने वाले ने मुॅह बना कर कहा — "हुॅह, कोई सौदा नहीं।"

मृत्यु दूत बोला — "अबकी बार तुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊॅगा। मैंने कह दिया न।"

"क्या तुम मेरे साथ नहीं जा रहे हो? यह नहीं हो सकता। तुमको चलना ही पड़ेगा। उन्होंने मुझसे तुमको साथ लाने के लिये कहा है। कल तुमने मुझे उस छोटी सी बैन्च पर पकड़ लिया था। मैंने भगवान को सब बता दिया तो उन्होंने मुझे फिर से यहाँ भेज दिया।"

"ठीक है तुम यहाँ बैठो।"

"क्या? उस बैन्च पर?"

"हाँ हाँ। ठीक है। तुम अगर बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो न बैठो घर के बाहर मेरे दरवाजे पर खड़े हो कर मेरा इन्तजार करो मैं अभी आया।"

मृत्यु दूत उसके दरवाजे के सहारे खड़ा हो गया। जैसे ही वह वहाँ खड़ा हुआ तो वह तो वहाँ उसके घर के दरवाजे से चिपक गया।

ताश खेलने वाला बोला — "यह दरवाजा तुमको पकड़ कर रखेगा तब तक मैं ज़रा ताश खेल कर आया।"

मृत्यु दूत बोला — "ताश खेलने से क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने कहा न कि कोई सौदा नहीं बस तुमको मेरे साथ चलना है। अभी।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा। तुम यहीं ठहरो।"

यह सुन कर मृत्यु दूत तो पागल सा हो गया। उसने अपने आपको वहाँ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की "कोई सौदा नहीं ओ

ताश खेलने वाले। मुझे जाने दो। मैं जा कर यह बात भगवान को बता दूँगा तो वह मुझे फिर से तुमको लाने के लिये यहाँ भेज देंगे।"

ताश खेलने वाले ने दरवाजे से कहा — "देखो यह यहाँ खड़ा है इसको जाने मत देना।"

फिर वह मृत्यु दूत से बोला — "अगर तुम मुझे ले कर जाना चाहते हो तो मैं तुमको यहाँ से नहीं जाने दूँगा।"

मृत्यु दूत ने फिर कहा — "अच्छा तो मुझे तो जाने दो। मैं भगवान से जा कर कहूँगा कि मेरे साथ क्या हुआ था। और मैं तुमको भी नहीं ले जाऊँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर मैं तुमको छोड़ दूँगा तो तुम मुझे अपने साथ ले जाओगे। मुझे मालूम है।"

मृत्यु दूत फिर बोला — "नहीं मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको अपने साथ बिल्कुल नहीं ले जाऊँगा। लेकिन अब तो मुझे जाने दो।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर तुम मुझे नहीं ले जाओगे तो मैं तुमको छोड़ देता हूँ। जाओ यहाँ से चले जाओ। अब तुम उस दरवाजे से चले जाओ।"

मृत्यु दूत ने दरवाजा छोड़ दिया और वह वहाँ से चला गया। वह वहाँ से भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने पूछा — "अरे यह क्या तुम फिर से बिना ताश खेलने वाले को लिये आ गये?"

"भगवन मैं बताता हूँ कि मेरे साथ क्या हुआ।"

"मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम वहाँ गये होगे और जा कर उसकी बैन्च पर बैठ गये होगे।"

"नहीं भगवन इस बार मैं उसकी बैन्च पर नहीं बैठा बल्कि उसके दरवाजे ने मुझे पकड़ लिया। मैं उसके दरवाजे में फँस गया।"

भगवान ने पूछा — "क्या मैंने तुमको उसके दरवाजे में फँसने के लिये भेजा था। मैंने तुमको ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा था। फिर जाओ और ताश खेलने वाले को ले कर आओ। अबकी बार कोई सौदा नहीं। बस उसको ले कर आओ। उसको धरती पर से उठा कर लाना है। समझे।"

मृत्यु दूत बोला — "मैं क्या करता भगवन मैं उसके दरवाजे में फँस गया था। मैंने उससे छूटने की बहुत कोशिश की पर मैं छूट ही नहीं सका सो मुझे उससे वायदा करना पड़ा कि मैं उसको नहीं ले जाऊँगा ताकि कम से कम मैं उसके दरवाजे से तो छूट सकूँ।"

भगवान बोले — "ठीक है अब भागो यहाँ से। और यह आखिरी बार है। अबकी बार उसको ले कर ही आना है। अबकी बार ख्याल रखना।"

सो वह मृत्यु दूत फिर धरती पर गया और फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँच कर उसको आवाज लगायी। ताश खेलने वाला बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से यहाँ? अब तुम्हें क्या चाहिये?"

"भगवान ने मुझे यहॉ तुमको ले आने के लिये भेजा है। अबकी बार तो तुमको हर हाल में चलना ही है।"

"नहीं, मैं नहीं जा रहा।"

"नहीं का क्या मतलब है अबकी बार तो तुमको चलना ही है। सुना तुमने?"

"अगर तुम उस बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो न बैठो। अच्छा तो दरवाजे के पास खड़े हो जाओ।"

"क्या वहॉ? ताकि फिर मैं वहॉ से हिल भी न सकूँ? नहीं नहीं बस तुम मेरे साथ अभी चलो।"

सो वह बाहर ही खड़ा रहा। न तो वह बैन्च पर बैठा और न ही वह दरवाजे के पास खड़ा हुआ। वहीं पास में सन्तरे का पेड़ था और उस पर पके सन्तरे लगे हुए थे।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर हम वाकई जा रहे हैं तो मुझे क्या करना होगा। ऐसा करो, देखो इस पके सन्तरे के पेड़ को देख रहे हो न। जब तक मैं तैयार होता हूँ तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ और वहॉ से कुछ सन्तरे ही तोड़ लो। चार सन्तरे तोड़ लेना – दो अपने लिये और दो भगवान के लिये।"

सो मृत्यु दूत उस पेड़ पर चढ़ गया। जब वह ऊपर तक पहुँच गया तो ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है अब मैं ताश खेलने जा रहा हूँ। मैं अभी आता हूँ।"

"क्या? मैं नीचे उतर रहा हूँ फिर साथ साथ चलते हैं।"

"नहीं तुम नीचे नहीं उतर रहे।"

"क्या? मैं नीचे नहीं उतर रहा?"

"हॉ, तुम नीचे नहीं उतर रहे। तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी ताश खेलने जा रहा हूॅ। जब मैं तय कर लूॅगा कि मुझे क्या करना है तब मैं तुम्हें बताऊॅगा तब हम चलेंगे। और तभी मैं तुम्हें यहॉ से आज़ाद करूॅगा।"

मृत्यु दूत बोला — "ओ ताश खेलने वाले मैं तुमसे कह रहा हूॅ कि मुझे जाने दो। पहले तुमने मुझे इस छोटी सी बैन्च पर पकड़ा, फिर तुमने मुझे दरवाजे में पकड़ा और अब तुमने मुझे इस सन्तरे के पेड़ पर पकड़ रखा है।

यह सब तो ठीक है, पर यह तो बताओ तुम्हें चाहिये क्या? भगवान ने मुझसे कहा है कि तुम यहॉ लोगों को परेशान करते हो सो मैं तुमको यहॉ से ले जाऊॅ।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुमने क्या कहा कि भगवान ने कहा है कि मैं लोगों को परेशान करता हूॅ? मैं किसी को परेशान नहीं करता। मैं भगवान को भी परेशान नहीं करता। मैं किसी को परेशान नहीं करता सिवाय अपने साथ ताश खेलने वालों के।"

"ठीक है, तो मुझे तो जाने दो। मैं तुमको बता रहा हूॅ कि मैं जा रहा हूॅ।"

ताश खेलने वाला बोला — "नहीं, तुम मुझे साथ ले कर नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। तुम मुझे ले जाओगे इसलिये मैं तुम्हें यहाँ से जाने भी नहीं दे सकता।"

पर बाद में मत्यु दूत को ताश खेलने वाले से एक वायदा करना पड़ा कि अगर उसने उसको छोड़ दिया तो वह उसको ले कर नहीं जायेगा और भगवान के पास जा कर उनको यह बतायेगा कि वह धरती पर कैसे पकड़ा गया था।

ताश खेलने वाला राजी हो गया तो उसने उसको सन्तरे के पेड़ पर से नीचे बुला लिया। मृत्यु दूत वहाँ से किसी तरह नीचे उतर कर सन्तरे ले कर भगवान के पास चला गया।

जब वह भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने उससे पूछा — "कहाँ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत बोला — "भगवन, इस बार उसने मुझे अपने सन्तरे के पेड़ में पकड़ लिया और फिर मुझे वह छोड़ ही नहीं रहा था। फिर भी उसने आपके लिये दो सन्तरे भेजे हैं और कहा है कि मैं इनको आपको दे दूँ।"

भगवान बोले — "मुझे किसी सन्तरे की जरूरत नहीं है। और मैंने तुमको वहाँ सन्तरे तोड़ने के लिये भी नहीं भेजा था। क्या मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम उसके सन्तरे के पेड़ पर चढ़ो? मुझको तो बस वह ताश खेलने वाला चाहिये और कुछ नहीं। और तुम उसको यहाँ ला नहीं रहे।"

सो वह अबकी बार चौथी बार धरती पर गया। इस बार उसको बहुत सावधान रहना था। भगवान ने भी उससे सावधान रहने के लिये कहा और कहा कि अगर वह सावधान नहीं रहा तो वह उसको वहॉ ले कर नहीं आ पायेगा।

सो वह फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँचा और जा कर उसको आवाज लगायी।

ताश खेलने वाला बाहर निकल कर आया और बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से? तुम यहॉ फिर से वापस क्यों आ गये?"

मृत्यु दूत बोला — "आज तो तुमको जाना ही पड़ेगा। भगवान ने मुझसे कहा है कि आज मैं तुमको यहॉ से ले कर ही आऊँ। इस बार कोई सौदा नही – न कोई बैंच और न कोई दरवाजा और न ही कोई सन्तरे का पेड़। बस तुमको मेरे साथ चलना है।"

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है ठीक है, अगर मुझको तुम्हें ले कर जाना ही है तो मुझे पहले अपने ताश के पत्ते तो ले आने दो।"

सो वह अन्दर गया और अपने ताश निकल कर ले लाया। उनको उसने अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने एक थैला उठाया उसको अपने कन्धे पर डाला और वह इस तरह उस मृत्यु दूत के पीछे पीछे चल दिया।[71]

[71] The final episode in Germain Elizabeth's "Cardplayer" tale exemplifies cultural creolization. European tradition contributes Cardplayer's expulsion from Heaven. African tradition puts a familiar

चलते चलते रास्ते में कुछ दूरी पर ताश खेलने वाले को ग्रैन इ्याब[72] दिखायी दे गया तो वह बोला — "ज़रा रुको ओ मृत्यु दूत, मैं चलते चलते इसके साथ ज़रा एक ताश की एक बाज़ी[73] खेल लूँ। अभी चलता हूँ।"

मृत्यु दूत बोला — "नहीं मुझे बहुत देर हो जायेगी। तुम मेरे साथ अभी चलो।"

ताश खेलने वाला गिड़गिड़ा कर बोला — "बस एक मिनट, केवल एक बाज़ी।"

कह कर वह ग्रेन इ्याब के पास पहुँच गया और उससे बोला — "आजा एक बाज़ी खेलते हैं।"

ग्रैन इ्याब बोला "क्या?"

ताश खेलने वाला बोला — "आ न ग्रैन इ्याब, एक बाज़ी खेलते हैं। अगर तुम जीत जाओ तो तुम मुझे खा लेना।"

उसने सोचा "वह मृत्यु दूत खड़ा है। या तो मैं उसके साथ चला जाऊँगा या फिर ग्रैन इ्याब के मुँह में चला जाऊँगा। क्या फर्क पड़ता है। मुझे तो यहाँ भी मरना वहाँ भी मरना।"

frame around it. Hell is forgotten in favor of two-sided conflict between the "little man" and the God. Elizabeth says "Cardplayer" earns the way to Heaven

[72] Gran Dyab – the other name of Satan

[73] Translated for the word "Deal"

वह फिर ग्रैन इ्याब से बोला — "सो अगर तुम जीत गये तो तुम मुझे खा लेना और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे शैतान दे देना।"

ग्रैन इ्याब बोला — "यकीनन। पर ओ ताश खेलने वाले, क्या तुम समझते हो कि तुम मेरे साथ ताश का खेल खेल सकते हो?"

फिर भी दोनों ताश खेलने बैठे तो ताश खेलने वाले ने ग्रैन इ्याब को हरा दिया। अपने समझौते के अनुसार ग्रैन इ्याब गया और अपने बारह छोटे शैतान ला कर उसको दे दिये।

उसने उन शैतानों को उससे ले कर अपने थैले में डाला, थैले को अपने कन्धे पर डाला और मृत्यु दूत से बोला — "देखा तुमने? मैं जीत गया न? मैं कोई ऐसे ही झक नहीं मार रहा था। चलो चलते हैं।"

दोनों चल दिये।

वे लोग स्वर्ग के दरवाजे पर आ पहुँचे थे। दरवाजे पर सेंट पीटर खड़ा हुए थे। मृत्यु दूत सेंट पीटर से बोला — "मैं इस ताश खेलने वाले को पकड़ लाया हूँ।"

सेन्ट पीटर ने पूछा — "तुम ताश खेलने वाले को ले आये?"

"हॉ यह रहा।"

"बहुत अच्छे, उसको अन्दर ले आओ।" सो ताश खेलने वाला अन्दर गया।

सेन्ट पीटर ने पूछा — "और यह इसके कन्धे पर क्या है?"

मृत्यु दूत बोला — "यह इसकी जीत है जब यह यहॉ आ रहा था तो रास्ते में एक ताश की बाजी खेला और उसमें यह जीत गया।"

सेन्ट पीटर बोले — "क्या इसने कुछ जीत लिया?"

मृत्यु दूत बोला — "हॉ। यह ग्रैन इ्याब के साथ खेला और उससे इसने उसके बारह छोटे शैतान जीत लिये।"

सेंट पीटर ने फिर पूछा — "यहॉ कोई शैतान नहीं आ सकता।"

"वह तो ठीक है। पर मैंने इनको जीता है। अब मैं इनका क्या करूॅ? ये मेरे हैं। तुम मुझे इनको रखने के लिये कहीं किसी कोने में कोई जगह दे दो।"

सेंट पीटर बोले — "मैंने तुमसे कहा न कि यहॉ अन्दर कोई भी शैतान नहीं आ सकता। तुम इनको बाहर छोड़ सकते हो।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। तब मैं इनको यहॉ दरवाजे के पास ही छोड़ देता हूॅ।" और उसने अपना थैला दरवाजे के पास ही रख दिया।

फिर वह बैठ गया और सेंट पीटर को घूरने लगा। कुछ पल उसको देखने के बाद वह बोला — "क्या वह तुम्हीं नहीं थे जो कुछ समय पहले मुझसे रात के लिये खाना और ठहरने की जगह मॉगने आये थे? तुम लोग तीन थे। है न?"

सेंट पीटर बोले — "हॉ, उनमें एक मैं भी था।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम तीनों भी एक चीज़ थे। तुम तीनों मेरे घर आये। मैं तुम लोगों को अन्दर ले गया। मैंने तुम्हारे लिये चावल बनाये। तुम लोगों को खाने के लिये दिये। तुम लोगों को सोने के लिये जगह दी।

और अब जब मैं यहॉ आया हूँ तो मैं अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि मेरे पास कुछ छोटे शैतान हैं? तुम तो वाकई अजीब चीज़ हो।"

उसने अपने शैतानों का थैला उठाया और वहॉ से चला गया क्योंकि सेंट पीटर उसको उन शैतानों के साथ अन्दर नहीं आने दे रहे थे।

20 बड़े साइज़ का आदमी फ़िन और लुंड का चर्च[74]

स्वीडन के लुंड शहर में एक छोटा शहर है शुनैन जहाँ सारे स्कैन्डिनैवियन देशों का आर्चबिशप बैठता है।[75] यहाँ एक शाही रोमन चर्च है। लोगों का कहना है कि यह रोमन चर्च कभी पूरा नहीं होगा। उसकी इमारत में कुछ न कुछ कमी हमेशा ही रहेगी। इसकी वजह यह बतायी जाती है।

कहते हैं कि जब सेंट लौरेन्स[76] वहाँ गोस्पल का उपदेश[77] देने के लिये आये तो वह वहाँ पर एक चर्च बनवाना चाहते थे पर उनको यह नहीं मालूम था कि वह वहाँ उसे कैसे बनवायें।

जब वह इस बात को सोच रहे थे तो एक बड़े साइज़ का आदमी[78] उसके पास आया और उससे कहा कि वह उसके लिये चर्च बना देगा पर एक शर्त पर। कि सेंट लौरेन्स को चर्च पूरा होने से पहले पहले उसका नाम बताना पड़ेगा। और अगर वह नहीं बता

[74] Finn, the Giant and the Minster of Lund – a folktale from Sweden, Europe.
Taken from the Book "Swedish Fairy Book", ed by Clara Stroebe. 1921. Adapted from the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/Swedish_folktale_3.html

[75] There stands in the University town of Schunen, the town of Lund, the seat of first archbishop in all Scandinavian countries.

[76] St Lawrence

[77] To preach Gospels – there are four Gospels in Bible. Otherwise Gospels mean message from God.

[78] Translated for the word "Giant"

पाया तो वह या तो चॉद सूरज ले लेगा या फिर सेंट लौरेन्स की ऑखें ले लेगा।

सेंट बड़े साइज़ के आदमी की इस बात को मान गये और बड़े साइज़ के आदमी ने चर्च बनाना शुरू कर दिया। चर्च जल्दी जल्दी आगे बढ़ने लगा और उसकी इमारत जल्दी ही खत्म होने पर आ गयी।

सेंट लौरेन्स बेचारे परेशान से अपने भविष्य के बारे में सोचते रहे क्योंकि अभी तक उन्हें बड़े साइज़ के आदमी का नाम पता नहीं चला था। और वह अपनी ऑखें भी खोना नहीं चाहते थे।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह शहर के बाहर घूम रहे थे और इस मामले पर गम्भीर रूप से विचार कर रहे थे तो वह बहुत दुखी हो गये और एक पहाड़ी पर आराम करने के लिये बैठ गये।

जब वह उस पहाड़ी पर बैठे हुए थे तो उन्होंने पहाड़ी के अन्दर से एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी। साथ में एक स्त्री के गाने की आवाज भी सुनी जो वह उस बच्चे को चुप करने के लिये गा रही थी — "सो जा सो जा मेरे बच्चे सो जा। कल तेरा पिता फ़िन यहॉ आयेगा तब तुझे आसमान के सूरज और चॉद खेलने के लिये देगा या फिर सेन्ट लौरेन्स की ऑखें देगा।"

जब सेंट लौरेन्स ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुए क्योंकि अब उसे उस बड़े साइज़ के आदमी का नाम पता चल गया था। वह वहॉ से तुरन्त ही शहर भाग गये और चर्च जा पहुॅचे। वहॉ बड़े साइज़

का आदमी चर्च की छत पर बैठा हुआ था और उस चर्च का आखिरी पत्थर रखने ही जा रहा था कि...

सेंट लौरेन्स नीचे से चिल्लाये — "फ़िन फ़िन। चर्च का यह आखिरी पत्थर ज़रा ध्यान से रखना।"

अपना नाम सुन कर बड़े साइज़ के आदमी को गुस्सा आ गया और गुस्से के मारे उसने वह पत्थर वहीं से नीचे फेंक दिया और बोला — "अब यह चर्च कभी खत्म नहीं होगा।"

यह कह कर वह वहॉ से गायब हो गया। तबसे चर्च में हमेशा ही कुछ न कुछ काम चलता ही रहता है।

कुछ दूसरे लोगों को कहना है कि अपना नाम सुन कर वह बड़े साइज़ का आदमी अपनी पत्नी के साथ नीचे आया चर्च के अन्दर गया और दोनों एक एक खम्भा ले कर उसको तोड़ने ही वाले थे कि वे खुद पत्थर में बदल गये और आज तक उन्हीं खम्भों के बराबर में खड़े देखे जा सकते हैं जिन्हें उन्होंने पकड़ा था।

21 दुनियॉ का जन्म[79]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के माली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

शुरू शुरू में यह सारी दुनियॉ दूध का एक समुद्र थी और भगवान अपनी बनायी चीज़ से सन्तुष्ट था। सो दुनियॉ में केवल दूध का समुद्र था और बादल थे।

पर क्योंकि स्वर्ग और धरती में कोई अन्तर नहीं था सो भगवान ने चाहा कि वह अपनी इस दुनियॉ में कुछ रंगीनी लाये। वह बोला — "दूध से पौधे और पत्थर पैदा हो जायें।" और दूध से पौधे और पत्थर पैदा हो गये।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

पर पत्थर दूध और पौधों के लिये बहुत ही सख्त थे सो उसने उनको दबा कर चौरस कर दिया। भगवान अब पत्थर के मुकाबले कुछ और ज़्यादा मजबूत चीज़ बनाना चाहता था।

सो वह बोला — "पत्थर से लोहा पैदा हो जाये।"

---

[79] The Origin of Creation – a Fulani folktale from Mali, West Africa. Adapted from the Book : "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2011. Hindi translation of the stories of this book is available from : hindifolktales@gmail.com
[My Note: This is strange that this folktale is from Fulani people. Fulani people are Muslims and they say in this tale that "God gave us His son." – means that "He gave us Jesus Christ". How could they say this?]

और पत्थर से लोहा पैदा हो गया।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया

लोहा जैसा कि तुम जानते हो पत्थर के लिये बहुत ही ज़्यादा सख्त हो गया था। अब उसको किसी और ज़्यादा ताकतवर चीज़ की जरूरत थी जो उसको काबू में रख सके सो उसने आग बनायी।

वह बोला — "आग बन जा।" और आग बन गयी।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

बहुत जल्दी ही आग चारों तरफ फैलने लगी और रुक ही नहीं पायी। जो कुछ भी उसके रास्ते में आता गुस्से में आ कर वह उस सबको जला देती।

सो भगवान ने उसको रोकने के लिये पानी बनाया और कहा — "पानी बन जा।" और पानी प्रगट हो गया जिसने आग के गुस्से को रोका —

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया

पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी
और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया

"पानी पानी, तुमने बरसने से क्यों मना कर दिया? क्योंकि मैंने तुमको आग को रोकने के लिये ही बनाया है इसलिये तुम बस लगातार पड़ते ही रहो।"

पर उससे तो बाढ़ आने लगी सो पानी को रोकने के लिये भगवान ने फिर सूरज बनाया।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर भगवान ने सोचा — "मैंने बहुत सारी चीज़ें बनायीं अब मुझे आराम की जरूरत है। पर उससे पहले मुझे एक चौकीदार की जरूरत है जो मेरी बनायी हुई इन सब चीज़ों पर निगाह रख सके।"

भगवान ने यह सोचते हुए आदमी बनाया और यह भी सोचा कि उसको मेरी ही शक्ल का होना चाहिये ताकि वे सब उसकी सुन सकें।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये
और फिर उसने दिया आदमी जो उसकी दुनियॉ पर राज कर सके

पर आदमी को घमंड हो गया और उसने दुनियॉ पर बड़े बेरहम ढंग से राज करना शुरू कर दिया।

सो आदमी को झुकाने के लिये भगवान ने बहुत सारे दुख बनाये। आदमी तब से ही उनसे लड़ने की कोशिश कर रहा है – बीमारियॉ, भूख, चिन्ता, जलन से लड़ते लड़ते वह बहुत कमजोर हो गया है।

पर बाद में ये दुख भी अपने आप में बहुत घमंडी हो गये कि हम तो आदमी को भी अपने कब्जे में रखते हैं।

सो भगवान ने फिर मौत बनायी जिसने उन दुखों को जीता और उसके साथ ही जीता आदमी को भी।

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।
फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी

और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर उसने आदमी दिया अपनी बनायी हुई चीज़ों के ऊपर राज करने के लिये
पर आदमी घमंडी हो गया और बेरहमी से राज करने लगा

सो भगवान ने आदमी को नम्र बनाने के लिये दुख बनाये
और आखीर में बनायी मौत दुखों को और आदमी को काबू में रखने के लिये
पर मौत ने तो उन सारे आदमियों को मार डाला जो भी उसके रास्ते में आया
और इस तरह उसने आदमी को भी दुनियॉ से हटा दिया

हालॉकि भगवान यह नहीं चाहता था कि वह आदमी को अपनी दुनियॉ से बिल्कुल ही हटा दे क्योंकि उसको तो उसने अपनी शक्ल का बनाया था सो वह बोला — "मुझे अब कुछ खास बनाना चाहिये। एक ऐसा आदमी जो मौत को जीत सके सो उसने अपना बेटा इस दुनियॉ में भेजा —

सो शुरू में भगवान ने दूध बनाया
फिर उसने दुनियॉ को रंगीन बनाने के लिये पौधे और पत्थर बनाये।

फिर उसने पत्थर को रोकने के लिये लोहा बनाया
पर लोहा पत्थर के लिये बहुत ज़्यादा मजबूत था सो उसने आग बनायी
और फिर आग को रोकने के लिये पानी बनाया
और फिर आया सूरज पानी को रोकने के लिये

फिर उसने आदमी दिया अपनी बनायी हुई चीज़ों के ऊपर राज करने के लिये
पर आदमी घमंडी हो गया और बेरहमी से राज करने लगा
सो भगवान ने आदमी को नम्र बनाने के लिये दुख बनाये

और आखीर में बनायी मौत दुखों को और आदमी को काबू में रखने के लिये
पर मौत ने तो उन सारे आदमियों को मार डाला जो भी उसके रास्ते में आया

और इस तरह उसने आदमी को भी दुनियॉ से हटा दिया
सो भगवान ने इस दुनियॉ में अपना बेटा भेजा जिसने मौत को भी जीत लिया

22 डाक्टर का बेटा और सॉपों का राजा[80]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप समूह की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह कथा सीधे तरीके से तो ईसाई धर्म से सम्बन्धित नहीं है पर इसमें सोलोमन का जिक आता है और हालॅकि सोलोमन भी ईसाई नहीं था पर क्योंकि वह जीसस काइस्ट का पुरखा था और इसमें एक आदमी जीसस काइस्ट के आने का इन्तजार कर रहा है इसलिये इसको इस संग्रह में शामिल कर लिया गया है।

एक बार एक शहर में एक बहुत बड़ा डाक्टर रहता था। वह अपनी पत्नी और एक छोटे बेटे को छोड़ कर मर गया। जब वह बेटा बड़ा हो गया तो उसकी मॉ ने उसके पिता की इच्छा के अनुसार उसका नाम हसीबू करीमुद्दीन[81] रखा।

जब हसीबू ने स्कूल में पढ़ना लिखना सीख लिया तब उसकी मॉ ने उसको एक दर्जी के पास सिलाई का काम सीखने के लिये भेजा पर वह दर्जी का काम नहीं सीख सका। फिर उसकी मॉ ने उसको एक चॉदी की चीज़ें बनाने वाले के पास भेजा पर वह वह काम भी नहीं सीख सका।

---

[80] The Physician's Son and the King of the Snakes – folktales of Zanzibar, Tanzania, Africa. Taken from the book "Zanzibar Folktales" edited by George W Bateman. 1903. Hindi translation of the stories of this book is available from hindifolktales@gmail.com
[This story seems like an Arabian Nights story in which one story comes out from another story.]

[81] Haseeboo Kareemuddeen – a Muslim male name

इसके बाद वह कई और जगह भी कुछ कुछ काम सीखने के लिये गया पर वह वहॉ भी कुछ नहीं सीख सका। तब उसकी मॉ ने कहा कि वह अब कुछ दिन घर बैठे। यह उसको ठीक लगा।

एक दिन हसीबू ने अपनी मॉ से पूछा कि उसके पिता अपनी जीविका के लिये क्या काम करते थे तो उसकी मॉ ने उसको बताया कि वह एक बहुत ही अच्छे डाक्टर थे।

"तो फिर उनकी किताबें कहॉ हैं?"

मॉ बोली — "काफी दिनों से मैंने उनको देखा नहीं है पर वे यहीं कहीं होंगी, शायद पीछे पड़ी होंगी। देख लो।"

उसने उनको इधर उधर ढूँढा। काफी देर तक ढूँढने को बाद आखिर में वे किताबें उसको मिल गयीं पर वे करीब करीब सारी की सारी कीड़ों ने खा ली थीं और वह उनमें से बहुत कम पढ़ सका।

एक दिन उनके चार पड़ोसी उनके घर आये और उसकी मॉ से कहा कि अपने बेटे को हमारे साथ जंगल में लकड़ी काटने के लिये भेज दो।

वे लोग वहीं पास में ही काम करते थे। वे जंगल से लकड़ी काटते थे, गधों पर लादते थे और शहर जा कर उसे बेच देते थे। लोग उस लकड़ी से आग जलाते थे।

उसकी मॉ ने हॉ कर दी और कहा — "कल मैं उसके लिये एक गधा खरीद दूँगी और फिर वह तुम्हारे साथ तुम्हारे काम धन्धे में लग जायेगा।"

अगले दिन हसीबू की मॉ ने उसके लिये एक गधा खरीद दिया और वह अपने गधे को ले कर उन चारों आदमियों के साथ लकड़ी काटने चला गया।

उस दिन उन लोगों ने बहुत काम किया और बहुत सारा पैसा कमाया। यह सब छह दिनों तक चला पर सातवें दिन बहुत तेज़ बारिश हो गयी और उन सबको बारिश से भीगने से बचने के लिये एक गुफा में जाना पड़ा।

हसीबू गुफा में एक तरफ अकेला बैठा था। उसके पास कुछ करने को तो था नहीं सो वह एक पत्थर उठा कर उसे जमीन पर मारने लगा। उसने वह पत्थर दो चार बार ही मारा था कि उसको वहॉ से कुछ ऐसी आवाज आयी जैसी कि खोखली जमीन पर मारने पर आती है।

उसने अपने साथियों को आवाज लगायी और बोला कि ऐसा लगता है कि यहॉ कोई छेद है। पहले तो किसी ने उसकी आवाज ही नहीं सुनी पर जब उसने दोबारा आवाज लगायी तो वे लोग आये और यह जानने के लिये कि वह खोखली जमीन की आवाज कहॉ से आ रही थी उन्होंने वहॉ खोदना शुरू किया।

वे लोग बहुत देर तक नहीं खोद पाये थे कि उनको कुॅए की तरह का एक बहुत बड़ा गड्ढा दिखायी दिया जो शहद से भरा था। उस दिन उन्होंने कोई लकड़ी नहीं काटी बल्कि सारा दिन शहद इकट्ठा करने और उसको बेचने में ही लगा दिया।

सारा शहद जल्दी से जल्दी निकालने के चक्कर में उन्होंने हसीबू को उस शहद के कुँए में नीचे उतार दिया और उससे शहद ऊपर देने के लिये कहा और वे खुद उस शहद को बर्तनों में इकट्ठा कर के बाजार बेचने के लिये ले जाते रहे।

आखीर में जब वहाँ बहुत कम शहद रह गया तो उन्होंने उस लड़के से उसको भी इकट्ठा करने के लिये कहा और वे खुद एक रस्सी लाने चले गये ताकि वे उस लड़के को बाहर निकाल सकें।

पर बाद में उन्होंने उस लड़के को उसी कुँए में छोड़ दिया और शहद बेचने से जो पैसा उन्होंने कमाया था उसे भी केवल आपस में ही बाँट लिया। उस लड़के को कुछ भी नहीं दिया।

लड़के ने भी जब सारा शहद बटोर लिया तो रस्सी के लिये आवाज लगायी। पर वहाँ कोई होता तो बोलता। वे लोग तो सब वहाँ से चले गये थे।

तीन दिन तक वह लड़का उसी कुँए में पड़ा रहा। अब उसको यकीन हो गया था कि उसके साथी लोग उसको छोड़ कर चले गये थे।

उधर उसके चारों साथी उसकी माँ के पास गये और उससे कहा कि उसका बेटा जंगल में उनसे बिछड़ गया। उसके बाद उन्होंने शेर की दहाड़ की आवाज भी सुनी। काफी ढूँढने पर भी लड़के और उसके गधे का कहीं पता नहीं चला। इससे ऐसा लगता ही कि हसीबू और उसके गधे दोनों को शेर ने खा लिया।

जाहिर है कि हसीबू की मॉ अपने बेटे के लिये बहुत रोयी बहुत चिल्लायी पर क्या कर सकती थी। बेचारी रो पीट कर बैठ गयी। उसके पड़ोसियों ने उसके हिस्से का पैसा भी रख लिया था।

उधर हसीबू उस कुॅए में इधर उधर चक्कर काटता रहा और सोचता रहा कि आखिर उसका होगा क्या? तब तक वह शहद खाता रहा, थोड़ा सोता रहा और बाकी समय में सोचता रहा।

चौथे दिन जब वह बैठा बैठा सोच रहा था तो उसने एक बहुत बड़ा बिच्छू उपर से गिरता हुआ देखा। उसने उस बिच्छू को मार तो दिया पर वह यह सोचने लगा कि यह बिच्छू आया कहॉ से? इसका मतलब है कि इस कुॅए में किसी और जगह भी कोई छेद है जहॉ से यह आया है। मैं ढूॅढता हूॅ उस जगह को।

सो उसने चारों तरफ देखना शुरू किया तो उसने देखा कि एक पतली झिरी में से रोशनी आ रही है। उसने तुरन्त अपना चाकू निकाला और उस झिरी को बड़ा करने में लगा रहा जब तक कि वह छेद इतना बड़ा नहीं हो गया जिसमें से वह निकल सकता।

उस छेद में से फिर वह बाहर निकल आया। अब वह एक ऐसी जगह आ गया था जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसे एक सड़क दिखायी दी तो वह उसी सड़क पर चल दिया और एक बड़े मकान के सामने पहुॅच गया।

उस मकान का दरवाजा खुला था सो वह उस मकान के अन्दर घुस गया। वहॉ उसने सोने के दरवाजे देखे जिनमें सोने के ताले लगे थे और मोती की चाभियॉ लगीं थीं। वहॉ उसने सुन्दर कुर्सियॉ भी देखीं जिनमें बेशकीमती पत्थर जड़े हुए थे।

बाहर वाली बैठक में उसने एक बहुत सुन्दर काउच देखा जिसके ऊपर एक बहुत कीमती चादर पड़ी थी। वह उस काउच पर लेट गया।

पर तभी उसको लगा कि किसी ने उसको उठा कर कुर्सी पर बिठा दिया और सुना कि कोई कह रहा था — "देखो इसको चोट न लगे, इसको सॅभाल कर जगाओ।"

तभी उसकी ऑख खुल गयी और उसने देखा कि उसके चारों तरफ तो बहुत सारे सॉप थे और उनमें से एक सॉप ने तो शाही कपड़े भी पहन रखे थे।

वह लड़का बोला — "तुम लोग कौन हो?"

वह सॉप बोला — "मैं सुलतानी वानीओका[82] हूॅ, सॉपों का राजा, और यह मेरा घर है। तुम कौन हो?"

लड़का बोला — "मैं हसीबू करीमुद्दीन हूॅ।"

"तुम कहॉ से आये हो?"

"मुझे नहीं मालूम मैं कहॉ से आया हूॅ और कहॉ जा रहा हूॅ।"

[82] Sultaanee Waaneeokaa – the King of the Snakes

सॉपों का राजा बोला — "खैर, अभी तुम इसकी चिन्ता मत करो। पहले तुम कुछ खा लो। मुझे लग रहा है कि तुम बहुत भूखे हो और मुझे भी बहुत भूख लगी है।"

राजा ने हुक्म दिया तो कई सॉप बहुत सारे बहुत बढ़िया फल ले आये। वे उन्हें खाते रहे और बात करते रहे। जब खाना खत्म हो गया तो राजा ने हसीबू की कहानी सुननी चाही। हसीबू ने अपनी सारी कहानी सुना दी और फिर राजा से उसकी कहानी सुननी चाही।

सॉपों के राजा की कहानी

सॉपों के राजा ने कहा — "मेरी कहानी थोड़ी लम्बी है फिर भी मैं तुमको उसे सुनाऊॅगा। काफी दिन पहले मैं हवा पानी की बदली के लिये यह जगह छोड़ कर अल काफ पहाड़[83] पर चला गया। एक दिन मैंने एक अजनबी को आते देखा तो उससे पूछा कि तुम कहॉ से आ रहे हो?"

तो उसने जवाब दिया — "मैं तो ऐसे ही जंगलों में भटकता घूम रहा हूॅ।"

मैंने उससे पूछा — "तुम किसके बेटे हो?"

[83] Al Kaaf Mountain

वह बोला — "मेरा नाम बोलूकिया[84] है। मेरे पिता एक सुलतान थे। जब वह मर गये तो मैंने उनकी एक छोटी सी सन्दूकची खोली। उस सन्दूकची में एक थैला था और उस थैले में एक पीतल का बक्सा था।

जब मैंने वह पीतल का बक्सा खोला तो उसमें ऊनी कपड़े में लिपटी हुई कुछ लिखी हुई चीज़ रखी थी। वह किसी धर्मदूत[85] की तारीफ में लिखी हुई थी।

उनमें वह एक बहुत ही अच्छा आदमी दिखाया गया था सो मुझे उस आदमी को देखने की इच्छा हुई। पर जब मैंने उसके बारे में पूछताछ की तो पता चला कि वह धर्मदूत तो अभी पैदा ही नहीं हुआ था।

तभी मैंने सोच लिया कि मैं तब तक घूमता रहूँगा जब तक मैं उससे मिल नहीं लूँगा। सो मैंने अपना देश छोड़ा, अपना घर छोड़ा और तब से मैं घूमता ही फिर रहा हूँ।"

मैंने पूछा — "अगर वह अभी तक पैदा ही नहीं हुआ है तो तुम उसे कहाँ देखने की उम्मीद रखते हो? हाँ अगर तुम्हारे पास "साँप का पानी" हो तो तुम शायद तब तक ज़िन्दा भी रह सको जब तक वह पैदा हो और तुम उसको देख सको। पर उस पानी की बात करने से भी क्या फायदा क्योंकि वह तो बहुत दूर है।"

[84] Bolukiya

[85] Translated for the word "Prophet"

उसने कहा — "मुझे तो घूमते ही रहना है।" और मुझसे विदा ले कर वह चला गया।

घूमते घूमते वह मिस्र[86] पहुँच गया जहाँ किसी ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

उसने जवाब दिया — "मैं बोलूकिया हूँ तुम कौन हो?"

उस आदमी ने कहा — "मैं अल फान[87] हूँ तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैंने अपना देश छोड़ा अपना मकान छोड़ा और मैं धर्मदूत को ढूँढ रहा हूँ।"

अल फान बोला — "मैं तुमको एक ऐसे आदमी को ढूँढने की बजाय जो अभी तक पैदा भी नहीं हुआ और अच्छा काम बता सकता हूँ। चलो पहले हम साँपों के राजा के पास चलते हैं और उससे कोई जादुई दवा लेते हैं।

फिर हम राजा सोलोमन के पास चलते हैं और उससे उसकी अँगूठी लेते हैं। उस अँगूठी से हम जिनी[88] को अपना नौकर बना लेंगे और फिर उससे जो चाहे वह काम ले लेंगे।"

बोलूकिया बोला — "मैं साँपों के राजा से अल काफ पहाड़ पर मिल चुका हूँ।"

अल फान बोला — "तो चलें।"

---

[86] Egypt

[87] Al Faan – name of a Muslim man

[88] King Solomon had a ring with whose help he could control his Genie or Jinn

अब अल फान तो सोलोमन की अँगूठी लेना चाहता था ताकि वह एक बहुत बड़ा जादूगर बन जाये और जिनी और चिड़ियों आदि को अपने बस में कर सके जबकि बोलूकिया तो केवल धर्मदूत से ही मिलना चाहता था।

सो दोनों सॉपों के राजा के पास चल दिये। जब वे जा रहे थे तो अल फान बोला — "एक पिंजरा बना लेते हैं उसमें हम सॉपों के राजा को कैद कर लेंगे और उसको साथ में ले चलेंगे।"

"ठीक है।"

सो दोनों ने एक पिंजरा बनाया, उसमें एक प्याला दूध रखा और एक प्याला शराब रखी और उसको अल काफ पहाड़ पर ले आये।

मैंने बेवकूफ की तरह वह सारी शराब पी ली और नशे में धुत हो गया। उसी हालत में उन्होंने मुझे पिंजरे में बन्द किया और अपने साथ ले गये।

जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको एक पिंजरे में बन्द पाया और मैंने देखा कि बोलूकिया उस पिंजरे को ले जा रहा था। मैं बोला — "तुम आदमी के बच्चे बहुत खराब हो। तुम क्या चाहते हो मुझसे?"

वे बोले — "हमें कोई ऐसी दवा चाहिये जिसको हम अपने पैरों पर लगा कर जहॉ भी हमें अपने सफर में पानी पर चलने की जरूरत हो हम उस पर चल सकें।"

"ठीक है, चलो।"

चलते चलते हम एक ऐसी जगह आ गये जहॉ बहुत सारे और बहुत तरीके के पेड़ थे। जब उन पेड़ों ने मुझको देखा तो कहने लगे "मैं इस चीज़ की दवा हूॅ, मैं उस चीज़ की दवा हूॅ। मैं हाथों की दवा हूॅ, मैं पैरों की दवा हूॅ।"

उसी समय एक पेड़ ने कहा — "अगर मुझे कोई पैरों पर लगा ले तो वह पानी पर चल सकता है।"

जब मैंने उन दोनों को यह बताया तो वे बोले यही तो हम चाहते थे सो उन्होंने उस पेड़ से बहुत सारी वह दवा ले ली। इसके बाद वे मुझे पहाड़ वापस ले गये, आजाद कर दिया और चले गये।

मुझे छोड़ कर वे अपने रास्ते चले गये और समुद्र के किनारे तक पहुॅच गये। वहॉ उन्होंने वह दवा अपने पैरों पर लगायी और पानी पर काफी दिनों तक चलते रहे जब तक वे सोलोमन की जगह के पास तक नहीं पहुॅच गये। वहॉ उन्होंने एक जगह इन्तजार किया जहॉ अल फान ने फिर से दवाऐं बनायीं।

फिर वे सोलोमन के पास पहुॅचे। उस समय वह सो रहा था और उसका जिनी उसका पहरा दे रहा था। उसका वह हाथ उसकी छाती पर रखा था जिसमें वह वह अॅगूठी पहनता था।

जैसे ही बोलूकिया सोलोमन की अॅगूठी लेने के लिये उसकी तरफ बढ़ा तो एक जिनी ने पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

बोलूकिया बोला — "मैं अल फान के साथ हूँ और अल फान सोलोमन की अँगूठी लेने आया है।"

जिनी बोला — "जाओ यहाँ से। वह आदमी तो मरने वाला है।"

जब अल फान की तैयारियाँ पूरी हो गयीं उसने बोलूकिया से कहा — "तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी आता हूँ।" और वह अँगूठी लेने चला गया।

जैसे ही वह अँगूठी लेने के लिये बढ़ा तो उसे एक बहुत ज़ोर से चिल्लाहट सुनायी दी और किसी अनदेखी ताकत ने उसको उठा कर बहुत दूर फेंक दिया।

किसी तरह वह उठा और अभी भी अपनी दवा में विश्वास रखते हुए वह फिर अँगूठी लेने के लिये बढ़ा। तभी साँस का एक ज़ोर का झोंका उसके चेहरे पर लगा और वह जल कर राख हो गया।

जब बोलूकिया यह सब देख रहा था एक आवाज बोली — "जाओ यहाँ से। देखो यह आदमी मर चुका है।"

वह आवाज सुन कर बोलूकिया वहाँ से लौट पड़ा और समुद्र तक आया। वहाँ आ कर उसने फिर से अपने पैरों पर पानी पर चलने वाली दवा लगायी और समुद्र पार कर समुद्र के दूसरी तरफ आ गया। उसके बाद भी वह कई सालों तक इधर उधर घूमता रहा।

एक सुबह उसने एक आदमी देखा जिससे उसने कहा — "सलाम।"

उस आदमी ने भी उसको सलाम किया।

बोलूकिया ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

वह आदमी बोला — "मेरा नाम जान शाह[89] है। तुम कौन हो?"

बोलूकिया ने उससे उसकी कहानी सुनाने की प्रार्थना की। वह आदमी जो कभी हॅस रहा था कभी रो रहा था उसने बोलूकिया से पहले उसकी कहानी सुनाने के लिये कहा।

बोलूकिया की कहानी सुनने के बाद जान शाह बोला — "बैठो, मैं तुमको शुरू से अपनी कहानी सुनाता हूॅ। मेरा नाम जान शाह है। मेरे पिता ताईगेमस[90] सुलतान थे। वह रोज जंगल में शिकार खेलने जाया करते थे।

एक दिन मैंने उनसे कहा कि मैं भी आपके साथ शिकार पर जाना चाहता हूॅ। वह बोले — "नहीं बेटा, तुम अभी घर में ही रहो, तुम अभी यहीं ठीक हो।"

इस पर मैंने बहुत ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। मैं क्योंकि अपने माता पिता का अकेला बच्चा था और मेरे पिता मुझे बहुत

[89] Jan Shah – a Muslim name of a man

[90] Taaeeghamus

प्यार करते थे, वह मेरा रोना नहीं देख सके सो वह बोले — "अच्छा अच्छा चलो, रोओ नहीं।"

इस तरह हम सब जंगल गये। हमारे साथ बहुत सारे नौकर चाकर थे। जब हम जंगल पहुँच गये तो वहाँ जा कर हम लोगों ने खाना खाया और शराब पी और फिर सब शिकार के लिये निकल गये। मैं अपने सात नौकरों के साथ शिकार पर गया।

हमें एक सुन्दर हिरन दिखायी दिया। हम उसके पीछे समुद्र तक भागते चले गये। भागते भागते वह हिरन पानी में चला गया तो मैंने और मेरे चार नौकरों ने भी एक नाव ली और उस हिरन का पीछा किया। बाकी बचे मेरे तीन नौकर मेरे पिता के पास लौट गये।

हम उस हिरन का पीछा करते करते समुद्र में काफी दूर तक निकल गये पर किसी तरह हमने उसे पकड़ लिया और मार दिया। उसी समय बहुत तेज़ हवा चलने लगी और हम समुद्र में रास्ता भटक गये।

जब वे तीन नौकर मेरे पिता के पास पहुँचे तो मेरे पिता ने उनसे पूछा — "तुम्हारा मालिक कहाँ है?"

उन्होंने मेरे पिता को हिरन, उसके समुद्र में भाग जाने, और हमारा नाव में उसका पीछा करने के बारे में बताया तो वह रोकर बोले — "मेरा बेटा तो गया, मेरा बेटा तो गया।" और घर लौट कर मुझे मरा हुआ समझ कर वह बहुत रोये।

कुछ समय समुद्र में इधर उधर घूमने के बाद हम एक टापू पर आये जहॉ बहुत सारी चिड़ियॉ थीं। वहॉ हमें फल और पानी मिल गया था सो हमने फल खाये और पानी पिया। रात हमने एक पेड़ के ऊपर सो कर गुजारी।

सुबह को हम फिर से अपने सफर पर चल दिये और एक दूसरे टापू पर आये। पिछले टापू की तरह से हमको यहॉ भी फल और पानी मिल गया सो हमने फल खाये और पानी पिया और रात पेड़ के ऊपर गुजारी। रात में कुछ जंगली जानवरों की आवाजें आती रहीं।

सुबह जितनी जल्दी हो सकता था हमने वह टापू भी छोड़ दिया और अपने सफर पर निकल पड़े। चलते चलते हम एक तीसरे टापू पर आये। वहॉ भी हमने खाना ढूँढने की कोशिश की तो हमें एक पेड़ दिखायी दिया जो लाल धारी वाले सेबों से लदा हुआ था।

जैसे ही हमने एक सेब तोड़ने की कोशिश की हमें किसी की आवाज सुनायी दी — "इस पेड़ को नहीं छूना। यह पेड़ राजा का है।" हम रुक गये।

रात के समय वहॉ बहुत सारे बन्दर आये जो हमें ऐसा लगा कि हमको देख कर बहुत खुश थे। वे हमारे लिये बहुत सारे फल लाये जिनको हम खा सकते थे।

तभी मैंने उनमें से एक बन्दर को यह कहते हुए सुना — "हम इस आदमी को अपना सुलतान बना लेते हैं।"

दूसरा बोला — "हमें इसको अपना सुलतान बनाने से क्या फायदा? ये सब तो सुबह होने पर भाग जायेंगे।"

तीसरा बोला — "पर अगर हम उनकी नाव तोड़ दें तब वे नहीं भाग सकते न।"

और वही हुआ। जब हम सुबह अपनी नाव में जाने के लिये तैयार हुए तो हमने देखा कि हमारी नाव तो टूटी पड़ी है। अब हमारे पास वहाँ रुकने और उन बन्दरों के साथ खेलने के अलावा और कोई चारा नहीं था। बन्दर हम लोगों से काफी खुश दिखायी देते थे।

एक दिन मैं उस टापू पर टहल रहा था कि मुझे एक पत्थर का बहुत बड़ा मकान दिखायी दिया। उसके दरवाजे पर लिखा हुआ था — "जब भी कोई आदमी इस टापू पर आता है तो उसके लिये इस टापू को छोड़ना मुश्किल है क्योंकि यहाँ के बन्दर किसी आदमी को अपना राजा बनाना चाहते हैं।

अगर वह यहाँ से भागने का रास्ता ढूँढने की कोशिश करता है तो उसको लगता है कि ऐसा कोई रास्ता है ही नहीं, पर एक रास्ता है और वह रास्ता यहाँ से उत्तर की तरफ है।

अगर तुम उस तरफ जाओगे तो तुमको एक मैदान मिलेगा जहाँ बहुत सारे शेर और साँप रहते हैं। तुमको उन सबसे लड़ना होगा और जब तुम उनको जीत लोगे तभी तुम आगे जा सकते हो।

आगे जा कर तुम्हें एक और मैदान मिलेगा जहॉ कुत्तों जितनी बड़ी चींटियॉ रहतीं हैं। उनके दॉत भी कुत्तों के दॉत जैसे हैं और वे बड़ी भयानक हैं। तुमको उनसे भी लड़ना होगा और अगर तुमने उनको जीत लिया तो बस फिर आगे का रास्ता साफ है।"

मैंने यह खबर अपने नौकरों को बतायी तो हम लोग इस नतीजे पर पहुॅचे कि मरना तो हमें दोनों तरीके से है तो क्यों न हम अपनी आजादी को पाने के लिये लड़ते हुए मरें।

हम सबके पास हथियार थे सो हम लोग उत्तर की तरफ चल दिये। जब हम पहले मैदान में पहुॅचे तो शेर चीतों और सॉपों से लड़ाई में हमारे दो नौकर मारे गये। फिर हम दूसरे मैदान में पहुॅचे। वहॉ भी हमारे दो नौकर मारे गये सो मैं अकेला ही वहॉ से बच कर निकल पाया।

उसके बाद मैं बहुत दिनों तक घूमता रहा। जो कुछ मिल जाता था वही खा लेता था। आखिर मैं एक शहर में आ पहुॅचा जहॉ मैं कुछ दिन रहा। वहॉ मैंने नौकरी ढूॅढने की भी कोशिश की पर कोई नौकरी मुझे मिली ही नहीं।

एक दिन एक आदमी मेरे पास आया और बोला — "क्या तुम काम की तलाश में हो?"

"हॉ हूॅ तो।"

"तो मेरे साथ आओ।" और मैं उसके साथ उसके घर चला गया।

वहॉ पहुँचने पर उसने मुझे एक ऊँट की खाल दिखायी और बोला — "मैं तुमको इस खाल में बन्द कर दूँगा और एक बहुत बड़ा चिड़ा तुमको दूर के एक पहाड़ पर ले जायेगा। जब वह तुमको वहॉ ले जायेगा तो वहॉ वह तुम्हारी इस खाल को फाड़ देगा।

उस समय तुम उसको भगा देना और कुछ जवाहरात जो तुमको वहॉ मिलेंगे उनको नीचे फेंक देना। जब वे सब जवाहरात नीचे आ जायेंगे तो मैं तुमको नीचे ले आऊँगा।"

सो उसने मुझे उस ऊँट की खाल में बन्द कर दिया और एक चिड़ा मुझे एक पहाड़ की चोटी पर ले गया। वहॉ वह मुझे खाने ही वाला था कि मैं उस खाल में से कूद पड़ा और मैंने उसको डरा कर भगा दिया। उसके बाद मैंने बहुत सारे जवाहरात नीचे की तरफ फेंक दिये।

जवाहरात फेंकने के बाद मैंने उस आदमी को कई बार पुकारा पर उसने काई जवाब नहीं दिया। वह आदमी वे जवाहरात ले कर चला गया था और मैं उस पहाड़ पर ही रह गया।

मैंने तो अपने आपको मरा हुआ ही समझ लिया था। मैं वहॉ उस बड़े जंगल में बहुत दिनों तक घूमता रहा कि मुझे एक अकेला घर मिला।

उस घर में एक बूढ़ा रहता था उसने मुझे खाना और पानी दिया जिससे मेरी जान में जान आयी। मैं वहॉ काफी समय तक रहा। वह बूढ़ा मुझे अपने बेटे की तरह से प्यार करता था।

एक दिन वह बूढ़ा कहीं बाहर गया तो उसने मुझे अपनी सारी चाभियॉ देते हुए कहा कि मैं उसके घर का कोई भी कमरा खोल सकता हूँ सिवाय एक कमरे के।

और जैसा कि अक्सर होता है कि अगर किसी आदमी को किसी काम करने से मना करो तो वह आदमी सबसे पहले वही काम करता है सो जैसे ही वह बूढ़ा चला गया मैंने उसका वही कमरा सबसे पहले खोला जिसको उसने मुझसे खोलने के लिये मना किया था।

मैंने वह कमरा खोला तो वहॉ मुझे एक बड़ा सा बगीचा दिखायी दिया जिसमें एक छोटी सी नदी बह रही थी। उसी समय वहॉ तीन चिड़ियॉ उड़ कर आयीं और उस नदी के किनारे बैठ गयीं।

बैठते ही वे तीनों चिड़ियॉ तीन बहुत सुन्दर लड़कियों में बदल गयीं। तीनों ने अपने कपड़े उतार कर किनारे पर रखे, नदी में नहायीं, फिर कपड़े पहने और फिर से चिड़ियों में बदल कर फुर्र से उड़ गयीं। मैं यह सब देखता रहा।

मैंने दरवाजे को ताला लगा दिया और चला गया। पर मेरी भूख गायब हो गयी थी। मैं इधर उधर बिना किसी काम के घूमता रहता। जब वह बूढ़ा घर वापस लौटा तो उसने मेरा यह अजीब हाल देखा तो मुझसे पूछा — "क्या बात है तुम ऐसे क्यों घूम रहे हो?"

मैंने उसे बता दिया कि मैंने वे तीन लड़कियॉ देखीं थीं जिनमें से एक मुझे बहुत अच्छी लगी। अगर मैं उससे शादी नहीं कर पाया तो मैं मर जाऊॅगा।

उस बूढ़े आदमी ने बताया कि यह तो मुमकिन ही नहीं था क्योंकि वे तीनों लड़कियॉ जिनी के राजा की लड़कियॉ थीं और जहॉ हम थे वे वहॉ से तीन साल की दूरी पर रहतीं थीं।

मैंने उससे कहा कि मेरा मन इस बात को नहीं मानता और किसी तरह वह मेरी शादी उस लड़की से करा दे नहीं तो मैं मर जाऊॅगा। आखिर उसने मुझे एक सलाह दी।

वह बोला जब तक वे दोबारा आतीं हैं तब तक तुम उनका इन्तजार करो और जब वे आयें तो जिसको तुम सबसे ज़्यादा चाहते हो छिप कर उसके कपड़े चुरा लेना।

सो मैंने उनका इन्तजार किया। जब वे आयीं तो मैंने उस लड़की के कपड़े चुरा लिये जिससे मुझको शादी करनी थी। जब वह नहा कर पानी में से बाहर निकली तो उसे उसके कपड़े नहीं मिले।

वह इधर उधर देखने लगी तो मैंने आगे बढ़ कर उससे कहा — "तुम्हारे कपड़े मेरे पास हैं।"

उसने मुझसे अपने कपड़े मॉगे — "मेरे कपड़े दे दीजिये मैं जाना चाहती हूॅ।"

मैंने उससे कहा कि मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ और तुमसे शादी करना चाहता हूँ। वह बोली मैं अपने पिता के पास जाना चाहती हूँ। मैंने कहा तुम अब अपने पिता के पास नहीं जा सकतीं।

उसकी बहिनें तो अपने अपने कपड़े पहन कर उड़ गयीं पर वह नहीं जा सकी क्योंकि उसके कपड़े मेरे पास थे। मैं उसको घर के अन्दर ले आया। उस बूढ़े ने हमारी शादी करवा दी और मुझसे उसके कपड़े जो मैंने चुरा लिये थे उनको उसे देने के लिये मना कर दिया।

बल्कि उसने मुझसे कहा कि मैं उनको छिपा कर रख दूँ क्योंकि अगर उसको वे कपड़े मिल गये तो वह फिर उड़ कर अपने पिता के घर चली जायेगी और फिर मुझे वापस नहीं मिलेगी। सो मैंने उसके कपड़ों को एक गड्ढा खोद कर उस गड्ढे में दबा दिया।

लेकिन एक दिन जब मैं घर में नहीं था तो उसने वे कपड़े गड्ढे में से निकाल लिये और पहन लिये और एक नौकरानी से जो मैंने उसकी सेवा के लिये दे रखी थी बोली — "जब तुम्हारे मालिक लौट कर आयें तो उनको बोलना कि मैं घर चली गयी हूँ। अगर वह मुझसे सच्चा प्यार करते होंगे तो मेरे पीछे पीछे चले आयेंगे।"

और वह उड़ गयी।

जब मैं घर आया तो उन लोगों ने मुझे यह सब बताया। मैं कई सालों तक उसकी तलाश करता रहा। आखिर मैं एक शहर में आया जहाँ मुझसे एक आदमी ने पूछा — "तुम कौन हो?"

मैंने कहा — "जान शाह।"

"और तुम्हारे पिता का नाम?"

"ताईगैमस।"

वह फिर बोला — "क्या तुम ही वह आदमी हो जिसने हमारी मालकिन से शादी की थी?"

मैंने पूछा — "कौन है तुम्हारी मालकिन?"

"सैदाती शम्स[91]।"

मैं खुशी से चिल्ला पड़ा — "हॉ मैं ही तो हूॅ वह।"

वह मुझे अपनी मालकिन के पास ले गया। यह वही लड़की थी जिससे मैंने शादी की थी। वह मुझे अपने पिता के पास ले गयी और उसको बताया कि मैं ही उसका पति था। सब लोग बहुत खुश हुए।

फिर हमने सोचा कि हम एक बार अपना पुराना घर देख कर आयें तो उसके पिता का जिनी हमको तीन दिन में वहॉ ले गया। हम वहॉ एक साल रहे और फिर लौट आये। लेकिन कुछ ही समय बाद मेरी पत्नी मर गयी।

उसके मरने के बाद मैं बहुत दुखी हो गया। उसके पिता ने मुझे बहुत समझाने की कोशिश की। अपनी दूसरी बेटी की शादी भी मुझ से करनी चाही पर मुझे उसके बिना कुछ अच्छा नहीं लगता था और आज तक मैं उसी के दुख में दुखी हूॅ। यही है मेरी कहानी।"

[91] Sayadaatee Shams – name of the dajughter of the King of Jini

अपनी कहानी सुनाने के बाद बोलूकिया अपने रास्ते चला गया और इधर उधर घूमता रहा फिर मर गया।"

कहानी सुनने के बाद हसीबू ने सॉपों के राजा से उसको घर भेजने की प्रार्थना की। पर सॉपों के राजा सुलतानी वानीओका ने हसीबू से कहा — "जब तुम घर चले जाओगे तब तुम जरूर ही मुझे नुकसान पहुॅचाओगे।"

हसीबू को उसका यह विचार बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा पर वह बोला — "मैं किसी भी तरह आपको किसी भी तरह का नुकसान पहुॅचाने की सोच भी नहीं सकता। मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि आप मुझे मेरे घर भेज दीजिये।"

सॉपों का राजा बोला — "मैं तुमको घर भेज तो दूॅगा पर मुझे यकीन है कि तुम वापस जरूर आओगे और मुझे मार डालोगे।"

हसीबू फिर बोला — "मैं इतना बेवफा कभी नहीं हो सकता कि मैं आपको मारने के लिये यहॉ वापस आऊॅ। मैं कसम खाता हूॅ कि मैं आपको कभी कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगा।"

सॉपों के राजा ने कहा — "ठीक है, मैं तुम्हारी बात माने लेता हूॅ पर मेरी एक बात का ख्याल रखना कि जहॉ बहुत सारे लोग वहॉ कभी नहीं नहाना।"

हसीबू बोला — "ठीक है मैं वहॉ नहीं नहाऊॅगा।" और राजा ने उसको उसके घर भेज दिया।

हसीबू अपनी मॉ के पास गया। उसकी मॉ तो उसको देख कर बहुत ही खुश हो गयी कि उसका बेटा ज़िन्दा है।

अब हुआ क्या कि जहॉ हसीबू रहता था वहॉ का सुलतान बहुत बीमार पड़ा। वहॉ के डाक्टरों ने कहा कि केवल सॉपों के राजा को मार कर उसको उबाल कर उसके सूप को राजा को पिलाने से ही वह ठीक हो सकता था।

राजा का वजीर जादू के बारे में कुछ जानता था सो उसने बाहर सड़कों पर जो नहाने के घर बने हुए थे वहॉ बहुत सारे आदमी खड़े कर दिये और उनको कह दिया कि अगर कोई ऐसा आदमी यहॉ नहाने आये जिसके पेट पर कोई निशान हो तो उसको पकड़ कर मेरे पास ले आना।

इधर हसीबू को सॉपों के राजा के पास से लौटे तीन दिन हो गये थे। वह राजा की इस बात को बिल्कुल ही भूल गया था कि उसको जहॉ बहुत सारे आदमी हों वहॉ नहीं नहाना था सो वह भी दूसरे लोगों के साथ उस जगह नहाने चला गया जहॉ और बहुत सारे लोग नहा रहे थे।

तभी अचानक उसको कुछ सिपाहियों ने पकड़ लिया और उसको वजीर के पास ले आये।

वजीर ने कहा — "तुम मुझे सॉपों के राजा के पास ले चलो।"

हसीबू बोला — "मैं नहीं जानता वह कहॉ है।"

वजीर ने कहा — "बॉध दो इसको।"

फिर उन्होंने उसको इतना पीटा गया कि उसकी पीठ इतनी घायल हो गयी कि वह बेचारा ठीक से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था।

वह चिल्लाया — "रुक जाओ, मैं तुमको वह जगह दिखाता हूँ।"

इस प्रकार हसीबू वजीर को सॉपों के राजा के घर ले गया। सॉपों का राजा उसको देखते ही बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि तुम मुझे मारने के लिये वापस आओगे।"

हसीबू चिल्लाया —"मैं क्या करता। ज़रा मेरी पीठ तो देखिये। पीट पीट कर क्या हाल कर दिया है उन्होंने मेरी पीठ का।"

"किसने मारा तुमको इतनी बेदर्दी से?"

"इस वजीर ने।"

सॉपों का राजा एक लम्बी सॉस ले कर बोला अब मेरे लिये कोई उम्मीद नहीं रह गयी है पर तुम खुद मुझे वहॉ ले कर जाओगे।

जब वे लोग शहर जा रहे थे तो सॉपों के राजा ने हसीबू से कहा — "जब हम शहर पहुँच जायेंगे तो वहॉ जा कर मुझे मार दिया जायेगा और मुझे पकाया जायेगा।

उसका पहला रस यह वजीर तुमको पिलायेगा पर तुम उस रस को पीना नहीं बल्कि एक बोतल में रख लेना। फिर वह तुमको दूसरा रस देगा। उसका दूसरा रस तुम पी लेना। उस रस को पी कर

तुम बहुत बड़े डाक्टर बन जाओगे। उसका तीसरा रस वह दवा होगी जो सुलतान को ठीक करेगी।

जब वजीर तुमसे यह पूछे कि क्या तुमने वह पहले वाला रस पी लिया तो तुम उसको बोलना कि हॉ मैंने वह रस पी लिया। यह कह कर वह पहले रस वाली बोतल निकाल कर उस रस को वजीर को देना और कहना कि यह दूसरा रस तुम्हारे लिये है।

जैसे ही वह पहला वाला रस पियेगा वह मर जायेगा। इस तरह से हम दोनों का बदला पूरा हो जायेगा।

हसीबू ने वैसा ही किया जैसा कि सॉपों के राजा ने उसे करने के लिये कहा था।

सॉपों के राजा को पकाने के बाद उस वजीर ने उसका पहला रस पीने के लिये हसीबू को दिया पर सॉपों के राजा की बात याद कर के उसने वह रस एक बोतल में रख लिया।

जब उसको दूसरा रस दिया गया तो वह उसने पी लिया जिसने उसको एक बहुत बड़ा डाक्टर बना दिया। तीसरा रस उसने रख लिया क्योंकि वह तो राजा को ठीक करने वाला रस था।

जव वजीर ने उससे पूछा कि क्या उसने वह पहला वाला रस पी लिया तो उसने झूठ बोल दिया कि हॉ मैंने वह रस पी लिया और उसने पहली वाली बोतल निकाल कर उसको दे दी और उससे कहा कि "लो यह दूसरी बोतल तुम्हारे लिये है।"

वजीर ने दूसरी बोतल का रस पी लिया और मर गया। तीसरी बोतल के रस को उसने सुलतान को पिला दिया जिससे सुलतान ठीक हो गया।

यह देख कर और सारे डाक्टर हसीबू की एक अच्छे डाक्टर की हैसियत से बहुत इज़्ज़त करने लगे।

Names of Jesus' 12 Apostles –

1. Simon Peter (brother of Andrew) - He was active in bringing people to Jesus – Bible writer
2. James (son of Zebedee and other brother of John) also called James the Greater
3. John (son of Zebedee and brother of James) – Bible writer
4. Andrew (brother of Simon Peter) – He was active in bringing people to Jesus
5. Philip od Bethsaida
6. Thomas (Didymus)
7. Bartholomew (Nathaniel) – He was one of the disciples to whom Jesus appeared at the Sea of Tiberias after his Resurrection. He was witness of the Ascension
8. Matthew (Levi) of the Capernaum
9. James (son of Alphaeus), also called "James the Lesser" Bible writer
10. Simon the Zealot (the Canaanite)
11. Thaddaeus-Judas (Lebbaeus) – brother of James the Lesser and brother of Matthew (Levi) of the Capernaum
12. Judas Iscariot who also betrayed him

The New Testament says the end of only two Apostles – Judas who betrayed Jesus and then killed himself; and James the son of Zebedee who was executed by Herod.

List of Stories of “Christianity in Italian Folktales”

1. The Devotee of Joseph
2. One Night in Paradise
3. Jesus and Saint Peter in Friuli
4. Jesus and Saint Peter in Sicily
5. Fra Ignazio
6. Olive
7. Three Orphans
8. A Boat Loaded With ….
9. The Child Who Fed the Crucifix
10. St Anthony's Gift
11. The Lion's Grass
12. The Convent of Nuns and the Monastery of Monks
13. Wormwood
14. The Just Man
15. Lord Saint Peter and Apostles
16. The Lord, St Peter and the Blacksmith
17. In This World One Weeps and Another Laughs
18. The Ass
19. Saint Peter and His Sisters
20. Pilate
21. Story of Judas
22. Desperate Malchus
23. Malchus at the Column
24. The Story of Buttadeu
25. The Story of Crivoliu
26. The Story of St James of Galacia
27. The Baker's Apprentice
28. Occasion
29. Brother Giovannone
30. Godfather Misery

List of Stories of “Christianity in World Folktales”

1. Six Candles
2. Peter and Brother Robin
3. Twelve Apostles
4. The Tailor in Heaven
5. Godfather Death
6. The Cardplayer-2
7. Spirit of a Priest
8. Three Wishes
9. Richard and His Deck of Cards
10. Gertrude's Bird
11. Beer and Bread
12. Journey to Jerusalem
13. Elijah the Prophet and Saint Nicholas
14. The Brother of Christ
15. A Story of Nicholas
16. Christ and the Geese
17. Christ and Folk Songs
18. Clever Wife
19. Cardplayer-1
20. Finn the Giant and the Minster of Lund
21. The Origin of Creation
22. The Physician's Son and the King of the Snakes

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022